अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

मनोहर कहानियां

अप्रैल, 2020 ₹ 40/-

खून में रंगा
सियार

आशियाने
के कांटे

मोहब्बत का
फीका रंग

पतंगे से हारी
रोशनी

15 दिन
साथ रहा
मौत का
साया

एक जवान
रानी के
बूढ़े राजा

स्मार्ट
अनामिका
पर भारी
साइलेंट
किलर

सब्सक्राइब करने के लिए 85888843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

नारी समस्याएं अब न होंगी

अपनाओ आयुर्वेदिक उपचार

टॉनिक के साथ पाएं
20 टेबलेट्स Free

67 दुर्लभ जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली'
आयुर्वेदिक टॉनिक निम्न समस्याओं में विशेष सहायक है।

- पेड़ू में दर्द
- नलों में सूजन
- थकान
- चिड़चिड़ापन
- कमर कटना
- खून की कमी

सच्ची सहेली®

24x7 Helpline : 0171-3055171 | www.facebook.com/sachisaheli | Available at all medical & general stores

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

रखे स्टमक फिट...
पेट फिट...आप फिट

बिस्मथ है कारगर

एच. पायलोरी, पैप्टिक अल्सर या पेट से जुड़ी अन्य समस्याओं के लिए बाजार में मौजूद ऐंटीबायोटिक दवाएं और ऐंटासिड कुछ समय के लिए राहत तो देते हैं मगर समस्या जस की तस रहती है. स्टोमाफिट में मौजूद बिस्मथ विकार को बढ़ने से रोकने के साथसाथ उस का निदान भी करता है. इसके प्रयोग के बाद धीरेधीरे पाचन क्रिया भी सुचारु रूप से काम करने लगती है.

आस्ट्रेलिया के डॉ. बेरी जे. मार्शल को बिस्मथ के इस्तेमाल से एच. पायलोरी को जड़ से मिटाने में सफल होने की वजह से 2005 का मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला.

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

अपच गैस एसिडिटी से छुटकारा

100ml. 200ml. 450ml.में उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

अप्रैल 2020

मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए :
manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
08527666775
08527750077

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 Toll Free No. 18001038880 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

06. स्मार्ट अनामिका साइलेंट किलर पर भारी
सुनील वर्मा

14. खून में रंगा शियार
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

22. आशियाने के कांटे
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

30. पति का दंश
प्रकाश पुंज

34. यार की 'खूशबू'
दिनेश बैजल 'राज'

38. प्रतीक्षा का अपना बिंब
नितिन कुमार शर्मा

42. मोहब्बत का फीका रंग
शैलेंद्र सिंह

46. पतंगे से हारी रोशनी
अशोक शर्मा

51. एक जवान रानी के बूढ़े राजा
भारत भूषण श्रीवास्तव

54. कड़वा घूंट
प्रस्तुति : शकीला एस. हुसैन

62. 15 दिन साथ रहा मौत का साया
दिनेश बैजल 'राज'

68. सजा आजीवन कारावास
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

76. कातिल हसीना
सुरेशचंद्र मिश्र

लघुकथाएं

13. 8 सालों में की 20 किलोमीटर की यात्रा...
21. बम्बर बनने के बजाए खुद को उड़ा दिया
29. एलेक्स का सफल प्रयास

06 स्मार्ट अनामिका : साइलेंट किलर पर भारी

साधारण चेहरेमोहरे वाली नीरजा चौहान को एक्टिंग का शौक था. लेकिन पहले पढ़ाई और फिर शादी की वजह से उसे एक्टिंग के किसी भी प्लेटफार्म पर अपना अभिनय दिखाने का मौका नहीं मिल सका. शादी के बाद जब पति का ट्रांसफर बाहर हो गया, बेटा नौकरी करने लगा और बेटी पढ़ने के लिए पंजाब चली गई तो नीरजा ने टिकटोक, लाइक और फेसबुक पर अपनी एक्टिंग का जलवा दिखाना शुरू किया जल्दी ही उस के लाखों फालोवर भी बन गए. लेकिन...

14 खून में रंगा शियार

22 आशियाने के कांटे

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (बी-5, अंक-6)
संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय : ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055, **संपादकीय विभाग :** पुष्कर पुष्प

वार्षिक ग्राहक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

मनोहर कहानियां

संपादकीय

देश का कोई भी वर्ग हो, कोई भी व्यवसाय या कोई भी काम, कोरोना से सभी प्रभावित हुए हैं. आर्थिक क्षति भी सब को हुई है, किसी को ज्यादा किसी को कम. क्षति थोड़ी हो या ज्यादा उसे झेलने के अलावा कोई रास्ता नहीं है. देखा जाए तो व्यवसाय में हुई हानि का अनुमान लगाया जा सकता है. जीवनमरण के पलपल के आंकड़े भी टीवी स्क्रीन पर चलते रहे. ध्यान देने लायक बात यह कि कोरोना ने पढ़ेलिखे हों या अनपढ़, सभी को लौकडाउन, क्वारेंटाइन, सेनेटाइजर और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्द कुछ इस तरह घोंट कर पिला दिए हैं, जिन्हें लोग जीवन भर नहीं भूल पाएंगे. ऐसा नहीं है कि पढ़ेलिखे वर्ग के लिए ये शब्द नए हों या इन्हें न जानते हों, लेकिन मीडिया के द्वारा इन चार शब्दों की जिस तरह जुगलबंदी बनी है या बनाई गई है वह कमाल की है.

लोग भले ही इस ओर ध्यान न दे पाए हों, लेकिन सच यह है कि कोरोना के लौकडाउन का सब से बुरा असर कुछ ऐसे व्यवसायों पर पड़ा है, जो बिना पैसा लगाए अच्छीभली कमाई करते हैं. ये व्यवसाय हैं, चोरी, जेबतराशी, स्मगलिंग और ड्रग्स. दिल्ली और इसी स्तर के महानगरों में जेबतराशी का करोड़ों का व्यवसाय है, जो बंद पड़ा है. एक महीने में लोगों की जेबों या छिनैती से लाखों रुपयों के तो मोबाइल ही उड़ा दिए जाते हैं. आजकल पौकेटमारी और छिनैती करने वालों का धंधा भी बंद है. पता नहीं ये लोग कोरोना को कोस रहे होंगे या लौकडाउन करने वालों को.

लौकडाउन से सब से ज्यादा प्रभावित हुए हैं ड्रग तस्कर और नशे के आदी लोग. समाज में ऐसे तमाम लोग हैं, जिन के नशा किए बिना हाथपांव कांपने लगते हैं, दिमागी रूप से दिवालिया हो जाते हैं. यही वजह है कि दिल्ली में शराब के अलावा प्रतिदिन 50 करोड़ के ड्रग्स की खपत है. इन्हें खरीदने वालों में उच्च वर्ग से ले कर सड़क के भिखारी तक शामिल होते हैं.

बता दें ड्रग सप्लायरों के सब से अच्छे खरीदारों में भिखारी होते हैं, इस की वजह से पकड़े जाने का डर भी नहीं रहता. भिखारी अपने कटोरे में पहले से ही पैसा तैयार रखते हैं. सप्लायर आते ही नशे की पुड़िया उन के कटोरे में रखता है और पैसे उठा लेता है. सप्लायर को यह पहले से पता होता है कि किस भिखारी को कितना माल देना है. इस धंधे की खास बात यह है कि दोनों ओर से पूरी ईमानदारी बरती जाती है.

ड्रग सप्लायर आजकल छोटे बच्चों से भी ड्रग सप्लाई करा रहे हैं. इन बच्चों को सूझबूझ से काम करने को कहा जाता है और इस काम के लिए 300 रुपए प्रतिदिन दिए जाते हैं. पिछले साल दिसंबर में पुलिस ने 12 साल के बच्चे को पकड़ा तो उस ने पूरा खुलासा किया. इसी बच्चे के बताने पर भलस्वा डेयरी इलाके से 2 ऐसी औरतों को गिरफ्तार किया गया जो बच्चों को स्मैक बेचने के लिए तैयार करती थीं. इन महिलाओं के पास से ड्रग्स के 40 पैकेट भी मिले.

दिल्ली पुलिस समयसमय पर इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर विदेश से छिपा कर लाए गए हेरोइन, स्मैक, मारिजुआना, हशीश, एक्सटेसी, कोकीन और एलएसडी जैसे ड्रग्स की खेप पकड़ती रहती है, जिन की कीमत करोड़ों में होती है. लेकिन तसकरी का यह धंधा फिर भी बदस्तूर चलता रहता है.

कोरोना से देश में सैकड़ों और विदेशों में हजारों लोगों की जान चली गई. कितने ही लोगों को कईकई बार भूखा सोना पड़ा. यह अलग बात है कि भूखे पेट नींद नहीं आती. यह कितनी विचित्र बात है कि कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए एकएक रोटी को तरसते हैं और नशेड़ी नशे के लिए. नशेड़ी के पास एक तरफ खाना और दूसरी तरफ ड्रग रख दिया जाए तो वह ड्रग को चुनेगा.

नशे का सब से विद्रूप रूप पंजाब की जेलों में देखा जा सकता है, जहां पत्नी, मां और कई बेटियां अपने सगे संबंधी को इसलिए नशा पहुंचाने जाती हैं ताकि वह जिंदा रह सके. किसी भी परिवार के लिए इस से बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है. पंजाब की एक तसवीर यह भी है कि नशामुक्ति केंद्रों के सामने नशा छोड़ने की चाहत में दवाई लेने आए लोगों की लाइन लगती है. वैसे एक बात यह भी है कि नशा छोड़ने की इच्छा रखने वालों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है.

ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

स्मार्ट अनामिका साइलेंट किलर पर भारी

❑ सुनील वर्मा

सोशल मीडिया एक ऐसी भूलभुलैया है, जिस में आदमी घुस तो जाता है, पर उस का बाहर निकलना आसान नहीं होता. साथ ही कई पुरुष और महिलाएं सोशल मीडिया को माध्यम बना कर मशहूर होना चाहते हैं. नीरजा चौहान और राघव इसी कोशिश में थे, लेकिन...

नीरजा चौहान : खुद से खुद के छल का शिकार

राघव कुमार: सोशल मीडिया ने बना दिया हत्यारा

ग्रेटर नोएडा में रहने वाले नरेश चौहान एनटीपीसी टांडा में बतौर डीजीएम कार्यरत हैं. उन का परिवार पिछले कई सालों से ग्रेटर नोएडा के अरिहंत आर्डन में जी-101 नंबर के 3 बैडरूम वाले फ्लैट में रह रहा था. फिलहाल इस फ्लैट में उन की पत्नी नीरजा चौहान (49) और बेटा अमन (24) रह रहे थे.

अमन नोएडा के सैक्टर 63 स्थित एक निजी कंपनी में नौकरी कर रहा था. नरेश चौहान की एक बेटी भी है, जो पंजाब के पटियाला स्थित एक कालेज में बीटेक द्वितीय वर्ष की पढ़ाई कर रही है. वह कभीकभी छुट्टियों में अपने परिवार के पास रहने के लिए आ जाती थी.

6 मार्च, 2020 की शाम के करीब 8 बजे का समय. जब नोएडा पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना मिली कि ग्रेटर नोएडा की अरिहंत आर्डन के जी-101 नंबर के फ्लैट में एक महिला की खून से लथपथ लाश मिली है. अरिहंत आर्डन सोसाइटी बिसरख थाना क्षेत्र में आती है, लिहाजा कंट्रोल रूम ने तत्काल यह जानकारी थाना बिसरख की पुलिस को दे कर मौके पर पहुंचने को कहा. बिसरख थानाप्रभारी मनीष प्रताप सिंह उस वक्त अपने सभी चौकी प्रभारियों के साथ रात्रि गश्त के दौरान की जाने वाली चैकिंग को ले कर मीटिंग में व्यस्त थे, तभी उन्हें अरिहंत आर्डन में एक महिला की लाश मिलने की सूचना मिली.

थानाप्रभारी मनीष प्रताप सिंह, सीनियर एसआई ऋषिपाल कसाना, गौर सिटी चौकी इंचार्ज विनोद कुमार, एसआई नीरज शर्मा, कांस्टेबल रवि, पंकज, सचिन और महिला सिपाही सरिता को ले कर घटनास्थल के लिए रवाना हो गए.

पुलिस कंट्रोल रूम से मिली सूचना के आधार पर इलाके के एसीपी राजीव कुमार और सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट के डीसीपी हरीश चंद्र भी अरिहंत आर्डन में उस फ्लैट पर जा पहुंचे, जहां वारदात होने की सूचना मिली थी.

फ्लैट संख्या जी-101 के बाहर सोसायटी के लोगों की भीड़ जमा थी. एक युवक फूटफूट कर रो रहा था, कुछ लोग उसे दिलासा दे रहे थे. इंसपेक्टर मनीष प्रताप सिंह को लोगों ने बताया कि वह उस महिला का बेटा है, जिस की हत्या हुई है. युवक का नाम अमन उर्फ सक्षम था. डीसीपी हरीश चंद्र ने अमन को दिलासा देते हुए घटना के बारे में पूछताछ शुरू कर दी.

अमन ने बताया कि वह नोएडा के सैक्टर 63 में स्थित एक निजी कंपनी में नौकरी करता है. आमतौर पर वह हर रोज सुबह 6 बजे तक अपने औफिस चला जाता है लेकिन उस दिन सुबह देर तक सोते रहने के कारण औफिस के लिए करीब 6:45 बजे निकला था. देर हो जाने की वजह से उस ने नाश्ता भी नहीं किया था.

बकौल अमन जाते समय उस ने अपनी मां नीरजा चौहान से कहा था कि वह नाश्ता औफिस में कर लेगा ही, लंच करने के लिए दोपहर 2 बजे घर आएगा. लेकिन काम की व्यस्तता के कारण दोपहर को वह घर नहीं आ सका. उस ने औफिस की कैंटीन में खा लिया था. खाना उस ने अपनी मां नीरजा चौहान को फोन कर के यह बात बताने के लिए फोन भ किया.

लेकिन मां का फोन स्विच्ड औफ था. उस वक्त उसे लगा कि मां फोन बंद कर के शायद सो गई होंगी. हालांकि उस ने शाम को साढ़े

नीरजा चौहान : लू डूबी सोशल मीडिया स्टार बनने की चाहत

6 बजे औफिस से निकलते वक्त भी मां को फोन किया, लेकिन फोन तब भी स्विच्ड औफ था.

इस से उस का दिल किसी अनिष्ट की आशंका से कांप उठा. करीब 7 बजे वह अपने घर पहुंचा. दरवाजा खुलवाने के लिए उस ने कालबेल बजाई, लेकिन अंदर से काफी देर तक किसी तरह की कोई हलचल नहीं हुई.

अमन को लगा कि मां के साथ कुछ गलत हो गया है. क्योंकि न तो नीरजा चौहान कभी अपना फोन बंद करती थी और न ही दरवाजा खोलने में कभी इतना वक्त लगाती थी.

फ्लैट के मुख्य द्वार पर जो लौक था, वह अंदर और बाहर दोनों तरफ से बंद होता और खुलता था. इसलिए यह कहना मुश्किल था कि दरवाजा अंदर से बंद किया गया है या बाहर से. अमन ने कई बार अपनी मां का फोन भी मिलाया, लेकिन यही जवाब मिला कि मोबाइल स्विच्ड औफ है.

काफी देर गुजर जाने के बाद अमन ने सोसाइटी की सिक्योरिटी से मदद लेने का फैसला किया. लिफ्ट के जरिए नीचे आ कर वह सोसायटी के कंट्रोल रूम में गया और वहां सुरक्षाकर्मियों को बताया कि उस की मां न तो दरवाजा खोल रही है और न ही उन का फोन मिल रहा है.

अमन ने सुरक्षाकर्मियों से अपनी मां के साथ किसी अनिष्ट की आशंका जताई, तो सुरक्षाकर्मियों ने उस के फ्लैट के बाहर लगे सीसीटीवी की सुबह से अब तक की फुटेज देखने का काम शुरू कर दिया.

सीसीटीवी की फुटेज देखने से पता चला की हलकी दाढ़ी और दरमियाने कद का एक युवक सुबह करीब सवा 7 बजे उस के घर के अंदर प्रविष्ट हुआ था और करीब सवा 11 बजे वह फ्लैट से निकलता हुआ दिखाई दे रहा था.

फ्लैट से बाहर निकलते वक्त उस ने फ्लैट को बाहर से लौक किया था और चाबी अपनी जेब में रख ली थी. सोसाइटी के मुख्यद्वार पर लगे सीसीटीवी फुटेज में भी वह तकरीबन उसी वक्त के आसपास सोसाइटी में भीतर जाता और बाहर निकलता हुआ दिखा था.

सुरक्षाकर्मियों ने अमन को बताया कि सीसीटीवी फुटेज में दिखने वाला शख्स उन के घर पर अक्सर आताजाता था और खुद को नीरजा चौहान का रिश्तेदार बताता था. नीरजा चौहान ने भी कभी सिक्युरिटी को नहीं बताया था कि वह उन का कोई जानकार नहीं है.

चूंकि वह शख्स जब भी उन के घर जाता, तो काफी देर तक वहां रुकता था इसलिए सुरक्षाकर्मी भी यहीं समझते थे कि वह चौहान परिवार का कोई नजदीकी रिश्तेदार होगा.

''क्या आप सीसीटीवी फुटेज में दिखने वाले शख्स को जानते हैं?'' डीसीपी हरीश चंद्र ने अमन से सवाल किया.

''नहीं सर, मैं इस शख्स को नहीं जानता और न ही ये हमारा कोई रिश्तेदार है.'' अमन ने उस शख्स की फोटो देखने के बाद कहा.

अमन के बयान के बाद पुलिस का सिर चकरा गया. क्योंकि एक शख्स जो चौहान परिवार में लगातार आताजाता रहा, उसे घर का बेटा ही नहीं जानता था. निस्संदेह वह कोई ऐसा शख्स था, जो सिर्फ नीरजा चौहान को जानता था या उन का कोई निजी दोस्त होगा, जिस की जानकारी उन के परिवार को नहीं थी. पहली ही नजर में लग रहा था कि ये किसी ऐसे संबंध से जुड़ा मामला था, जिसे समाज में सार्वजनिक रूप से मान्यता नहीं दी जा सकती.

सीसीटीवी फुटेज में दिखने वाला शख्स उन के घर पर अक्सर आताजाता था और खुद को नीरजा चौहान का रिश्तेदार बताता था. वह शख्स जब भी उन के घर जाता, तो काफी देर तक वहां रुकता था इसलिए सुरक्षाकर्मी भी यहीं समझते थे कि वह चौहान परिवार का कोई नजदीकी रिश्तेदार होगा.

चूंकि ये बात साफ हो चुकी थी कि नीरजा चौहान की हत्या उन के ही किसी परिचित ने की थी, इसलिए पुलिस को अब आगे की कारवाई कर उसे पकड़ने की योजना पर काम करना था.

डीसीपी हरीश चंद्र ने पुलिस मुख्यालय से क्राइम टीम और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट की टीम को मौके पर बुलवा लिया था. टीम ने घटनास्थल पर आ कर हत्यारे के फिंगर व फुट प्रिंट लेने का काम शुरू कर दिया.

नीरजा चौहान के चेहरे पर चोट लगने के निशान थे, जबकि गले पर ऐसे निशान थे, जिस से लगता था कि उस की हत्या गला दबा कर की गई है. हत्या से पहले शायद उस के साथ मारपीट हुई थी, जिस कारण उस के चेहरे पर चोट लगी थी, जिस से खून निकला था. नीरजा चौहान का शव जमीन पर पड़ा था.

चोरी या लूट की संभावना नहीं थी

कमरे का सामान अस्तव्यस्त नहीं था, जिस से पहली नजर में ही लग रहा था कि हत्या का मकसद लूटपाट का विरोध नहीं था. हां, अमन ने पुलिस को ये जरूर बताया कि उन की मां का फोन गायब है, जिस का साफ मतलब था कि कातिल नीरजा चौहान का फोन अपने साथ ले गया था.

पुलिस ने मौके की जांच के बाद नीरजा चौहान के शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया. दूसरी तरफ अमन चौहान ने अपनी मां की हत्या की सूचना फोन कर के अपने पिता नरेश चौहान और पटियाला में पढ़ने वाली अपनी बहन को दे दी थी.

डीसीपी हरीश चंद्र के निर्देश पर एसएचओ मनीष प्रताप सिंह ने उसी रात बिसरख थाने में भादंसं की धारा 302 व 452 के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया. उच्चाधिकारियों के निर्देश पर जांच का जिम्मा इंसपेक्टर मनीष प्रताप सिंह ने ही संभाला.

कातिल को पकड़ने के लिए डीसीपी हरीश चंद्र ने एसीपी राजीव कुमार के नेतृत्व में एक टीम गठित कर दी, जिस में जांच अधिकारी इंसपेक्टर मनीष प्रताप सिंह, एसएसआई रिषिपाल सिंह, एसआई विनोद कुमार, नीरज शर्मा, कांस्टेबल विक्रांत राणा, कुलदीप सिंह, रवि, सचिन और पंकज को शामिल किया गया.

कातिल तक पहुंचने के लिए पुलिस के पास सब से बड़ा जरिया नीरजा चौहान का वह मोबाइल फोन था, जिसे कातिल अपने

डीसीपी हरिशचंद्र आरोपी राघव कुमार को मीडिया के सामने पेश करते हुए

साथ ले गया था. इसलिए पुलिस ने अमन से उस की मां का फोन नंबर ले कर रात में ही मोबाइल की काल डिटेल्स निकलवाई, साथ ही उसे सर्विलांस पर भी लगवा दिया.

जब नीरजा चौहान के मोबाइल की काल डिटेल्स की जांच शुरू हुई तो पता चला, उन के फोन से अंतिम बार जिस नंबर पर हुई थी, उस नंबर पर उन की रोज बातचीत होती थी. लिहाजा पुलिस ने उस नंबर की भी काल डिटेल्स निकलवा कर उसे भी सर्विलांस पर लगवा दिया.

पता चला कि नीरजा चौहान के बंद मोबाइल की लोकेशन भी उसी जगह पर है, जहां उस नंबर की लोकेशन थी. काल डिटेल्स की जांच से पता चला कि वह नंबर किसी राघव कुमार के नाम से था और उस का एड्रेस मकान नंबर डी-167, पीरागढ़ी कैंप, दिल्ली था. लेकिन उस के मोबाइल की लोकेशन नोएडा के सैक्टर 80 में 'सच कहूं' मीडिया हाउस की आ रही थी.

काल डिटेल्स की जांच से एक खास बात यह पता चली कि उस फोन के पंजीकरण में लगा फोटो और मोबाइल की प्रोफाइल में लगा फोटो उन तस्वीरों से हूबहू मेल खाता था, जो सीसीटीवी फुटेज में नीरजा के घर आने वाले शख्स की थी. इस से यह बात साफ हो गई कि उक्त व्यक्ति राघव कुमार ही था. इंसपेक्टर मनीष प्रताप सिंह ने देर करना ठीक नहीं समझा. उन्होंने जल्दबाजी में 2 टीम तैयार कीं.

मंजिल दूर नहीं थी

एक टीम को उन्होंने पीरागढ़ी में उस पते पर रवाना किया, जिस पते पर राघव कुमार का सिम पंजीकृत था. दूसरी टीम को ले कर वह खुद सेक्टर 80 में 'सच कहूं' मीडिया हाउस की प्रिंटिंग यूनिट पर पहुंच गए.

वहां पहुंच कर पुलिस ने जब कंपनी के गार्ड को राघव कुमार की फोटो दिखाई तो पता चला कि वह वहां कैंटीन में खाना बनाने का काम करता है. उस वक्त वह कंपनी में ही मौजूद था.

मंजिल इतनी आसानी से मिल जाएगी पुलिस को उम्मीद नहीं थी. पुलिस ने मीडिया हाउस की कैंटीन से राघव को हिरासत में ले लिया. उस की तलाशी लेने पर नीरजा चौहान का वन प्लस मोबाइल और उन के घर की चाबी बरामद हो गई. पुलिस ने राघव को थाना बिसरख ला कर उस से पूछताछ शुरू की. उस से पूछताछ के बाद नीरजा चौहान की हत्या का हर राज खुलता चला गया.

ये कहानी थी सोशल मीडिया की फंतासी, प्यार, नाजायज संबधों, मनमुटाव और उस के परिणामस्वरूप हुए झगड़े का परिणाम, जो समाज के उलझे रिश्तों की तरफ इशारा करती है.

नीरजा चौहान स्मार्ट अनामिका बन कर फंतासी की दुनिया में खो चुकी थी और खुद की रची जिंदगी का रस रंग देखनेचखने के लिए नकली पहचान में जीने लगी थी, उस की हत्या उस शख्स ने की, जिस ने अपनी पहचान साइलेंट किलर के रूप में बना रखी थी. इस नकली पहचान और नकली रिश्ते ने ही नीरजा की जान ले ली.

नीरजा चौहान युवावस्था से ही फिल्मों में काम करने की महत्त्वाकांक्षा रखती थी. उस की चाहत थी कि लाखों लोग उस के दीवाने हों, दूसरे फिल्मी सितारों की तरह उस के भी हजारोंलाखों फैन हों. शादी से पहले नीरजा आईने के सामने खड़े हो कर घंटों तक काल्पनिक कहानियों पर एक्टिंग किया करती थी.

चाहत भले ही अंगड़ाइयां लेती रही, लेकिन नीरजा के सपनों को पंख नहीं लग सके. दरअसल, नीरजा चेहरेमोहरे से मामूली लड़की थी. फिल्मी दुनिया में या तो वे लोग आगे बढ़ पाते हैं जो सितारों के बेटे और बेटियां होते हैं या फिर बड़े घर के ऐसे बच्चे जिन के

पास संघर्ष करने के लिए पैसा भी होता है और शक्लसूरत से भी हसीन होते हैं.

लेकिन नीरजा के पास इन में से कुछ भी नहीं था. साधारण लड़कियों की तरह उस की मंजिल भी शादी पर सिमट कर रह गई. नीरजा के पति नरेश एनटीपीसी में नौकरी करते हैं. कुछ साल पहले तक नरेश की नियुक्ति एनटीपीसी दादरी में थी, लेकिन बाद में उन का तबादला एनटीपीसी टांडा में हो गया था. इस दौरान नीरजा भले ही एक बेटे और एक बेटी की मां बन चुकी थी. लेकिन उस के मन में कुछ करने की कसक अभी बाकी थी.

नीरजा की इस कसक को पंख उस वक्त लग गए, जब 4-5 साल पहले सोशल मीडिया पर टिकटाक, लाइक और कुछ ऐसे ऐप प्रचलन में आए जो बौलीवुड में जाने वाले लोगों के लिए एक नया प्लेटफार्म बन रहे थे. 4 साल पहले नीरजा ने भी टिकटाक और लाइक ऐप पर अपना प्रोफाइल बना कर इस ऐप पर अपनी ऐक्टिंग की वीडियो अपलोड करनी शुरू कर दीं.

हालांकि नीरजा के पति नरेश चौहान को पत्नी का यह काम पसंद नहीं था, इसलिए दोनों के बीच अक्सर वादविवाद और मतभेद हो जाते थे. लेकिन बाद में जब नरेश चौहान का तबादला टांडा में हो गया और वह पत्नी तथा दोनों बच्चों को छोड़ कर वहां चले गए, तो नीरजा पूरी तरह स्वतंत्र हो गई. अब वह एकएक दिन में 2-3 वीडियो बना कर टिकटाक और लाइक पर अपलोड करने लगी.

देखतेदेखते नीरजा दोनों प्लेटफार्म पर काफी लोकप्रिय हो गई. लाइक के प्लेटफार्म पर उस के 80000 फालोवर थे, जबकि टिकटाक पर उस के सवा 2 लाख से ज्यादा फैन थे. लाइक ऐप पर नीरजा ने 14,000 वीडियो अपलोड किए थे, जबकि टिकटाक पर उस के 10 हजार से ज्यादा वीडियो थे.

ग्लैमर की रंगीन दुनिया किसी भी इंसान में गुमान और गलतफहमी दोनों ही ले आती है. नीरजा को भी लगने लगा था कि वह बड़ी स्टार बन गई है. क्योंकि उस के हर वीडियो पर उस के चाहने वालों के हजारों कमेंट आते थे.

कुछ फैन तो नीरजा से उस का नंबर ले कर फोन पर बातचीत भी करते थे. हालांकि नरेश चौहान और उन के बच्चों को यह बात कतई पसंद नहीं थी कि वह अनजान लोगों से फोन पर इस तरह बातचीत करे, लेकिन समझानेबुझाने के बावजूद नीरजा ने किसी की बात नहीं सुनी.

करीब ढाई साल पहले की बात है, लाइक और टिकटाक ऐप पर उसी की तरह वीडियो बना कर डालने वाले एक युवक राघव कुमार से नीरजा की दोस्ती हो गई.

दिल्ली के पीरागढ़ी कैंप में अपने मातापिता और 4 भाईबहनों के साथ रहने वाला राघव कुमार ज्यादा पढ़ालिखा नहीं था. उस ने 5वीं पास की थी. लेकिन कुदरत ने उसे खूबसूरत चेहरा और बेहतरीन अदाकारी दी थी, जिस के बूते वह अपने वीडियो बना कर लाइक व टिकटाक पर अपलोड करने लगा.

गुजरबसर करने के लिए राघव कुमार 'सच कहूं' अखबार की प्रिंटिंग यूनिट में कर्मचारियों के लिए बनी कैंटीन में खाना बनाने का काम करता था. इस काम के वेतन के रूप में उसे 8000 रुपए मिलते थे.

नीरजा और राघव बने सोशल मीडिया के स्टार

राघव कुमार को नीरजा के वीडियो काफी पसंद आते थे. शुरुआत में उस ने नीरजा के वीडियो पर लाइक और कमेंट करने शुरू किए. बाद में वह अपने वीडियो भी उसे भेजने लगा. जब नीरजा ने देखा कि राघव भी उस की तरह आर्टिस्ट है, तो वह भी उस के वीडियो पर कमेंट करने लगी.

कुछ समय बाद दोनों के बीच चैटिंग शुरू हो गई. फिर दोनों ने एकदूसरे को अपने मोबाइल नंबर दे दिए, जिस के बाद दोनों में बातचीत होने लगी. यह बातचीत कुछ समय बाद मेलमुलाकातों तक पहुंच गई.

नीरजा की अपने पति से काफीकाफी दिन तक मुलाकात नहीं होती थी. एक तो पति से दूरी और दूसरे पति द्वारा उस के काम को नापसंद किया जाना, ऐसी वजह रहीं, जिस के कारण नीरजा अपने आर्टिस्ट दोस्त राघव कुमार की तरफ आकर्षित होती गई.

नीरजा के परिवार को सोशल मीडिया पर उन का वीडियो अपलोड करना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए रिश्तेनाते वालों को पता ना चले इसलिए उस ने लाइक व टिकटाक पर अपना प्रोफाइल स्मार्ट अनामिका के नाम से बना रखा था. दूसरी तरफ राघव कुमार ने अपना अकाउंट साइलेंट किलर के नाम से बनाया हुआ था. राघव के भी हजारों फालोअर थे.

टिकटाक और लाइक पर नीरजा व राघव कुमार चर्चित और लोकप्रिय आर्टिस्ट के रूप में विख्यात हो चुके थे. लिहाजा दोनों ही एकदूसरे की तरफ आकर्षित हो गए. उन की मेलमुलाकात बाद में निजी संबंधों के रूप में तब्दील हो गई. नीरजा के बुलावे पर राघव अक्सर उस वक्त उस के घर आनेजाने लगा, जब उस का बेटा अपनी जौब पर चला जाता था.

दोनों एकदूसरे के साथ खातेपीते, मौजमस्ती करते और एकदूसरे के वीडियो बनाने के लिए नएनए आइडिया तैयार कर के समय व्यतीत करते. लाइक व टिकटाक से नीरजा और राघव कुमार दोनों को ही कुछ पैसा भी मिल जाता था.

राघव कुमार न तो शादीशुदा था, न ही उस पर कोई जिम्मेदारी थी. इसलिए वह जो भी पैसा कमाता नीरजा के ऊपर या तो खर्च कर देता या फिर यह कह कर उस के पास रख देता था कि जब उसे जरूरत होगी, मांग लेगा. पिछले 2-ढाई साल में राघव कुमार नीरजा को करीब एक लाख रुपया दे चुका था.

पिछले दिनों राघव कुमार को आर्थिक परेशानी के चलते पैसे की जरूरत पड़ गई थी, इसलिए उस ने सोचा कि क्यों न नीरजा से कुछ पैसा ले लिया जाए.

5 मार्च की रात को नीरजा और राघव की फोन पर बातचीत हुई थी, जिस में नीरजा ने उस से कहा था कि उस का बेटा 6-सवा 6 बजे तक अपने औफिस चला जाएगा, इसलिए वह मिलने के लिए उस के बाद घर आ जाए.

लेकिन संयोग से अगली सुबह नीरजा का बेटा अमन देर तक सोता रहा. सुबह 6:40 पर राघव ने नीरजा के घर के पास पहुंच कर आने के बारे में पूछा तो नीरजा ने बताया कि बेटा अभी तक घर पर है. वह कुछ ही देर में उसे उठा कर औफिस भेज देगी, तब घर आ जाए.

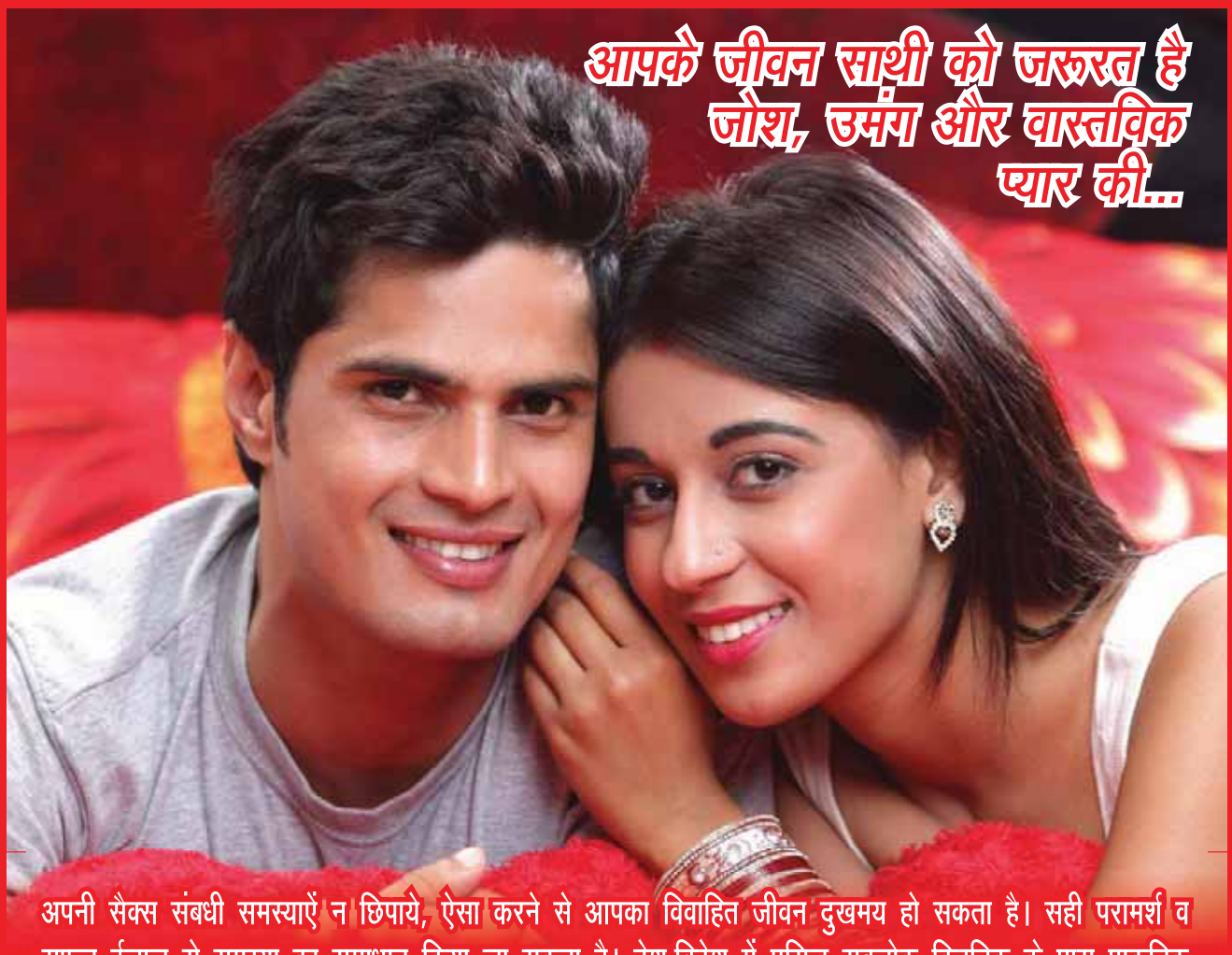

अपनी सैक्स संबधी समस्याऐं न छिपाये, ऐसा करने से आपका विवाहित जीवन दुखमय हो सकता है। सही परामर्श व सफल ईलाज से समस्या का समाधान किया जा सकता है। देश-विदेश में प्रसिद्ध सबलोक क्लिनिक के पास प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व कीमती भस्मों से युक्त आयुर्वेदिक नुस्खे हैं। जिनके सेवन से आप अपनी सैक्स लाइफ को और भी रंगीन बनाकर विवाहित जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। संतान के इच्छुक दम्पत्ती स्वयं मिले। ज्ञानबर्धक पुस्तक नवजीवन मुफ्त मंगवाये। विदेशों में हवाई डाक द्वारा इलाज भेजने का विशेष प्रबन्ध है।

एशिया में अपनी तरह का एकमात्र सर्वाधिक विश्वसनीय आधुनिक क्लिनिक

सबलोक क्लिनिक

दरियागंज (टाटा मोटर्स के ऊपर)

नेताजी सुभाष मार्ग (निकट दिल्ली गेट) नई दिल्ली-110002

9891300008 सुबह 12 से शाम 7, रविवार : 12 से 3 (रजिस्ट्रेशन 500/-)

www.sablokclinic.com / email : sablokclinicindia@gmail.com

सबलोक क्लिनिक, दरियागंज की इंडिया में कहीं कोई ब्रांच नहीं है।

इसके बाद नीरजा ने बेटे अमन को औफिस के लिए देरी की बात कह कर बिस्तर से उठाया. अमन 15 मिनट में तैयार हो कर बिना नाश्ता किए ही औफिस चला गया.

बेटे को औफिस भेजने के बाद नीरजा ने करीब 7 बजे राघव को फोन कर के घर आने के लिए कहा तो पता चला वह काफी देर इंतजार करने के बाद वापस जा रहा है. नीरजा ने राघव को डांटा और वापस अपने फ्लैट पर आने के लिए कहा. करीब सवा 7 बजे राघव नीरजा के फ्लैट पर पहुंच गया.

नीरजा के घर जाने के बाद दोनों ने एक साथ नाश्ता किया. हमेशा की तरह दोनों ने एकांत में समय बिताया. उस के बाद दोनों के बीच इधरउधर की बातचीत होने लगी. इसी दौरान राघव ने नीरजा से कहा कि उसे पैसे की जरूरत है, लिहाजा वह 5 हजार रुपए दे दे. पैसे की बात सुनते ही नीरजा नाराज हो कर कहने लगी कि मेरे पास क्या पैसों का पेड़ लगा है. मेरे अपने खर्चे ही मुश्किल से पूरे होते हैं तुम्हें कहां से दूं.

नीरजा का जवाब सुन कर राघव को भी गुस्सा आ गया. उस ने कहा अब तक मैं ने न जाने तुम्हें कितना पैसा दिया है और आज जब मुझे पैसों की जरूरत है तो तुम कह रही हो पैसों का पेड़ लगा है. राघव ने उसे याद दिलाया कि उस ने वादा किया था कि जब भी पैसे की जरूरत हो वह उस से मांग लेना, मैं हर तरह तुम्हारा साथ दूंगी.

राघव के इस तरह जबान चलाने से नीरजा और ज्यादा नाराज हो गई. उस ने राघव से साफ कह दिया कि अगर वह उस के साथ इस तरह बात और पैसे की डिमांड करेगा तो वह उसे अपने अकाउंट पर ब्लौक कर देगी. आगे भी सारे संबंध खत्म कर देगी.

नीरजा ने खुद घर बुलाया मौत को

नीरजा का यह जवाब सुन कर राघव का पारा हाई हो गया. उस ने नीरजा को भद्दी सी गाली देते हुए कहा, ''साली, अब तक तू मेरा इस्तेमाल करती आ रही थी.''

अपने लिए ऐसे शब्दों को नीरजा भी बरदाश्त नहीं कर पाई. उस ने राघव के गाल पर जोरदार थप्पड़ जड़ दिया.

औरत के हाथों पिटाई से कमजोर इंसान के अहं को भी चोट पहुंचती है. राघव हट्टाकट्टा इंसान था, उस ने भी नीरजा पर हाथ छोड़ दिया. गुस्से में उस ने नीरजा के चेहरे पर जोरदार घूंसा मारा, जिस से वह जमीन पर जा गिरी.

जमीन पर गिरते ही वह बेहोश हो गई. राघव पर गुस्से का भूत सवार था. वह भद्दीभद्दी गालियां देते हुए नीरजा का गला दबाने लगा.

आवेश में राघव कितनी देर तक उस का गला दबाता रहा और कितनी ताकत से दबाता रहा, इस का अहसास उसे तब हुआ जब उस का गुस्सा कुछ कम हुआ. उस ने देखा नीरजा का शरीर निढाल हो चुका है.

नीरजा के मृत शरीर को देख कर राघव के हाथपांव फूल गए. उसे सुझाई नहीं दिया कि क्या करे.

एकदो मिनट उस ने सोचा, उस के बाद उस ने बिस्तर पर पड़ा नीरजा का मोबाइल अपनी जेब में रखा और उसे ऐसे ही जमीन पर पड़ा छोड़ कर फ्लैट के बाहर निकल आया.

मुख्यद्वार पर ताला लगा कर चाबी उस ने जेब में रख ली. सुबह करीब 11 बजे वह सोसाइटी से बाहर निकल आया और सीधा सैक्टर 80 स्थित अपने औफिस चला गया, जहां वह कैंटीन में काम करने के साथ रहता भी था.

राघव कुमार ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि उस का इरादा नीरजा की हत्या करने का बिल्कुल नहीं था. लेकिन जब उस ने अपने ही दिए पैसों में से मात्र 5 हजार रुपए मांगे तो नीरजा ने उस की बेइज्जती की साथ ही थप्पड़ भी मारा तो वह गुस्से में आ गया और आवेश में नीरजा की हत्या कर बैठा.

मध्य जोन के डीसीपी हरीश चंद्र के समक्ष राघव कुमार ने नीरजा हत्याकांड का सच कबूल कर लिया. जांच अधिकारी इंसपेक्टर मनीष प्रताप सिंह ने उसे अदालत में पेश किया, जहां से राघव को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया.

खुद को स्मार्ट समझने वाली नीरजा को सोशल मीडिया पर अनामिका बन कर लोकप्रिय होना महंगा पड़ा. सोशल मीडिया के ही एक अनजान दोस्त ने साइलेंट किलर बन कर उस की जिंदगी छीन ली. पुलिस ने 7 घंटे में ही नीरजा चौहान हत्याकांड का खुलासा तो कर दिया, लेकिन पुलिस इस बात को समझने में आज भी नाकामयाब है कि एक संपन्न परिवार की महिला ने सोशल मीडिया पर लोकप्रिय होने के लिए एक अनजान शख्स से दोस्ती कर अपनी जिंदगी को दांव पर क्यों लगाया ? ●

—कथा पुलिस की जांच व हत्याभियुक्त से हुई पूछताछ पर आधारित

डीसीपी हरिशचंद्र

इंसपेक्टर सुनील प्रताप सिंह

एसएसआई रिशिपाल सिंह कसाना

सबइंसपेक्टर नीरज शर्मा

8 सालों में की 20 हजार किलोमीटर की यात्रा

आज के मशीनी युग में हम इतने दिगभ्रमित हैं कि 50 या 100 वर्ष पहले के मनुष्यों के जीवन और जीवन के लिए बने संसाधनों के बारे में सोच कर आश्चर्य होता है. दूरसुदूर रहने वाले संबंधियों या परिचितों को कोई संदेशा भेजना होता था तो किसी व्यक्ति के हाथों भेजने के अलावा कोई विकल्प नहीं था. भले ही इस काम में एक दिन लगे या 2 दिन. धीरेधीरे समय आगे बढ़ा तो अंगरेजी शासकों ने डाक व्यवस्था शुरू की, जिस से पत्र भेजे जाने लगे. लेकिन इस के लिए भी पोस्टमैन को घोड़े पर सवार हो कर गांवगांव पत्र देने के लिए जाना होता था. उस का काम पत्र पहुंच. ाना ही नहीं, बल्कि लाना भी होता था.

घोड़े पर सवार पोस्टमैन की पहचान यह होती थी कि वह हाथ में डंडा लिए होता था, जिस में घुंघरू बंधे होते थे. जब साइकिल आम रूप से मिलने लगीं तो पोस्टमैन साइकिल ले कर चलने लगे. यह व्यवस्था अब भी है, लेकिन अब डाक में सरकारी पत्रों के अलावा कुछ नहीं होता, क्योंकि लोग डाक पर नहीं कुरियर पर विश्वास करने लगे हैं. वैसे भी अगर बात करनी हो या संदेश देना हो तो चिट्ठी छोड़ मोबाइल से नंबर लगाइए और बात कर लीजिए, देश हो या विदेश, कहीं भी संदेश के लिए व्हाट्सऐप है, जो मिनट छोड़िए सेकेंडों में संदेश पहुंचा देता है.

इन तमाम सुविधाओं के बावजूद कुछ लोग पुराने कार्यों को याद कर के एक्सपेरिमेंट करते रहते हैं. सफलता मिले न मिले यह अलग बात है. ऐसा ही अनूठा काम किया जर्मनी के एक परिवार ने. इस परिवार ने एक संदेश लिख कर एक बोतल में डाला और उसे ठीक से बंद कर के राइन नदी में प्रवाहित कर दिया. 8 साल में 20 हजार किलोमीटर की यात्रा कर के यह बोतल न्यूजीलैंड के औकलैंड में एक परिवार को मिली.

संदेश पढ़ने के बाद इस परिवार ने बोतल में रखे संदेश पर लिखे पते पर संपर्क किया. जर्मनी की जूलिया गोगोस के अनुसार यह बोतल उपहार में मिली थी. उन्होंने सोचा कि इस बोतल से कुछ नया कर के देखते हैं. उन्होंने बोतल में संदेश रख कर उसे नदी में प्रवाहित कर दिया. यह बात 2012 की थी.

पत्र में लिखा था कि हम संदेश भेज रहे हैं, आप को मिले तो संपर्क कीजिएगा. साथ ही अपना पता भी लिखा था. उस वक्त उन्होंने सोचा था कि वह बोतल आसपास के नीदरलैंड जैसे किसी देश में किसी को मिलेगी और उन्हें चिट्ठी का जवाब मिल जाएगा. गोगोस के अनुसार जब न्यूजीलैंड से किसी ने संपर्क किया तो उन की खुशी का ठिकाना न रहा. हकीकत में यह परिवार इतने साल बाद बोतल और संदेश को भूल चुका था.

जब इस परिवार को जवाब मिला तो उन्होंने नक्शे में देखा कि न्यूजीलैंड कहां हैं. वैसे 50 वर्ष पहले अलास्का में इसी तरह बोतल में एक मैसेज मिला था जिस की वजह से खोए हुए रूसी परिवार का पुनरमिलन हुआ था. ●

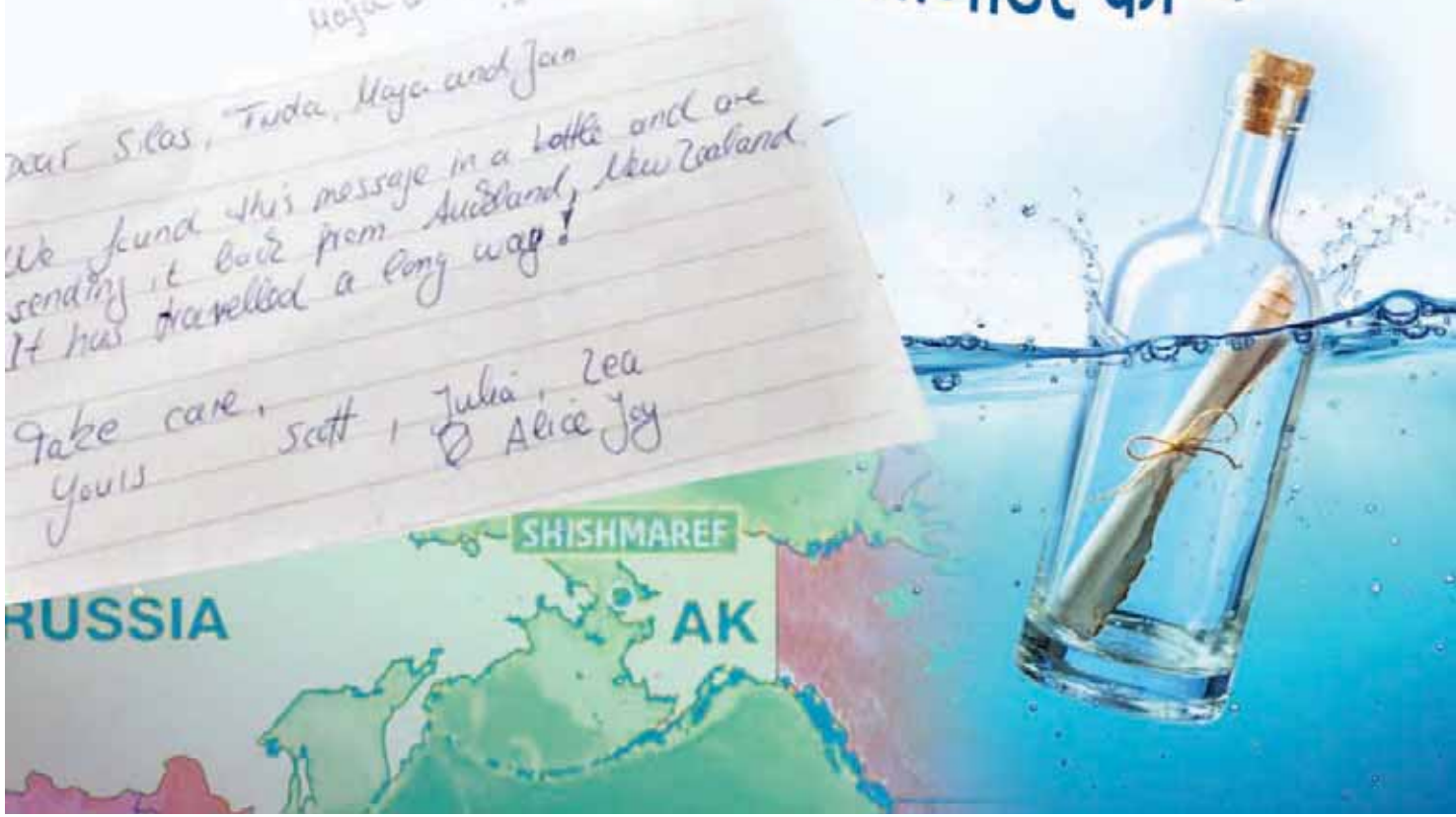

समाज या लोग भले ही कहते रहें कि औरत अब अबला नहीं है. लेकिन सच यह है कि महिलाएं कुछ मामलों में पुरुष की ओर ही देखती हैं. सुमिता और समरिता के साथ भी यही हुआ, जिस की वजह से विक्रांत नागर ने...

समरीता : घर में पाला शियार

मां सुनीता : बेटी के दोस्त पर भरोसा करने की सजा

खून में रंगा शियार

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

राजधानी दिल्ली की पूर्वी सीमा पर बसा वसुंधरा एनक्लेव ऐसा पौश इलाका है, जहां अधिकतर उच्चमध्यम वर्गीय नौकरीपेशा लोग रहते हैं. कभी गाजीपुर, कोंडली से सटा ये इलाका पिछले कुछ सालों में ऊंची अट्टालिकाओं और बहुमंजिले सोसाइटी अपार्टमेंट से पट गया है.

इन्हीं आलीशान सोसाइटी अपार्टमेंट्स में से एक है मनसारा अपार्टमेंट. वसुंधरा एनक्लेव स्थित इसी मनसारा अपार्टमेंट के बी ब्लौक में तीसरी मंजिल के फ्लैट संख्या 303 में कुछ सालों से सुमिता मैसी (45) और उन की बेटी समरिता मैसी (25) रहती थीं. मूलरूप से केरल की रहने वाली सुमिता के पति की करीब 20 साल पहले मौत हो गई थी. उस वक्त समरिता महज 5 साल की थी.

सुमिता ने विकासपुरी में रहने वाले एक व्यक्ति से प्रेम विवाह किया था. 20 साल पहले पति की मौत के बाद भी सुमिता कई सालों तक विकासपुरी में रहती रही. कुछ सालों पहले सुमिता ने नोएडा में अपनी जौब की वजह से विकासपुरी का इलाका छोड़ दिया और वसुंधरा एनक्लेव में आ कर रहने लगी. सुमिता की बहन और भाई केरल में रहते थे.

सुमिता खुद नोएडा के सेक्टर 142 के एक एनजीओ में ऊंचे पद पर थीं. जबकि उन की बेटी समरिता पढ़ाई के बाद पिछले 5 महीने से एक 5 स्टार होटल में हौस्पिटैलेटी की ट्रेनिंग ले रही थी.

सुमिता सिंगल मदर थी. जवान बेटी को पालने के लिए जिंदगी में कितनी जद्दोजहद करनी पड़ती है, सुमिता को अच्छी तरह पता था. मांबेटी के बीच चूंकि दोस्ताना रिश्ता था, इसलिए सुमिता को ज्यादा चिंता नहीं होती थी.

9 मार्च सोमवार को होली का त्यौहार था, जबकि रविवार को अवकाश था. इसीलिए सुमिता व समरिता दोनों की ही 2 दिन छुट्टी थी. मांबेटी ने रविवार को ही प्लान बना लिया था कि 10 मार्च को होली का रंग खेलने के बाद अपने कुछ दोस्तों के घर मिलने जाएंगी.

9 मार्च की सुबह करीब 8 बजे सुमिता के यहां काम करने वाली नौकरानी चंदा जब काम करने के लिए उन के घर पहुंची और कालबेल बजाई, तो अंदर से किसी ने दरवाजा नहीं खोला.

कुछ देर इंतजार के बाद चंदा ने दोबारा कालबेल बजाई. इस बार भी न कोई जवाब मिला, न ही दरवाजा खोला गया. चंदा ने सुमिता को आंटी...आंटी कह कर दरवाजा खटखटाना शुरू कर दिया. लेकिन यह क्या, दरवाजा पहले से ही खुला था.

छायांकन: मौडलिंग

हाथ लगते ही दरवाजे का पट खुल गया.

चंदा 'आंटी..आंटी' पुकारते हुए फ्लैट के अंदर आ गई. जैसे ही वह सुमिता के कमरे में पहुंची तो उस के हलक से चीख निकल गई. वहां का नजारा देख वह हैरान रह गई. कमरे में चारों तरफ खून बिखरा हुआ था. खून के सैलाब में डूबा सुमिता का शव जमीन पर पड़ा था.

चंदा न आई होती तो सुबह को पता नहीं चलता

मां के साथ क्या हुआ, ये बताने के लिए चंदा तेजी से सुमिता की बेटी समरिता के कमरे में गई. लेकिन वहां का नजारा और भी दिल दहला देने वाला था.

मांबेटी के लहूलुहान शव देख कर कामवाली मेड चंदा थरथर कांपने लगी. अगले ही क्षण जब उस की तंद्रा लौटी तो वह शोर मचाते हुए फ्लैट से बाहर निकल आई और 'खून...खून' चिल्लाने लगी.

शोर सुन कर आसपास के फ्लैटों में रहने वाले लोग घरों से बाहर निकल आए. चंदा ने हांफते रोते हुए एक ही सांस में सारी कहानी बता दी.

उत्सुकतावश कुछ लोगों ने फ्लैट के भीतर जा कर देखा तो चंदा की बात सही निकली. जानकारी मिलने के बाद मनसारा अपार्टमेंट के सिक्युरिटी गार्ड और आरडब्लूए के पदाधिकारी मौके पर पहुंच गए.

एक सुरक्षित सोसाइटी में फ्लैट के भीतर रहने वाले 2 लोगों का कत्ल हो जाए तो सोसाइटी की सुरक्षा पर सवाल खड़े होना लाजिमी है.

पासपड़ोस के लोग सुरक्षा में ढिलाई को ले कर खुसरफुसर करने लगे. लोगों की भारी भीड़ एकत्रित हो चुकी थी, इसलिए सोसाइटी के लोगों ने तुरंत पुलिस कंट्रोलरूम को सोसाइटी में हुए दोहरे हत्याकांड की सूचना दे दी.

सुबह के वक्त इलाके में हत्या जैसी वारदात, वह भी दोहरे हत्याकांड की सूचना मिल जाए, तो किसी भी पुलिस अधिकारी के मुंह का स्वाद कसैला होना स्वाभाविक है.

न्यू अशोक नगर थाने के एसएचओ तेजराम मीणा की नींद ड्यूटी अफसर द्वारा दी गई इसी मनहूस सूचना से खुली. स्वाभाविक है उन के मुंह का जायका भी बिगड़ा ही होगा. लेकिन एक पुलिस अधिकारी के लिए हर दिन ऐसी वारदातों की सूचनाएं मिलना कोई नई बात नहीं होती.

इंसपेक्टर तेजराम मीणा ने तत्काल बिस्तर छोड़ा और तैयार हो कर अपने सहायक एसएचओ विनोद कुमार, इंसपेक्टर इन्वेस्टीगेशन सरिता व अन्य स्टाफ के साथ मौकाएवारदात की तरफ रवाना हो गए. रास्ते से ही उन्होंने फोन कर के अपने सबडिवीजन कल्याणपुरी के एसीपी जितेंद्री पटेल, डीसीपी जसमीत सिंह, एडीशनल डीसीपी राकेश पावरिया को भी सूचना दे दी थी.

सुमिता के शरीर पर चाकू जैसे धारदार हथियार से करीब आधा दर्जन से ज्यादा वार किए गए थे, जबकि अपने बैडरूम में फर्श पर पड़ी उन की बेटी समरिता के शरीर पर धारदार हथियार के अनगिनत वार किए गए थे. दोनों के ही कमरों का सामान चारों तरफ बिखरा पड़ा था.

कमोबेश सभी अधिकारी थोड़े से अंतराल के बाद घटनास्थल पर पहुंच गए. मौके पर क्राइम और एफएसएल की टीम को भी बुला लिया गया. फ्लैट के बाहर खड़ी भीड़ को हटाने के बाद एसएचओ मीणा ने जब घर में प्रवेश किया तो मांबेटी के शव देख कर उन की भी रूह कांप उठी.

सुमिता के शरीर पर चाकू जैसे धारदार हथियार से करीब आधा दर्जन से ज्यादा वार किए गए थे, जबकि अपने बैडरूम में फर्श पर पड़ी उन की बेटी समरिता के शरीर पर धारदार हथियार के अनगिनत वार किए गए थे. दोनों के ही कमरों का सामान चारों तरफ बिखरा पड़ा था.

घटनास्थल को देख कर साफ लग रहा था कि किसी ने लूटपाट का विरोध करने पर दोनों हत्याओं को अंजाम दिया है. लेकिन यह बताने वाला कोई नहीं था कि हत्यारे घर से कितनी नकदी, कीमती सामान अपने साथ ले गए हैं. लेकिन अगले ही पल पुलिस को लूटपाट की अपनी थ्योरी बदलनी पड़ी क्योंकि घर में फ्रैंडली एंट्री हुई थी.

घर में जबरन प्रवेश करने के कोई लक्षण नहीं थे, न ही पुलिस को हत्या के समय मांबेटी के साथ गलत नीयत से जोरजबरदस्ती के कोई निशान मिले थे. हां, 2 बातों की शंका जरूर थी कि हत्या करने वाला या वाले मृतक परिवार के परिचित रहे हों. दूसरी संभावना यह थी कि दोनों हत्याएं सोते वक्त की गई थीं या फिर उन्हें मारने से पहले नशीला पदार्थ दिया गया था.

क्राइम और एफएसएल की टीमों ने अपना काम पूरा कर लिया था. डीसीपी जसमीत सिंह की अगुवाई में एसएचओ तेजराम मीणा और उन की टीम ने जांचपड़ताल का सारा काम पूरा कर लिया था, जिस के बाद सुमिता व समरिता के शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया गया.

रहस्य थी मांबेटी की हत्या

इस दौरान सोसाइटी में रहने वाले कुछ लोगों की मदद से पुलिस ने मृतक मांबेटी के कुछ स्थानीय परिचितों के नंबर हासिल कर के उन्हें इस वारदात की सूचना दी, तो एकएक कर के उन के ज्यादातर परिचितों को इस वारदात की खबर लग गई.

पुलिस ने एकएक कर के उन सभी परिचितों से सवालजवाब और उन के बैकग्राउंड के बारे में जानकारी एकत्र करनी शुरू कर दी. मांबेटी की हत्या क्यों हुई, इस का तत्काल खुलासा तो नहीं हो सका लेकिन पुलिस ने पूछताछ के दौरान आपसी रंजिश, लूटपाट, प्रेम प्रसंग समेत तमाम दृष्टिकोणों से छानबीन कर के जानकारी एकत्र करनी शुरू कर दी.

इस दोहरे हत्याकांड में पुलिस के सामने सब से बड़ा सवाल यह था कि सोसाइटी

चारों तरफ से कवर थी, ऊंची बाउंड्री थी. गेट पर बिना पहचान बताए और बिना फ्लैट ओनर की रजामंदी के किसी को भीतर नहीं आने दिया जाता था. फिर ऐसा कैसे संभव हुआ कि रात के वक्त एक ही घर के 2 लोगों की हत्याएं कर के हत्यारे आसानी से फरार हो गए.

पुलिस ने पिछले 24 घंटों के दौरान सोसाइटी की सिक्युरिटी में तैनात सभी गार्ड्स को बुला कर उन से एकएक कर के पूछताछ शुरू कर दी. चूंकि मनसारा अपार्टमेंट सोसाइटी में मुख्यद्वार से ले कर हर ब्लौक हर फ्लोर पर सीसीटीवी कैमरों का ऐसा जाल बिछा हुआ था कि कोई भी शख्स किसी भी घर में जाते

आरोपी विक्रांत नागर और शैंकी शर्मा

वक्त इन कैमरों की कैद में आने से नहीं बच सकता था. एसएचओ मीणा की टीम ने कंट्रोल रूम में जा कर सभी कैमरों की फुटेज देखने का काम शुरू कर दिया.

पुलिस टीमों की तरफ से शाम 3 बजे तक की गई कोशिशों से कम से कम इस दोहरे हत्याकांड पर पड़ी धुंध काफी हद तक हट गई. जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि शुक्रवार को सुमिता व समरिता आखिरी बार अपनेअपने दफ्तर गई थीं.

पुलिस को शुरू से ही लग रहा था कि इस वारदात को किसी जानकार ने ही अंजाम दिया है. सीसीटीवी की जांच और लोगों से पूछताछ के बाद यह बात साफ भी हो गई.

दरअसल, मृतका सुमिता मैसी की बेटी समरिता की एक सहेली प्रेरणा से पुलिस को जानकारी मिली कि समरिता नोएडा में स्कूली पढ़ाई के दौरान से उस की दोस्त थी. समरिता अपनी जिंदगी के बारे में प्रेरणा को अच्छीबुरी हर बात बताया करती थी.

प्रेरणा ने पुलिस को बताया कि वारदात से एक दिन पहले यानी रविवार की रात को समरिता कार से अकेली घर लौट रही थी. उस वक्त उस ने गाना गाते हुए वाट्सऐप पर अपना स्टेटस अपडेट किया था. स्टेटस में वह काफी खुश दिख रही थी.

प्रेरणा ने बताया कि करीब 3 साल पहले एक पुराने फ्रैंड की मदद से समरिता की दोस्ती विक्रांत नागर से हुई थी, जिस के बाद दोनों के मिलने का सिलसिला शुरू हुआ और बाद में दोनों लिवइन में रहने लगे. लेकिन एक साल पहले दोनों के बीच अनबन हो गई थी, जिस की वजह से समरिता उस से छुटकारा पाना चाहती थी.

समरिता उस से दूरी बनाने लगी थी, क्योंकि 2-3 महीने पहले समरिता की दोस्ती उस के ही साथ हौस्पिटैलिटी में कैरियर बना रहे एक अन्य युवक से हो गई थी और समरिता ने उस के साथ पार्टियों में जाना शुरू कर दिया था.

प्रेरणा ने बताया कि हो सकता है विक्रांत नागर इस से नाखुश हो. हालांकि प्रेरणा ने यह भी बताया कि विक्रांत के बुलावे पर समरिता उस के दोस्तों के बीच पार्टी के लिए अब भी जाती थी. लेकिन उस ने तय कर लिया था कि वह उस के साथ शादी नहीं करेगी.

पुलिस द्वारा यह पूछे जाने पर कि विक्रांत नागर कहां रहता है, प्रेरणा ने बताया कि वह सिर्फ इतना ही जानती है कि विक्रांत ने समरिता व उस की मां को बता रखा था कि उस के मातापिता नहीं हैं. वह अपनी मौसी के साथ अमर कालोनी के गढ़ी इलाके में रहता है.

''विक्रांत काम क्या करता है ?'' एसएचओ मीणा ने सवाल किया तो प्रेरणा ने जवाब दिया, ''काम क्या करता है ये तो पता नहीं सर, लेकिन समरिता ने बताया था कि वह आर्टिस्ट है. उस ने 1-2 टीवी शोज में काम किया था. उसे बौडी बनाने का भी शौक था. लेकिन समरिता और उस की मां विक्रांत की आर्थिक मदद किया करती थीं. वह अक्सर उन के घर पर भी रुक जाया करता था.''

बेटी का दोस्त संदेह के घेरे में

दोनों मांबेटी घर में अकेली रहती थीं, इस लिए विक्रांत के रुकने से उन्हें कोई परेशानी नहीं होती थी. उस के होने से घर में एक मर्द के होने से उन्हें सुरक्षा का अहसास होता था. सुमिता और समरिता बाजार से सामान खरीद कर उसे दिया करती थीं.

कई बार तो वह अपने घर के लिए घरेलू सामान भी उन्हीं से खरीदवा कर ले जाया करता था. चूंकि विक्रांत अक्सर घर आता था. इसलिए सोसायटी के गेट पर तैनात सुरक्षाकर्मी भी उसे परिवार का सदस्य मान कर नहीं रोकते थे.

प्रेरणा से मिली जानकारी पुलिस के लिए काफी मददगार थी. वारदात की सूचना पा कर जितने भी परिचित वहां पहुंचे थे, उन में विक्रांत नहीं था. प्रेरणा ने पुलिस को विक्रांत नागर का मोबाइल नंबर दे दिया था. डीसीपी जसमीत सिंह के आदेश पर तत्काल उस के मोबाइल नंबर की काल डिटेल्स मंगवा ली गई और उस के फोन को सर्विलांस पर लगा दिया गया.

इसी दौरान पुलिस टीम को मनसारा

अपार्टमेंट की सिक्युरिटी में तैनात गार्ड्स और सीसीटीवी की फुटेज से भी बड़ा खुलासा हुआ, जिस से पता चला कि बीती रात विक्रांत नागर सुमिता के घर पर आया हुआ था. रात को करीब 2.51 बजे वह समरिता की कार ले कर सोसाइटी से निकला था. उस के साथ गाड़ी में एक और युवक बैठा था.

सोसाइटी से जाते समय वह इतनी हड़बड़ी में था कि उस की कार सोसायटी के गेट से टकरा गई थी और गेट का कुछ हिस्सा टूट गया था.

सिक्युरिटी गार्ड ने बैरीकेड लगा कर उस की गाड़ी रुकवा ली थी, लेकिन विक्रांत ने उन से माफी मांगते हुए कहा कि उस की गाड़ी के ब्रेक में अचानक कुछ दिक्कत आ गई है, इसलिए गलती से गाड़ी टकरा गई.

सीसीटीवी से यह भी साफ हो गया कि विक्रांत और उस का दोस्त रात करीब सवा 11 बजे पैदल ही सोसाइटी में आए थे. उस के बाद सुमिता के फ्लैट के बाहर लगे सीसीटीवी से पता चला कि विक्रांत कुछ दूरी पर छिपा था और समरिता करीब डेढ़ बजे अपने फ्लैट का दरवाजा खोल कर बाहर आई थी. वह काफी देर तक नीचे टहलती रही. उस के बाद वह ऊपर फ्लैट में चली गई.

इन तमाम सीसीटीवी फुटेज से यह बात साफ हो गई कि इस हत्याकांड के पीछे विक्रांत नागर व उस के दोस्त का ही हाथ था. क्योंकि हत्याकांड के वक्त वही परिवार के पास था और उस के बाद से उस का कोई पता नहीं था.

इसी बीच उच्चाधिकारियों के आदेश पर एसएचओ तेजराम मीणा ने न्यू अशोक नगर थाने में भादंसं की धारा 302 के तहत मामला दर्ज करवा दिया था.

केस की जांच का जिम्मा उन्होंने खुद ही ले लिया था. समरिता के लिवइन पार्टनर के लापता होने और उस के बारे में अन्य जानकारी पुलिस के हाथ लग गई थी.

जसमीत सिंह ने उस की गिरफ्तारी के लिए एसएचओ तेजराम मीणा के नेतृत्व में एक पुलिस टीम गठित कर दी, जिस में एएसआई किशनपाल सिंह, हेडकांसटेबल आदेश, कांसटेबल प्रवीण और नरेंद्र को शामिल किया गया.

टीम का सुपरविजन करने की जिम्मेदारी एसीपी जितेंद्र पटेल को सौंपी गई. डीसीपी जसमीत सिंह ने न्यू अशोक नगर पुलिस की मदद के लिए जिले के स्पैशल स्टाफ व एटीएस की टीमों को भी जांच और गिरफ्तारी के काम में लगा दिया.

जांच अधिकारी मीणा ने साइबर सेल और सर्विलांस की मदद से पता लगवाया कि विक्रांत की लोकेशन कहां है. पता चला विक्रांत के मोबाइल की लोकेशन जयपुर में है. उसी शाम पुलिस की 2 टीमें जयपुर के लिए रवाना कर दी गईं.

डीसीपी जसमीत सिंह ने जयपुर पुलिस से संपर्क साध कर उन्हें विक्रांत का मोबाइल नंबर और उस की लोकेशन से अवगत करा दिया. जयपुर पुलिस ने भी उस नंबर को सर्विलांस पर लगा दिया.

विक्रांत था हत्यारा

अगले तीन घंटों में पुलिस ने जयपुर में विक्रांत को उस होटल से दबोच लिया जहां वह ठहरा हुआ था. विक्रांत के पकड़े जाने की सूचना तत्काल दिल्ली पुलिस को दे दी गई. दिल्ली पुलिस की 2 टीमें पहले ही जयपुर रवाना हो चुकी थीं. उन्होंने जयपुर पहुंचते ही विक्रांत को अपनी गिरफ्त में ले लिया. अगली दोपहर तक पुलिस की टीमें उसे दिल्ली ले आईं.

विक्रांत नागर ने न्यू अशोक नगर थाने आ कर पुलिस को बताया कि उस ने अपने दोस्त शैंकी शर्मा के साथ मिल कर अपनी प्रेमिका समरिता और उस की मां की हत्या की थी. वारदात को अंजाम देने के बाद विक्रांत नागर बस द्वारा दिल्ली से जयपुर चला गया था. उस ने बताया कि 2 साल तक लिवइन में रहने के बाद समरिता अक्सर उसे ताने देने लगी थी कि वह कुछ कमाताधमाता नहीं है और उन के टुकड़ों पर पलता है.

अगर दोनों की शादी हो गई तो वह उसे कमा कर कैसे खिलाएगा. शुरू में तो विक्रांत समरिता के तानों को हवा में उड़ा देता था, लेकिन बाद में यह बात जब ज्यादा बढ़ने लगी तो दोनों के बीच इस बात को ले कर अक्सर झगड़ा होने लगा.

विक्रांत को 3 महीने पहले तब दिक्कत होने लगी, जब समरिता ने उस से साफ कह दिया कि वह उस के घर कम आयाजाया करे. साथ ही जब विक्रांत को यह खबर लगी कि आजकल समरिता अपने साथ होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई करने वाले एक युवक के साथ इश्क कर बैठी है और दोनों एक साथ घूमतेफिरते भी हैं. यह जान कर विक्रांत का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया.

करीब 3 महीने पहले अपने प्रति समरिता के लगाव को परखने के लिए विक्रांत ने शादी का प्रपोजल दिया, जिसे समरिता ने ठुकरा दिया. इस के बाद साफ हो गया कि वह उस से किनारा कर रही है.

विक्रांत ने अपने दोस्त शैंकी को एक दिन फोन कर के बताया कि अगर समरिता उस की ना हो सकी तो वह उसे किसी ओर की भी नहीं होने देगा.

विक्रांत अपने दोस्त शैंकी के साथ मनसाए अपार्टमेंट में पैदल आया था, लेकिन गया समरिता की कार से

अब बिना रुके, बिना थके घण्टों तक लगातार... बार-बार

विश्वस्तरीय यौन चिकित्सा
रिज़ल्ट ओरियन्टेड ट्रीटमेंट

- यौन दुर्बलता
- शीघ्रपन
- अंगों का छोटपन
- नपुंसकता
- सेक्स की कमी
- मर्दाना कमज़ोरी
- ढीलापन/टेढ़ापन
- स्वप्न दोष

इलाज ₹15,575/- से शुरू

SEXUAL WELLNESS CENTER

TEST TUBE BABY CENTER

डॉ0 ए.के. जैन क्लीनिक
लखनऊ

अमेरिका प्रमाणित क्लीनिक

डॉ0 ए.के. जैन क्लीनिक
चारबाग लखनऊ, मोहन होटल के ठीक सामने

डॉ0 ए.के. जैन आई.वी.एफ. क्लीनिक
हज़रतगंज, लखनऊ, हनुमान मन्दिर के सामने

Call: 8601377777, 9839009919 | www.drakjainclinic.com

केस पर काम करने वाली पुलिस टीम

होली से 2 दिन पहले जब विक्रांत को पता चला कि होली से एक दिन पहले समरिता का नया प्रेमी होली की पार्टी दे रहा है और वह भी उस में जाने वाली है तो उस ने उसी दिन इरादा बना लिया कि वह समरिता को खत्म कर देगा. उस के दिमाग में एक खतरनाक प्लानिंग ने जन्म ले लिया.

इस से आहत हो कर उस ने अपने दोस्त शैंकी को उसी शाम मुंबई से दिल्ली पहुंचने के लिए कहा. शैंकी फ्लाइट पकड़ कर दिल्ली आ गया. एयरपोर्ट से विक्रांत उसे साथ ले कर होली की रात को ही सीधे समरिता के घर पहुंच गया.

होली की रात को दोनों समरिता के अपार्टमेंट में पहुंचे. घर के बाहर छिप कर उस ने समरिता को फोन किया और बातचीत के लिए नीचे बुलाया. जब समरिता नीचे आने लगी तो वे दोनों मौका पा कर घर में दाखिल हो गए. सुमिता अपने कमरे में लौटी सोने की तैयारी कर रही थी.

विक्रांत और शैंकी ने रसोई से मीट काटने वाला चाकू ले कर सब से पहले बेरहमी से सुमिता पर 7-8 वार कर के उस की हत्या कर दी. इस के बाद दोनों समरिता का इंतजार करने लगे. जब समरिता घर में लौटी और कमरे में पहुंची तो दोनों ने उस के कमरे में ले जा कर उस की भी चाकू से गोद कर हत्या कर दी.

इस के बाद दोनों ने कीमती सामान की तलाश में कमरे की तलाशी ली. वहां से दोनों ने 43 हजार रुपए की नकदी और समरिता के डेबिट व क्रेडिट कार्ड अपने कब्जे में ले लिए. उस के बाद आधी रात को करीब 2:51 बजे दोनों पार्किंग में खड़ी समरिता की कार ले कर फरार हो गए. इसी हड़बड़ी में कार सोसाइटी के मेन गेट से टकरा गई थी.

विक्रांत जयपुर में तो शैंकी मुंबई में मिला

सोसाइटी से निकलने के बाद विक्रांत ने समरिता की कार को त्रिलोकपुरी इलाके में छोड़ दिया था. शैंकी वहां से आटो पकड़ कर

डीएसपी जसमीत सिंह

ईस्ट औफ कैलाश स्थित एक होटल में चला गया. जबकि विक्रांत बस पकड़ कर जयपुर रवाना हो गया और वहां जा कर एक होटल में ठहर गया. जहां से उस के फोन की लोकेशन के आधार पर पुलिस ने उसे दबोच लिया था.

विक्रांत से पूछताछ के बाद पुलिस ने उसी शाम को ईस्ट औफ कैलाश में उस होटल पर छापा मारा, जहां शैंकी ठहरा हुआ था. शैंकी को उस वक्त गिरफ्तार किया गया, जब वह होटल का बिल चुका कर फरार होने की तैयारी में था.

उसी शाम दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने त्रिलोकपुरी से समरिता की कार भी बरामद कर ली. साथ ही उन की निशानदेही पर वारदात में प्रयुक्त चाकू भी बरामद कर लिया गया. यह चाकू समरिता के घर में ही छिपा कर रखा गया था.

जांच के बाद जांच अधिकारी तेजराम मीणा को यह भी पता चला कि विक्रांत को नशे की आदत थी. कुछ साल पहले इसी लत के कारण वह नशामुक्ति केंद्र में भी रह चुका था. उस ने इस वारदात को नशे में अंजाम दिया या नहीं, इस की जांच के लिए पुलिस ने उस के ब्लड सैंपल टेस्ट के लिए भेजे हैं.

जांच में पता चला कि शैंकी मुंबई में रह कर मौडलिंग में अवसर ढूंढ रहा था. उस ने कुछ टीवी शोज में भी काम किया था. वहीं विक्रांत भी एक शो में काम कर चुका था इसी कारण दोनों के बीच गहरी दोस्ती थी.

पूछताछ में विक्रांत ने बताया कि वह और शैंकी हत्या करने के बाद घर में रखे 43 हजार रुपए अपने साथ ले कर निकले थे. इस रकम से दोनों ने नए मोबाइल ले लिए थे. समरिता के डेबिट और क्रेडिट कार्ड भी वे अपने साथ ले गए थे.

विक्रांत ने कनौट प्लेस में एक एटीएम से पैसे निकालने की कोशिश भी की थी, लेकिन समरिता ने कुछ दिन पहले ही अपना पिन बदल दिया था, जिस की जानकारी विक्रांत को नहीं थी. इसलिए वह एटीएम से रकम नहीं निकाल सका.

पुलिस ने उसी शाम को विक्रांत और शैंकी के खिलाफ दर्ज हत्या के मामले में लूट की धारा भी जोड़ दी और दोनों को कड़कड़डूमा कोर्ट में पेश किया, जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया.

उसी शाम पुलिस को मिली पोस्टमार्टम से खुलासा हुआ कि समरिता मैसी के शरीर पर 30 से ज्यादा चाकू के वार किए गए थे, जबकि मां सुमिता मैसी के शरीर पर चाकू के 10 घाव मिले थे.

सुमिता और समरिता को इस बात का अहसास भी नहीं था कि जिस विक्रांत को उन्होंने अपना सहारा मान कर घर में पनाह दी थी, वही आस्तीन का सांप निकलेगा और उन की जिंदगी को डस लेगा. ●

—कथा पुलिस की जांच व आरोपियों से हुई पूछताछ पर आधारित

बौंबर बनने के बजाय खुद को उड़ा लिया

पिछले 2-3 दशकों से दुनियाभर में अफरातफरी का माहौल है. कहीं एक देश दूसरे देश से लड़ने को तैयार बैठा है, तो कहीं गृहयुद्ध जैसा माहौल है. स्थिति चाहे जैसी भी हो, युद्ध का सब से ज्यादा असर महिलाओं पर पड़ता है. वजह यह कि चाहे मामला घरपरिवार का हो या बाहर का, स्वदेश का हो या विदेश का, सभी के लिए महिलाएं सौफ्ट टारगेट समझी जाती हैं. हालांकि धीरेधीरे इंसान की बदलती सोच से स्थितियां तेजी से बदल रही हैं.

नाइजीरिया में पिछले 10-12 सालों से सत्ता के लिए खूनी संघर्ष चल रहा है. इस संघर्ष में महिलाओं पर जो अमानवीय अत्याचार हुए हैं, उन्हें सुन जान कर रूह कांपने लगती है. फिलहाल हिंसा का यह दौर उत्तर पूर्व नाइजीरिया से 3 पड़ोसी देशों तक पहुंच गया है. स्थिति यह है कि आतंकवादी संगठन बोकोहराम ने 500 से अधिक महिलाओं को सुसाइड बौंबर के रूप में तैनात किया है. इन में कुछ महिलाएं अपने आत्मघाती जानलेवा मिशन को पूरा करने से पहले ही गिरफ्तार भी हुई हैं. लेकिन कुछ महिलाओं ने चुपचाप रहते अपनी बहादुरी से आतंकवादियों की योजनाओं को नाकाम कर दिया.

'न्यूयौर्क टाइम्स' ने ऐसी दर्जनों महिलाओं से बात की. उन्होंने बताया कि बोकोहराम ने उन्हें 2 विकल्प दिए थे. ये विकल्प थे या तो आतंकवादियों से शादी करो या फिर आत्मघाती बम हमलावर बन जाओ. ऐसी कई महिलाओं ने तो बौंबर बनने के बजाय स्वयं को उड़ा लिया. काफी महिलाएं बोकोहराम की कैद से निकल भागीं. लेकिन उन्होंने अपने बंधक बनाए जाने की बात को छिपाए रखा, क्योंकि उन्हें आतंकवादियों से सहानुभूति रखने वाली बता कर सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता. ऐसी कुछ महिलाएं मैदुगुरी की सड़कों पर घूमती रहती हैं. बड़ी संख्या में महिलाओं को राहत शिविरों में भी रखा जाता है.

अभी हाल में ही 6 युवतियों के एक समूह को बौंबर बना कर एक मस्जिद को बम से उड़ाने के मिशन पर भेजा गया था. ये महिलाएं बिना किसी की हत्या किए बमों से मुक्ति चाहती थीं. इन में से 19 साल की बलाराबा मोहम्मद ने एक योजना बनाई. योजनानुसार सभी ने सिर से स्कार्फ उतारे और उन की लंबी रस्सी बना ली. बलाराबा ने सभी बमों को रस्सी में बांध कर कुएं में डाल दिया. फिर सब भाग निकलीं. अब ये महिलाएं राहत शिविरों में हैं. बलाराबा ने बताया कि कई महिलाओं के साथ रोजाना दुष्कर्म होता है. जबकि कुछ महिलाओं का इस्तेमाल सुसाइड जैकेट की टेस्टिंग के लिए किया जाता था. ●

पूर्णिया, बिहार

आशियाने के कांटे

संगीता ने अपने घर वालों से विद्रोह कर के पप्पू से प्रेम विवाह किया था. वह उस के 2 बच्चों की मां भी बनी. पप्पू ने उसे गांव का उपमुखिया भी बनवाया और उस के लिए 2-2 जगह मकान भी बनवाए. लेकिन जब उस की जिंदगी में लल्लन आया तो...

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

छायाकन: मौडलिंग

संगीता पति की दुश्मन

छायांकन: मौडलिंग

बिहार का जिला पूर्णिया. दिन रविवार, तारीख 26 मई, 2019. समय शाम के 7 बजे. पप्पू यादव पूर्णिया की प्रभात कालोनी स्थित घर से अपने गांव चनका जाने के लिए निकला. दरअसल, पप्पू के 2 मकान थे, एक पूर्णिया की प्रभात कालोनी में और दूसरा गांव चनका में.

प्रभात कालोनी में वह पत्नी संगीता और दोनों बच्चों के साथ रहता था. उस की पत्नी संगीता गांव की उपमुखिया थी और अपने बच्चों के साथ ज्यादातर पूर्णिया में रहती थी.

घर से निकल कर पप्पू जब जगैल चौक स्थित राइस मिल के पास पहुंचा, तभी पीछे से तेज गति से आई एक बाइक आई और उस के सामने आ कर रुकी.

अचानक रास्ता रोके जाने से पप्पू की बाइक उस बाइक से टकराने से बालबाल बची. पप्पू ने अपनी बाइक के ब्रेक लगाए तो बाइक जमीन पर फिसल गई. उस के गिरते ही पप्पू भी नीचे जा गिरा.

पप्पू के सामने जो बाइक आ कर रुकी थी, उस पर 2 युवक सवार थे. दोनों युवक फुरती से बाइक से उतरे और पप्पू के सामने जा खड़े हुए. उन दोनों को देख कर पप्पू समझ गया कि उन के इरादे ठीक नहीं हैं.

खतरा भांप कर पप्पू बाइक को वहीं छोड़ कर विपरीत दिशा में भागा, वे दोनों युवक भी उस के पीछे दौड़े. दौड़तेदौड़ते एक युवक ने कमर से पिस्तौल निकाल कर उस पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी शुरू कर दीं.

उस ने 7 गोलियां चलाईं. जो पप्पू के सिर से ले कर कमर तक लगीं. कई गोलियां लगते ही पप्पू जमीन पर गिर गया. खून से तरबतर पप्पू कुछ देर तड़पता रहा फिर उस की मौत हो गई. उस के मरने के बाद दोनों बदमाश जिस ओर से आए थे, अपनी बाइक ले कर उसी ओर भाग गए.

बाजार के नजदीक दिनदहाड़े गोलियां चलने से बाजार में भगदड़ मच गई. लोग धड़ाधड़ अपनी दुकानों के शटर गिराने लगे. इसी बीच किसी ने 100 नंबर पर फोन कर के पुलिस कंट्रोल रूम को हत्या की सूचना दे दी थी. वह इलाका श्रीनगर थाना क्षेत्र में आता था. पुलिस कंट्रोल रूम ने घटना की सूचना श्रीनगर थाने को दे दी.

सूचना मिलते ही थानाप्रभारी संजय कुमार सिंह पुलिस टीम के साथ घटनास्थल की तरफ रवाना हो गए.

उपमुखिया का पति था मृतक

मौके पर पहुंच कर पुलिस ने लहूलुहान पड़े शख्स का मुआयना किया. उस के शरीर में कोई हरकत नहीं हो रही थी, वह मर चुका था. पुलिस ने वहां मौजूद लोगों से लाश की शिनाख्त करानी चाही तो भीड़ में से एक युवक ने लाश की पहचान कर ली.

उस ने बताया कि मृतक का नाम पप्पू यादव है. वह चनका पंचायत क्षेत्र की उपमुखिया संगीता का पति है. लाश की शिनाख्त होते ही पुलिस ने थोड़ी राहत की सांस ली और उपमुखिया संगीता से फोन पर संपर्क कर उन्हें दुखद सूचना दे कर मौके पर बुलाया.

पति की हत्या की सूचना पाते ही संगीता दहाड़ें मार कर रोने लगी. घर पर वह जिस अवस्था में थी, उसी में बच्चों को साथ ले कर घटना स्थल पर पहुंच गई. बदमाशों ने उस के पति पप्पू को गोलियों से छलनी कर दिया था.

सूचना पा कर थोड़ी देर में एसपी विशाल शर्मा और एसडीपीओ (सदर) आनंद पांडेय भी मौके पर आ गए थे. पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का मुआयना किया. मृतक के शरीर पर गोलियों के कई घाव थे. घटनास्थल से कुछ दूर उस की बाइक जमीन पर गिरी पड़ी थी.

यह देख पुलिस अधिकारियों ने अनुमान लगाया कि पप्पू की हत्या बदमाशों ने लूट के लिए नहीं की थी. बदमाश अगर लूट के लिए हत्या करते तो बाइक अपने साथ ले जाते.

चूंकि हत्या उपमुखिया के पति की हुई थी. इसलिए स्थिति विस्फोटक बन सकती थी, इस से पहले कि कोई व्यक्ति कानून अपने हाथ में लेता, एसएसपी ने जरूरी लिखापढ़ी पूरी करवा कर लाश पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल, पूर्णिया भिजवा दी.

अगली सुबह यानी 27 मई को उपमुखिया संगीता के पति पप्पू यादव हत्याकांड को ले कर उपमुखिया के समर्थकों ने शहर में जगहजगह तोड़फोड़ की. वे हत्यारों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की मांग कर रहे थे. एसपी विशाल शर्मा मौके पर पहुंच गए. उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि पप्पू यादव के हत्यारों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा.

विशाल शर्मा के आश्वासन के बाद आंदोलनकारी शांत हुए. इस के तुरंत बाद थानाप्रभारी संजय कुमार सिंह ने केस की जांच शुरू कर दी. प्रभात कालोनी पहुंच कर उन्होंने संगीता से मुलाकात कर के पूछा कि किसी पर कोई शक वगैरह हो तो बताएं.

संगीता ने पति की हत्या में पट्टीदारों की भूमिका पर शक जाहिर किया. दोनों परिवारों के बीच वर्षों से जमीन को ले कर विवाद चल रहा था. संगीता के बयान के आधार पर पुलिस ने पट्टीदारों को हिरासत में ले लिया.

पुलिस को तब हैरानी हुई, जब पता चला कि लल्लन यादव ने घटना से 2 दिन पहले संगीता के आईडीबीआई बैंक खाते से एक लाख रुपए निकाले थे. यह रुपए संगीता ने लल्लन को नई बाइक खरीदने के लिए दिए थे. इस से पुलिस को यकीन हो गया कि पप्पू की हत्या में मृतक की पत्नी संगीता और उस के प्रेमी लल्लन यादव का हाथ है. पुलिस ने दोनों के घर दबिश दी तो दोनों ही फरार मिले.

उन से सख्ती से पूछताछ की गई, लेकिन पप्पू यादव की हत्या में उन की कोई भूमिका नजर नहीं आई तो पुलिस ने कुछ खास हिदायतें दे कर उन्हें छोड़ दिया. इस के अलावा पुलिस ने और भी कई संदिग्धों से पूछताछ की, लेकिन हत्यारों का कोई सुराग नहीं मिल सका.

देखतेदेखते इस घटना को घटे 15 दिन बीत गए. पुलिस जांच जहां से चली थी, वहीं आ कर रुक गई. पुलिस को समझ नहीं आ रहा था कि पप्पू की हत्या किस वजह से हुई और हत्यारा कौन है ? इस के बाद थानाप्रभारी ने मृतक पप्पू और उस की पत्नी उपमुखिया संगीता के फोन नंबरों की काल डिटेल्स निकलवाई. इस के अलावा सुरागरसी के लिए मुखबिरों को भी लगा दिया गया. दोनों की काल डिटेल्स का पुलिस ने बारीकी से अध्ययन किया.

संगीता की फोन की काल डिटेल्स देख कर पुलिस चौंकी. घटना से कुछ देर पहले और घटना से कुछ देर बाद संगीता की एक नंबर पर लंबी बातचीत हुई थी. खास बात यह थी कि उस नंबर पर संगीता की कई दिनों से लंबीलंबी बातें हो रही थीं. यह बातचीत अधिकतर रात के समय ही होती थी. पुलिस को यह बात हजम नहीं हो रही थी.

पुलिस को मिला सुराग

पुलिस ने उस नंबर की काल डिटेल्स निकलवा कर जांच की तो वह मोबाइल नंबर लल्लन कुमार यादव, निवासी भोकराहा, पूर्णिया का निकला. इस जानकारी के बाद पुलिस लल्लन पर नजर रखने लगी. साथ ही उस के बारे में गोपनीय तरीके से सारी जानकारी एकत्र की जाने लगीं.

जांच में पता चला कि लल्लन यादव उपमुखिया संगीता का दूर के रिश्ते का देवर है. वह संगीता के प्रभातनगर कालोनी स्थित मकान पर अकसर आताजाता था. इसी दरम्यान दोनों के बीच प्रेम हो गया था.

पुलिस को तब हैरानी हुई, जब पता चला कि लल्लन यादव ने घटना से 2 दिन पहले संगीता के आईडीबीआई बैंक खाते से एक लाख रुपए निकाले थे. यह रुपए संगीता ने लल्लन को नई बाइक खरीदने के लिए दिए थे. इस से पुलिस को यकीन हो गया कि पप्पू की हत्या में मृतक की पत्नी संगीता और उस के प्रेमी लल्लन यादव का हाथ है. पुलिस ने दोनों के घर दबिश दी तो दोनों ही फरार मिले.

पप्पू यादव हत्याकांड को धीरेधीरे 3 महीने बीत चुके थे. इस दौरान मुखबिर ने पुलिस को इत्तला दी थी कि पप्पू की हत्या मुंगेर जिले के बरियापुर के रहने वाले शार्प शूटर संतोष चौधरी और उस के साथी निशांत यादव ने की थी. शार्प शूटर संतोष चौधरी का नाम सामने आते ही पुलिस चौंकी, क्योंकि संतोष कौन्ट्रैक्ट किलर था.

घड़ियाली आंसू बहाती संगीता

पैसे ले कर हत्या करना उस का पेशा था. मुंगेर सहित बिहार के कई जिलों में उस के खिलाफ हत्या और हत्या के प्रयास के कई मुकदमे दर्ज थे. वह पुलिस को चकमा देने में माहिर था. जिले के विभिन्न इलाकों में बड़ी घटनाओं को अंजाम देने के बावजूद वह केवल 1-2 बार जेल गया था.

संतोष की हुई तलाश

पुलिस संतोष को पकड़ने की योजना बना ही रही थी कि 31 अगस्त, 2019 की शाम मुखबिर ने थानाप्रभारी संजय कुमार सिंह को एक ऐसी सूचना दी, जिसे सुनते ही उन की बांछे खिल उठीं.

सूचना यह थी कि पप्पू यादव हत्याकांड को अंजाम देने वाला शार्प शूटर संतोष चौधरी अपने दोस्त निशांत यादव के साथ किसी टारगेट को पूरा करने के लिए अगली सुबह यानी पहली सितंबर, 2019 को पूर्णिया आ रहा है. मुखबिर की सूचना पर थानाप्रभारी संजय कुमार सिंह ने उसी रात संतोष और निशांत को गिरफ्तार करने की रणनीति बनाई. उन्होंने इस मिशन को इतना गुप्त रखा कि टीम के 7 सदस्यों के अलावा किसी 8वें को खबर तक नहीं लगने दी.

पहली सितंबर, 2019 की सुबह थानाप्रभारी संजय कुमार सिंह अपनी टीम के साथ खुटटी धुनौल चौकी के पास सादा कपड़ों में दुपहिया वाहनों की चैकिंग में करने लगे. मुखबिर ने बदमाशों को यहीं आना बताया था. सुबह 8 बजे के करीब 2 युवक अपाचे मोटरसाइकिल पर चौकी की ओर आते दिखाई दिए. बाइक पर वही नंबर था जो मुखबिर ने बताया था.

जैसे ही वे नजदीक आए पुलिस ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया. तलाशी के दौरान बदमाशों के पास से एकएक लोडेड पिस्तौल, संतोष के पास से 5 जिंदा कारतूस 2 मोबाइल फोन और निशांत के पास से एक मोबाइल फोन बरामद हुए. नाम पूछने पर दोनों ने अपने नाम संतोष चौधरी और निशांत यादव बताए.

3 महीनों से पुलिस को इन दोनों बदमाशों की तलाश थी. पुलिस दोनों को गिरफ्तार कर के थाने ले आई और उन से सख्ती से पूछताछ शुरू की. दोनों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया. शूटर संतोष चौधरी ने पुलिस को बताया कि पप्पू की हत्या के लिए उस की पत्नी संगीता ने लल्लन यादव के मार्फत 5 लाख की सुपारी दी थी. पेशगी के तौर पर संतोष ने लल्लन यादव की सवा लाख रुपए दिए थे. बाकी रुपए काम हो जाने के बाद देने का वादा किया था. जो अब तक नहीं मिले थे.

उसी दिन मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने लल्लन यादव को भी गिरफ्तार कर लिया. पुलिस ने जब लल्लन यादव का सामना संतोष चौधरी से कराया तो उस के होश उड़ गए. अंततः उस ने भी अपना जुर्म कबूलते हुए पुलिस को सब कुछ बता दिया. उस ने प्रेमिका के इशारे पर पप्पू की हत्या का तानाबाना बुना था. पप्पू की हत्या का खुलासा हो चुका था. तीनों आरोपियों लल्लन यादव, संतोष चौधरी और निशांत यादव से पूछताछ के बाद पप्पू यादव की हत्या की जो कहानी सामने आई इस प्रकार थी.

35 वर्षीय पप्पू यादव मूलरूप से पूर्णिया जिले के श्रीनगर थाना क्षेत्र के चनका गांव का रहने वाला था. 3 भाई बहनों में पप्पू सब से बड़ा था. धनदौलत और खेतीबाड़ी से मजबूत पप्पू मिलनसार और मेहनती था. उस ने अपनी मेहनत के बलबूते पर पैसा भी कमाया था और रुतबा भी.

प्रेम विवाह किया था पप्पू ने

बात सन 2007 की है. जातेआते पड़ोस के गांव की संगीता से पप्पू की आंखें लड़ गईं. दोनों का प्यार बढ़ा तो 31 जनवरी, 2008 को उन्होंने भाग कर पहले मंदिर में और फिर कोर्ट में शादी कर ली. शादी के बाद दोनों परिवारों के बीच खूब हंगामा हुआ. इस के बाद संगीता के घर वालों ने उस से हमेशा के लिए रिश्ता तोड़ लिया. जबकि पप्पू के घर वालों ने संगीता को बहू के रूप में स्वीकार लिया था.

संगीता को जीवन साथी के रूप में पा कर पप्पू खुश था. वह उस से इतना प्यार करता था कि उस के लिए कुछ भी करने को तैयार रहता था. दोनों की गृहस्थी हंसीखुशी से चल रही थी. समय के साथ संगीता 2 बच्चों की मां बन गई, जिस से परिवार की खुशियां और बढ़ गईं. इसी दौरान गांव में हुए मुखिया के चुनाव में संगीता उपमुखिया चुन ली गई. उपमुखिया बन जाने के बाद पढ़ीलिखी संगीता के भाग्य ने करवट ली. गांव वालों के काम से संगीता और पप्पू का पूर्णिया शहर के अधिकारियों के पास आनाजाना शुरू हो गया. इसी के मद्देनजर पप्पू ने पूर्णिया की प्रभात कालोनी में भी मकान बनवा लिया था.

शहर में मकान हो जाने के बाद संगीता का मन गांव में नहीं लगता था. बच्चों और पति के साथ वह शहर वाले मकान में आ गई थी. संगीता और पप्पू कभी गांव में रहते थे तो कभी पूर्णिया में.

सन 2016 में पप्पू के दूर के रिश्ते का भाई लल्लन बीए की पढ़ाई के लिए पूर्णिया आया और किराए का कमरा ले कर अकेला रहने लगा. लल्लन जानता था उस के भाईभाभी भी पड़ोस में रहते हैं. कभीकभी वह उन से मिलने प्रभात कालोनी आ जाता और घंटों साथ बिता कर अपने कमरे पर लौट जाता था.

लल्लन की रिश्ते की भाभी संगीता चुलबुली और मजाकिया स्वभाव की थी, तो लल्लन भी कुछ कम नहीं था. 20-21 साल का लल्लन भी मजाकिया था. वह दिल खोल कर भाभी से मजाक करता था. लल्लन से बातें कर के संगीता को अच्छा लगता था.

देवरभाभी के बीच का मजाक कभीकभी तो निम्न स्तर तक पहुंच जाता था. भद्दी मजाक सुन कर संगीता बुरा मानने के बजाय मजे लेती थी. मजाकमजाक में ही देवर और भाभी के बीच आंखें चार हुईं. यह सन 2016 की बात है जब लल्लन संगीता के संपर्क में आया था.

लल्लन और संगीता का प्यार परवान चढ़ा तो दोनों अपनेअपने हिसाब से भविष्य के सपने देखने लगे. 2 बच्चों की मां संगीता यह भूल गई थी वह किसी और की पत्नी है. पप्पू ने प्यार के लिए घर वालों से बगावत कर के हमेशा के लिए रिश्ता तोड़ा था. लल्लन के प्यार में वह सब कुछ भुला बैठी थी. उस की आंखों में लल्लन का प्यार और मन में उस की देहगंध बस गई थी.

दोनों के प्यार का सिलसिला आगे बढ़ा तो लल्लन ने संगीता से बातचीत के लिए फरजी नाम और पते पर 2 मोबाइल सिम ले लिए. जिस में से एक सिम का उपयोग लल्लन खुद करता था और दूसरे मोबाइल फोन और सिम का इस्तेमाल संगीता करती थी. किसी को शक न हो, इसलिए दोनों बीचबीच में यह सोच कर सिम की अदलाबदली कर लेते थे, ताकि मामला अगर कभी पकड़ में आए तो पुलिस के हाथ उन तक नहीं पहुंच पाएं.

जांच करते एसपी विशाल शर्मा

पूर्णिया में रहते हुए लल्लन कुछ अपराधियों के संपर्क में आ गया था. पैसों की जरूरत के लिए वह अपराध की दलदल में उतर गया था. वह जिन बदमाशों के संपर्क में था, वे अवैध असलहों और कारतूसों के बड़े सप्लायर थे. इसी चक्कर में लल्लन 3 घटनाओं में अरोपी बन गया था.

अवैध असलहों की तस्करी के मामले में पुलिस ने उसे अगस्त 2018 में गिरफ्तार कर जेल भेजा था. पूर्णिया जेल में ही लल्लन की मुलाकात मुंगेर जिले के बरियारपुर के रहने वाले शूटर संतोष चौधरी से हुई. वह पैसे ले कर हत्याएं करता था.

संगीता पति को समझने लगी नासूर

पप्पू को अपनी पत्नी संगीता और लल्लन के अवैध संबंधों की जानकारी हो गई थी. लल्लन को ले कर दोनों के बीच अकसर विवाद भी होता था. यह विवाद इतना बढ़ जाता था कि हाथापाई तक की नौबत आ जाती थी.

संगीता किसी भी हालत में लल्लन से अलग होने के लिए तैयार नहीं थी. उस ने पति से साफ कह दिया था कि वह लल्लन के बिना नहीं जी सकती. भले ही जिस्म पर तुम्हारा (पप्पू) अधिकार हो लेकिन दिल पर लल्लन का अधिकार है, मुझे उस से कोई अलग नहीं कर सकता, तुम भी नहीं.

पत्नी का दोटूक जवाब सुनने के बाद पप्पू का पुरुषत्व ललकार उठा. वह क्या कोई भी पति सहन नहीं कर सकता कि उस की पत्नी उस के जीते जी किसी गैरमर्द की बाहों में झूले. संगीता और पप्पू अपनीअपनी जिद पर अड़े थे, जिस की वजह से दोनों की जिंदगी विवादों के ऐसे तूफान में घिर गई जिस ने उन के जीवन का तिनकातिनका बिखेर दिया. घर से जैसे सुकून और शांति दोनों ही रूठ गईं. घर में आए दिन किचकिच होती रहती थी.

संगीता लल्लन के प्यार में पागल थी. जो पप्पू कभी उस के सपनों का राजकुमार था, वही उस के लिए खलनायक बन गया था. संगीता पप्पू नाम के खलनायक को अपनी जिंदगी से हमेशा के लिए उखाड़ फेंकना चाहती थी. इस के लिए वह लल्लन के जेल से आने का इंतजार कर रही थी. आखिर वह अपने प्रेमी की जमानत के लिए खुद आगे आई और वकील से बात कर उस की जमानत करा दी.

फरवरी 2019 में जब लल्लन जेल से बाहर आया तो उस ने पप्पू को अपने रास्ते से हटाने की योजना बनाई. दरअसल संगीता ने लल्लन से कह दिया था कि अगर मुझे पाना चाहते हो तो पप्पू नाम के कांटे को हमेशा के लिए

मनोहर कहानियां

मनोहर कहानियां पर आधारित
क्राइम, थ्रिलर, हॉरर
की अनोखी पेशकश अब TATA sky अद्भुत कहानियाँ पर

Tune in to 144

आपराधिक घटनाओं की सत्य और ताजा रिपोर्टिंग

पुलिस अधिकारियों से बातचीत पर आधारित

पैसा, प्रेम, सैक्स, धोखा, छलफरेब, प्रपंच का परदाफाश

अपराधों के बारे में जानिए और सतर्क रहिए

खरीदें बुक स्टाल से हर महीने **10** तारीख तक नया अंक उपलब्ध

हर माह कथा रूप में नई कहानियां नए तेवर और कलेवर के साथ

केवल Rs 500 में वार्षिक ग्राहक बने और प्रतिमाह रजिस्टर्ड डाक से पाएं अपनी मनपसंद पत्रिका मनोहर कहानियां

Subscription@delhipress.in

साथ ही पढ़िए सत्यकथा हर महीने

DELHI PRESS MAGAZINES

33 Magazines | 10 languages | 2.2 Crore Readers

पुलिस हिरासत में आरोपी

रास्ते से हटा दो. अगर ऐसा नहीं कर सकते तो मुझे भूल जाओ, फिर कभी मेरे दरवाजे पर मत आना.

प्रेमिका के गुस्से को देख कर लल्लन डर गया और उस ने उस की बात मानने के लिए हामी भर दी. उस दिन के बाद उस ने संतोष चौधरी की तलाश शुरू कर दी. संतोष भी जमानत पर जेल से बाहर आ चुका था.

संतोष चौधरी से फोन पर बात कर लल्लन यादव ने पप्पू यादव की हत्या की बात की. 5 लाख रुपए में सौदा हो गया. संतोष ने पेशगी के रूप में 2 लाख रुपए मांगे. बाकी की रकम काम हो जाने के बाद देने की बात हुई.

लल्लन ने खरीदी बाइक

लल्लन ने यह बात संगीता को बता दी. संगीता ने अपने आईडीबीआई बैंक एकाउंट से 2 लाख रुपए निकाल कर लल्लन को दे दिए. लल्लन ने चालाकी करते हुए उस पैसे में से शूटर संतोष को एक लाख 25 हजार रुपए दिए और बाकी रकम अपने पास रख ली. घटना से 2 दिन पहले लल्लन ने अपने लिए नई बाइक खरीदने के लिए संगीता से एक लाख रुपए की और डिमांड की. संगीता ने उसे एक लाख रुपए और दे दिए.

सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था. संगीता और पप्पू के बीच मनभेद और मतभेद दोनों ही चल रहे थे. 26 मई, 2019 की शाम साढ़े 7 बजे पप्पू जब शहर वाले घर से अपनी बाइक से गांव चनका के लिए निकला तो संगीता ने फोन कर के लल्लन को बता दिया. लल्लन ने यह बात शूटर संतोष चौधरी को बता दी.

एसडीओपी आनंद पांडे

लल्लन की काल आने के बाद संतोष चौधरी अपने साथी निशांत यादव को साथ ले कर जगैल चौक राइस मिल के पास घात लगा कर खड़ा हो गया. संतोष 2 दिन से पप्पू पर नजर रखे हुए था.

वह उस की रेकी कर रहा था कि वह कब, कहां और कैसे जा रहा है. जब वह निश्चिंत हो गया था कि पप्पू के आनेजाने का एकमात्र रास्ता यही है तो वहीं घात लगा कर खड़ा हो गया.

जैसे ही पप्पू अपनी बाइक से जगैल चौक राइस मिल के पास पहुंचा, वहां पहले से मौजूद संतोष ने उस के पीछेपीछे अपनी बाइक लगा दी और ओवरटेक कर के उस की बाइक रोक ली. बाइक संभालते समय पप्पू फिसल कर जमीन पर जा गिरा.

इस से पहले कि वह कुछ समझ पाता, संतोष ने पिस्तौल निकाल कर उस पर तान दी. पप्पू जान बचा कर वहां से भागा तो संतोष और निशांत यादव ने उसे दौड़ा कर गोलियों से भून डाला.

पप्पू की हत्या करने के बाद संतोष चौधरी ने लल्लन को फोन कर के बता दिया था कि उस ने टारगेट पूरा कर दिया है. बाकी की रकम उसे जल्द से जल्द मिल जानी चाहिए. लल्लन ने फोन कर के यह बात संगीता को बता दी. पति की हत्या की खबर सुन कर संगीता खुश हुई.

बाद में पुलिस द्वारा फोन करने पर वह घड़ियाली आंसू बहाते हुए घटनास्थल पर पहुंची, लेकिन उस की चालाकी धरी की धरी रह गई. अंतत: वह वहां पहुंच गई, जहां उसे अपने कर्मों की सजा भोगनी है.

एसपी विशाल शर्मा

कथा लिखे जाने तक उपमुखिया संगीता गिरफ्तार की जा चुकी थी. तीनों आरोपियों लल्लन यादव, संतोष चौधरी और निशांत यादव के साथ वह भी जेल की सलाखों के पीछे पहुंच गई. पुलिस ने केस की तफ्तीश कर चारों के खिलाफ अदालत में आरोपपत्र दाखिल कर दिया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

एलेक्स का सफल प्रयास

अपनी बात कहना अलग बात है और उस बात से जुड़े विषय चाहे वह दुखद हो या सुखद महसूस कराना अलग बात है. वैसे भी ऐसी कोई बात कहना जो सामने वाले के दिलोदिमाग में न उतरे, व्यर्थ है.

यह बात बच्चों और बड़े दोनों के लिए है. अमेरिका के टेनेसी राज्य में रहने वाले 8वीं क्लास के छात्र एलेक्स जौनसन ने कुछ ऐसा किया कि राज्य के 10 विधायकों ने जिसे न केवल दिल से महसूस किया, बल्कि माना भी.

एलेक्स जौनसन टेनेसी राज्य के लेबनान (अमेरिकी शहर) में फ्रैंडशिप क्रिश्चियन स्कूल का छात्र है. जब वह 2 साल का था, तभी हड्डियों की बीमारी डिस्प्लेमेनिया का शिकार हो गया था, इस बीमारी में हड्डियों और उपास्थियों का विकास रूक जाता है. तभी से एलेक्स व्हील चेयर पर रहने को मजबूर है. एलेक्स ने महसूस किया कि उस के जैसे न जाने कितने लोगों को जिंदगी व्हीलचेयर पर गुजर रही होगी. इसी के मद्देजनर उस ने ऐसा कुछ करने का निश्चय किया जिस से सरकार उस जैसे लोगों की मदद के लिए कोई कानून बनाए.

इस के लिए उस ने 'स्पेंड ए डे इन माय व्हील्स' नाम से अपने राज्य के 10 विधायकों को चैलेंज किया, यह एक गेम की तरह था. दरअसल एलेक्स का मकसद यह था कि ये जनप्रतिनिधि यह महसूस करें कि व्हीलचेयर पर रहने वाले कैसी स्थितियों का सामना करते हैं. उन की तकलीफ क्या होती है. गनीमत यह रही कि दसों विधायकों ने एलेक्स की चुनौती स्वीकार कर ली और हाउस औफ टेनेसी में एलेक्स के साथ उस के जैसी व्हीलचेयर पर बैठ कर अपना दिन भर का काम निपटाया. इन सभी विधायकों के लिए यह अनुभव बहुत कष्टदायक रहा, एक ऐसा पाठ जिसे वह जीवनभर नहीं भूलेंगे. यह बात उन की समझ में आ गई कि व्हीलचेयर पर बैठ कर दिव्यांगों की जिंदगी कैसे गुजरती होगी और उन्हें कैसीकैसी परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा. उन के लिए यह अनुभव आंख खोल देने वाला था. उन्होंने एलेक्स से कहा कि वे कोशिश करेंगे कि विकलांगों के अनुकूल कानून बने.

एक विधायक बौयड ने कहा कि एलेक्स अद्भुत बच्चा है, उस ने अपनी विकलांगता का उपयोग दूसरों को शिक्षित करने की क्षमता के रूप में किया.

'स्पेंड ए डे इन माय व्हील्स' चुनौती को सब से पहले दर्जनभर छात्रों ने अनुभव किया था.

इस के बाद लगातार जनप्रति. निधियों से संपर्क कर इस चुनौती को स्वीकार करने के प्रयत्न किए गए, जिसे विधायकों ने मान लिया. एलेक्स का कहना है कि व्हीलचेयर पर बैठ कर फ्रीज खोलना, दरवाजे से टकराना, भोजन करना, टौयलेट जाना, घर से बाहर निकलना कष्टदायक होता है, यह तभी समझा जा सकता है जब कोई दिनभर व्हीलचेयर पर बैठे. मैं चाहता था कि जनप्रतिनिधि इसे समझें. जो भी हो एलेक्स का यह प्रयास अच्छा था, जो कामयाब रहा. ●

ऊधमसिंह नगर, उत्तराखंड

घरगृहस्थी में पतिपत्नी के झगड़े आम बात होते हैं, अगर ये झगड़े नफरत में बदल जाएं तो अंजाम बुरा ही होता है. जसवीर कौर व हरविंदर सिंह ने प्रेम विवाह किया था, लेकिन जब संबंधों में कड़वाहट पैदा हुई तो प्यार ही जहर बन गया. नतीजतन...

पति का दंश

❑ प्रकाश पुंज

मृतका जसवीर कौर (फाइल फोटो)

उत्तराखंड के जिला ऊधमसिंह नगर का एक उपनगर है जसपुर. 12 फरवरी, 2020 की शाम साढ़े 6 बजे किसी व्यक्ति ने जसपुर कोतवाली में फोन कर के बताया कि महुआ डाबरा, हरिपुर स्थित कालेज की ओर जाने वाली कच्ची सड़क किनारे गन्ने के खेत में एक महिला की लाश पड़ी है. यह जगह पौपुलर के जंगल के पास है. फोन करने वाले ने सूचना दे कर फोन काट दिया. फोन लैंडलाइन पर आया था, इसलिए फोन करने वाले को कालबैक कर के कोई जानकारी नहीं ली जा सकती थी.

खबर मिलते ही कोतवाली प्रभारी उमेद सिंह दानू पुलिस टीम के साथ घटनास्थल के लिए रवाना हो गए. जब तक पुलिस टीम मौके पर पहुंची, तब तक अंधेरा हो चुका था. इस के बावजूद पुलिस ने जीप की रोशनी और टौर्च के सहारे लाश को खोज लिया. मृतका की लाश अर्द्धनग्न स्थिति में थी.

घटनास्थल का निरीक्षण करने पर पहली बार में ही यह बात समझ में आ गई कि मृतक की हत्या कहीं और कर के लाश को उस जगह ला कर फेंका गया है. लाश के पास ही एक लेडीज हैंड पर्स भी पड़ा था, जिस में कुछ दवाइयों के अलावा मेकअप का सामान, मोबाइल फोन, कुछ कंडोम्स वगैरह थे. लाश से कुछ दूरी पर लेडीज सैंडलनुमा जूती भी पड़ी मिली.

घटनास्थल से सब चीजें और जानकारी जुटाने के बाद कोतवाल उमेद सिंह दानू ने महिला की लाश मिलने की सूचना काशीपुर के सीओ मनोज कुमार ठाकुर, एडीशनल एसपी राजेश भट्ट, एसएसपी बरिंदरजीत सिंह को दे दी. खबर पा कर उच्चाधिकारी घटनास्थल पर

आ गए. घटनास्थल पर पुलिस का जमावड़ा लगते देख आसपास के गांवों के कुछ लोग भी एकत्र हो गए थे. पुलिस ने उन से मृतका की शिनाख्त कराई तो उस की पहचान हो गई. पता चला मृतका गांव सुआवाला, जिला बिजनौर की रहने वाली जसवीर कौर उर्फ सिमरनजीत थी. उस के पति का नाम हरविंदर सिंह है.

मृतका की शिनाख्त हो जाने के बाद पुलिस अफसरों ने उस के घर वालों तक घटना की जानकारी पहुंचाने के लिए 2 सिपाहियों को भेज दिया. हरविंदर की हत्या की बात सुन कर उस के घर वाले तुरंत घटनास्थल पर पहुंच गए.

मौकाएवारदात पर पहुंचते ही मृतका के भाई राजेंद्र सिंह ने आरोप लगाया कि जसवीर कौर की हत्या उस के ससुराल वालों ने की है. उन्होंने ही लाश यहां ला कर डाली होगी. राजेंद्र ने पुलिस को बताया कि उस की बहन मामा के लड़के की शादी में आई थी, लेकिन 5 फरवरी को उस का ममेरा भाई सोनी उसे उस की ससुराल सुआवाला छोड़ आया था. उस के बाद उस की जसवीर से कोई बात नहीं हो पाई थी.

राजेंद्र ने पुलिस को बताया कि उस का बहनोई हैप्पी ड्रग्स का सेवन करता है, जिस की वजह से वह घर का कामकाज भी नहीं करता था. नशे की लत के चलते वह जसवीर को बिना किसी बात के मारतापीटता था. साथ ही वह दोनों बच्चों को भी उस से दूर रखता था. इसी कलह की वजह से जसवीर कौर ममेरे भाई की शादी में भी अकेली ही आई थी.

पुलिस पूछताछ में राजेंद्र ने पुलिस को जानकारी देते हुए बताया कि जसवीर और हरविंदर ने प्रेम विवाह किया था. लेकिन शादी के कुछ दिन बाद दोनों के बीच खटास पैदा हो गई थी. जिस की वजह से हरविंदर उसे बिना बात के प्रताड़ित करने लगा था.

25 सितंबर, 2019 को हरविंदर सिंह ने उस के साथ मारपीट की थी, जिस के बाद मामला थाने तक जा पहुंचा था. इस बारे में जसवीर ने थाना अफजलगढ़, जिला बिजनौर में मारपीट की एफआईआर दर्ज कराई थी. बाद में पुलिस ने हरविंदर सिंह को थाने बुलाया और समझाबुझा कर आपस में समझौता करा दिया था. इस के बाद वह जसवीर कौर को उस की ससुराल छोड़ आया था.

लेकिन पुलिस पूछताछ में जसविंदर कौर के ससुराल वालों का कहना था कि जब से वह अपने भाई की शादी में गई थी, घर वापस नहीं लौटी थी. उस की हत्या की सच्चाई जानने के लिए पुलिस को उस की पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार था.

मृतका के भाई राजेंद्र ने थाना कोतवाली में जसवीर के पति हरमिंदर सिंह उर्फ हैप्पी, ससुर चरणजीत सिंह, सास रानू व देवर हरजीत सिंह उर्फ भारू निवासी ग्राम बहादरपुर सुआवाला, थाना अफजलगढ़, जिला बिजनौर के विरुद्ध हत्या का मामला दर्ज करा दिया. लेकिन उन के विरुद्ध कोई सबूत न मिलने के कारण पुलिस कोई काररवाई नहीं कर सकी.

इस केस के खुलासे के लिए पुलिस ने मृतका के मोबाइल की काल डिटेल्स भी चैक कीं, जिस में 4 ऐसे लोगों के नंबर मिले, जिन पर मृतका ने काफी देर

छायांकन: मौडलिंग

तक बात की थी. लेकिन उन नंबर धारकों से पूछताछ करने पर भी पुलिस इस केस से संबंधित कोई खास जानकारी नहीं जुटा पाई.

सीसीटीवी फुटेज से मिला सुराग

छानबीन में पुलिस ने उस क्षेत्र के अलगअलग स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज देखीं. साथ ही मृतका के मोबाइल को भी सर्विलांस पर लगा दिया. लेकिन इस सब से पुलिस को कोई सफलता नहीं मिली. उसी दौरान पुलिस को ठाकुरद्वारा-भूतपुरी बस अड्डे पर लगे सीसीटीवी कैमरे से एक फुटेज मिली, जिस में 8 फरवरी, 2020 को सुबह के 11 बजे मृतका बस स्टौप पर खड़ी नजर आई.

इस से यह बात साफ हो गई कि ससुराल जाने के लिए मृतका वहां से बस में सवार हुई थी. कहा जा सकता था कि वह 8 फरवरी को अपनी ससुराल जरूर गई थी, जबकि उस के ससुराल वालों का कहना था कि अपने भाई की शादी में जाने के बाद वह घर वापस नहीं आई. ससुराल पक्ष के लोगों के बयान पुलिस के लिए छानबीन का अहम हिस्सा बनते जा रहे थे.

इस केस की जांच में जुटी पुलिस टीमें मृतका के पति हरविंदर, उस के पिता चरनजीत सिंह और एक रिश्तेदार तरनवीर सिंह निवासी सुआवाला, जिला बिजनौर को पूछताछ के लिए जसपुर कोतवाली ले आई. कोतवाली में पुलिस ने तीनों से अलगअलग पूछताछ की.

उन तीनों के बयानों में काफी विरोधाभास था. इस से ससुराल पक्ष शक के दायरे में आ गया. पुलिस ने मृतका के पति हरविंदर को एकांत में ले जा कर सख्ती से पूछताछ की तो वह पुलिस के सामने टूट गया.

उस ने अपना जुर्म कबूलते हुए बताया कि 8 फरवरी को जसवीर कौर घर आई तो किसी बात को ले कर उस से नोंकझोंक हो गई. दोनों के बीच विवाद इतना बढ़ा कि गुस्से के आवेग में उस ने चादर से उस का मुंह बंद कर उस की हत्या कर दी.

पुलिस ने मृतका के पर्स से मेकअप का कुछ सामान व कंडोम बरामद किए थे, जिन को ले कर पुलिस संशय में थी. घटनास्थल पर मृतका का शव अर्द्धनग्न हालत में मिला था, जिसे देख कर लग रहा था कि उस के साथ पहले रेप हुआ होगा, बाद में दरिंदों ने उस की हत्या कर दी होगी.

इसी वजह से पुलिस प्रथमदृष्टया इस केस को रेप से जोड़ कर देख रही थी, लेकिन जब केस का खुलासा हुआ तो पुलिस भी हैरत में रह गई. पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ऐसी कोई बात सामने नहीं आई. दरअसल, यह करतूत जसवीर कौर के ससुराल वालों की थी. उस से छुटकारा पाने के लिए उन लोगों ने इस हत्याकांड को बड़े ही शातिराना ढंग से अंजाम दिया था.

गांव मलपुरी जसपुर से कोई 6 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में स्थित है. 32 वर्षीया जसवीर कौर इसी गांव के स्व. अमरजीत सिंह की बेटी थी. 15 साल पहले जसवीर कौर की शादी हरविंदर सिंह से हुई थी. हरविंदर सिंह जसपुर से लभग 7 किलोमीटर दूर भूतपुरी रोड पर

समय के साथ जसवीर कौर 2 बच्चों की मां बन गई. लेकिन इस के बाद भी न तो उसे पति हरविंदर सिंह ने मानसम्मान दिया और न ही उस के परिवार के अन्य लोगों ने. 2 बच्चों की मां बन जाने के बाद भी जसवीर कौर को उस के बच्चों से अलग रखा जाता था.

गांव सुआवाला में रहता था.

शादी के समय हरविंदर प्राइवेट बस का ड्राइवर था. उस के पास जुतासे की भी कुछ जमीन थी. तहकीकात के दौरान पुलिस के सामने यह बात भी खुल कर सामने आई कि 15 साल पहले जसवीर कौर का हरविंदर से प्रेम प्रसंग चल रहा था, जिस के चलते दोनों ने स्वेच्छा से विवाह कर लिया था.

शादी के कुछ दिनों तक तो सब कुछ ठीकठाक चलता रहा, लेकिन फिर दोनों के बीच दूरियां बढ़ीं और गृहस्थी में खटास आनी शुरू हो गई. दोनों के बीच मनमुटाव का कारण बनी हरविंदर सिंह की मां राणो कौर. हालांकि हरविंदर सिंह ने जसविंदर के साथ अपनी मरजी से कोर्टमैरिज की थी, लेकिन उस की मां राणो कौर को जसविंदर मन नहीं भाई थी.

इसी के चलते उस ने दोनों के संबंधों में विष घोलना शुरू कर दिया था. हालांकि हरविंदर जसवीर कौर से उम्र में काफी बड़ा था, लेकिन फिर भी जसवीर कौर उसे बहुत प्यार करती थी.

समय के साथ जसवीर कौर 2 बच्चों की मां बन गई. लेकिन इस के बाद भी न तो उसे पति हरविंदर सिंह ने मानसम्मान दिया और न ही उस के परिवार के अन्य लोगों ने. 2 बच्चों की मां बन जाने के बाद भी जसवीर कौर को उस के बच्चों से अलग रखा जाता था.

हरविंदर सिंह खुद भी दोनों बच्चों के साथ अपनी मां राणो के कमरे में सोता था. इसी मनमुटाव के चलते जब दोनों के बीच विवाद ज्यादा बढ़ा तो रिश्तेदारों के सहयोग से हरविंदर सिंह को परिवार से अलग कर दिया गया.

उस के बाद उस का छोटा भाई हरजीत सिंह अपनी मां के साथ खानेपीने लगा. जबकि हरविंदर अपनी पत्नी जसवीर कौर के साथ गुजरबसर कर रहा था. लेकिन यह सब भी ज्यादा दिन तक नहीं चल सका. कुछ ही दिनों बाद हरविंदर अपनी मां के गुणगान करने लगा और जसवीर कौर की ओर से लापरवाह हो गया.

नशे का गुलाम था हरविंदर

हरविंदर राशन वगैरह जरूरी सामान भी नहीं ला कर देता था. वह खुद तो अपनी मां के साथ खाना खा लेता था, लेकिन जसवीर कौर को खाने के लाले पड़ने लगे थे. उस के पास 2 बच्चे थे, जिन की गुजरबसर करना उस के लिए मुश्किल हो गया था. ऊपर से पति आए दिन उस के साथ मारपीट करता था.

हरविंदर पहले तो केवल शराब का ही नशा करता था, लेकिन बाद में अपना कामधंधा सब छोड़ कर भांग, अफीम आदि का भी सेवन करने लगा था. जसवीर कौर जब कभी उसे समझाने वाली बात करती तो वह उसे बुरी तरह मारतापीटता था. वह उसे घर पर चैन से नहीं रहने देता था.

प्रैस कौन्फ्रैंस में हत्या का खुलासा करते एसएसपी बरिंदर गील सिंह

अगर वह किसी काम से बाहर जाती तो हरविंदर उस पर चरित्रहीनता का लांछन लगाता था. इस सब से जसवीर कौर की जिंदगी नरक बन गई थी. जसवीर कौर के पास अपना मोबाइल था. जब कभी उस के फोन पर किसी की काल आती तो वह उसे शक की निगाहों से देखता. हरविंदर सिंह उसे किसी से भी फोन पर बात नहीं करने देता था. इस सब के चलते दोनों के संबंधों में कड़वाहट भरती गई.

25 सितंबर, 2019 को हरविंदर सिंह ने जसवीर कौर के साथ मारपीट की, जिस के बाद मामला थाने तक पहुंच गया. नतीजतन जसवीर कौर ने थाना अफजलगढ़, जिला बिजनौर में मारपीट की एफआईआर दर्ज कराई. लेकिन पुलिस ने दोनों को समझाबुझा कर घर भेज दिया था.

थाने में हुए समझौते के बाद भी हरविंदर अपनी हरकतों से बाज नहीं आया. वह फिर से उसे प्रताड़ित करने लगा. 3 फरवरी, 2020 को जसवीर कौर अपने मामा के लड़के की शादी में गई थी. वहां से वह 6 फरवरी को वापस लौट आई. फिर 7 फरवरी को वह दिन में 12 बजे घर से निकल गई. उस दिन वह घर न आ कर अगले दिन लौटी. उसी रात झगड़े के बाद हरविंदर ने उस का मोबाइल छीन कर रख लिया.

इसी को ले कर दोनों के बीच विवाद इतना बढ़ा कि हरविंदर सिंह ने गुस्से के आवेग में चादर से जसवीर का मुंह दबा दिया. जिस से उस की सांस अवरुद्ध हो गई और वह बेहोश हो कर गिर गई. फिर कुछ ही पलों में उस की सांस रुक गई.

जसवीर कौर को मरा देख हरविंदर सिंह बुरी तरह घबरा गया. उस ने यह जानकारी अपने पिता चरनजीत सिंह, मां राणो कौर को दी. इस से परिवार में दहशत फैल गई.

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उस की लाश का क्या किया जाए. हरविंदर ने अपने दोस्त तरनवीर सिंह को फोन कर अपने घर बुला लिया. चारों ने मिल कर रायमशविरा कर के उस की लाश को कहीं दूर फेंकने की योजना बनाई.

हत्या के बाद घिनौना षड्यंत्र

तरनवीर अपनी बाइक बजाज पल्सर यूपी20पी 7585 ले कर आया था. चारों ने योजना बनाई कि जसवीर की लाश को ऐसी हालत में फेंका जाए ताकि लोग उसे देख कर रेप केस समझें और उस की हत्या का शक घर वालों पर न आने पाए.

इस योजना को अमलीजामा पहनाने हेतु चारों आरोपी जसवीर की लाश को पल्सर बाइक पर रख कर महुआडाबरा की ओर चल दिए. बाइक को तरनवीर चला रहा था. पीछे हरविंदर का छोटा भाई हरजीत सिंह जसवीर कौर की लाश को पकड़ कर बैठा था, जबकि दूसरी बाइक टीवीएस स्टार सिटी यूपी20क्यू 6491 को हरविंदर चला रहा था और उस के पीछे उस के पिता चरनजीत सिंह बैठे थे.

महुआडाबरा आते ही दोनों बाइक एक कच्चे रास्ते की तरफ बढ़ गईं. वहीं एक सुनसान जगह देख कर उन्होंने लाश गन्ने के खेत में फेंक दी. इस मामले को एक नया रूप देने के लिए पूर्व नियोजित योजनानुसार जसवीर के पर्स में मेकअप के सामान के साथ कंडोम के पैकेट भी रख दिए गए.

जसवीर कौर की लाश को गन्ने के खेत में डालने के बाद इन लोगों ने उस की सलवार को घुटनों तक खिसका दिया, ताकि देखने वाले यही समझें कि किसी ने उस के साथ रेप कर उस की हत्या की है.

अपनी योजना को अमलीजामा पहनाने के बाद चारों अपने गांव सुआवाला लौट आए. लाश की स्थिति देख कर पुलिस भी यही अंदाजा लगा रही थी कि किसी ने बलात्कार कर उस की हत्या कर डाली. लेकिन जब पुलिस ने इस केस की गहराई से छानबीन की तो जांच के दौरान मिले साक्ष्यों के आधार पर केस की कड़ी से कड़ी जुड़ती गई.

पुलिस ने इस मामले में मृतका जसवीर कौर के पति हरविंदर सिंह, उस के पिता चरनजीत सिंह, दोस्त तरनवीर सिंह व हरविंदर के छोटे भाई हरजीत सिंह को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया. मृतका जसवीर कौर के बच्चों 10 वर्षीय किरन व 13 वर्षीय प्रीत को उस का मामा राजू अपने साथ ले गया था. ●

फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

तमाम पतिपत्नियों की तरह कपिल और खुशबू में भी लड़ाईझगड़ा होता था. लेकिन खुशबू इस झगड़े को नाक का सवाल बना कर मायके चली गई, जहां उस के संबंध चंदन से बन गए. खुशबू को चंदन की यारी ऐसी भाई कि उस ने...

पति कपिल चंद्र : कभी सोचा भी न होगा

यार की 'खूशबू'

❑ दिनेश बैजल 'राज'

खुशबू : सुकून भरा आंगन पसंद न आया

दक्षिणपूर्वी दिल्ली के थाना शाहीनबाग के अंतर्गत नई बस्ती ओखला के रहने वाले कपिल की ससुराल उत्तर प्रदेश के जिला फिरोजाबाद के आसफाबाद में थी. करीब 3 साल पहले किसी बात को ले कर उस का अपनी पत्नी खुशबू से विवाद हो गया था. तब खुशबू अपने मायके चली गई थी और वापस नहीं लौटी थी. इतना ही नहीं, ढाई साल पहले खुशबू ने फिरोजाबाद न्यायालय में कपिल के खिलाफ घरेलू हिंसा व गुजारा भत्ते का मुकदमा दायर कर दिया था.

कपिल हर तारीख पर फिरोजाबाद कोर्ट जाता था और तारीख निपटा कर देर रात दिल्ली लौट आता था. 10 फरवरी, 2020 को भी वह इसी मुकदमे की तारीख के लिए दिल्ली से फिरोजाबाद आया था. वह रात को घर नहीं पहुंचा तो घर वालों ने उसे 11 फरवरी की सुबह फोन किया. लेकिन उस का फोन बंद मिला. इस से घर वाले परेशान हो गए. उन्होंने 11 फरवरी की शाम तक कपिल का इंतजार किया. इस के बाद उन की चिंता और भी बढ़ गई.

12 फरवरी को कपिल की मां ब्रह्मवती, बहन राखी, मामा नेमचंद और मौसी सुंदरी फिरोजाबाद के लिए निकल गए. कपिल की ससुराल वाला इलाका थाना रसूलपुर क्षेत्र में आता है, इसलिए वे सभी थाना रसूलपुर पहुंचे और कपिल के रहस्यमय तरीके से गायब होने की बात बताई.

थाना रसूलपुर से उन्हें यह कह कर थाना मटसैना भेज दिया गया कि कपिल कोर्ट की तारीख पर आया था और कोर्ट परिसर उन के थानाक्षेत्र में नहीं बल्कि थाना मटसैना में पड़ता है. इसलिए वे सभी लोग उसी दिन थाना मटसैना पहुंचे, लेकिन वहां भी उन की बात गंभीरता से नहीं सुनी गई. ज्यादा जिद करने पर मटसैना पुलिस ने कपिल की गुमशुदगी दर्ज कर ली. गुमशुदगी दर्ज कर के उन्हें थाने से टरका दिया. इस के बाद भी वे लोग कपिल की फिरोजाबाद में ही तलाश करते रहे.

इसी बीच 15 फरवरी की दोपहर को किसी ने थाना रामगढ़ के बाईपास पर स्थित हिना धर्मकांटा के नजदीक नाले में एक युवक की लाश पड़ी देखी. इस खबर से वहां सनसनी फैल गई. कुछ ही देर में भीड़ एकत्र हो गई. इसी दौरान किसी ने इस की सूचना रामगढ़ थाने में दे दी.

कुछ ही देर में थानाप्रभारी श्याम सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंच गए. उन्होंने शव को नाले से बाहर निकलवाया. मृतक के कानों में मोबाइल का ईयरफोन लगा था.

पुलिस ने युवक की शिनाख्त कराने की कोशिश की, लेकिन वहां मौजूद लोगों में से कोई भी उसे नहीं पहचान सका. पुलिस ने उस अज्ञात युवक की लाश पोस्टमार्टम के लिए जिला चिकित्सालय फिरोजाबाद भेज दी.

कपिल की मां ब्रह्मवती और बहन राखी उस समय फिरोजाबाद में ही थीं. शाम के समय जब उन्हें बाईपास स्थित नाले में पुलिस द्वारा किसी अज्ञात युवक की लाश बरामद किए जाने की जानकारी मिली तो मांबेटी

छायाकन: मौडलित

थाना रामगढ़ पहुंच गईं. उन्होंने थानाप्रभारी श्याम सिंह से अज्ञात युवक की लाश के बारे में पूछा तो थानाप्रभारी ने उन्हें फोन में खींचे गए फोटो दिखाए.

फोटो देखते ही वे दोनों रो पड़ीं, क्योंकि लाश कपिल की ही थी. इस के बाद थानाप्रभारी ब्रह्मवती और उस की बेटी राखी को जिला अस्पताल की मोर्चरी ले गए. उन्होंने वह लाश दिखाई तो दोनों ने उस की शिनाख्त कपिल के रूप में कर दी. लाश की शिनाख्त हो जाने के बाद थानाप्रभारी ने भी राहत की सांस ली.

थानाप्रभारी ने शव की शिनाख्त होने की जानकारी एसपी (सिटी) प्रबल प्रताप सिंह को दे दी और उन के निर्देश पर आगे की काररवाई शुरू कर दी. थानाप्रभारी श्याम सिंह ने मृतक कपिल की मां ब्रह्मवती और बहन राखी से बात की तो उन्होंने बताया कि कपिल की पत्नी खुशबू चरित्रहीन थी.

इसी बात पर कपिल और खुशबू के बीच अकसर झगड़ा होता था, जिस के बाद खुशबू मायके में आ कर रहने लगी थी. राखी ने आरोप लगाया कि खुशबू ने ही अपने परिवार के लोगों से मिल कर उस के भाई की हत्या की है.

पुलिस ने राखी की तरफ से मृतक की पत्नी खुशबू, सास बिट्टनश्री, साले सुनील, ब्रजेश, साली रिंकी और सुनील की पत्नी ममता के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी.

चूंकि रिपोर्ट नामजद थी, इसलिए पुलिस आरोपियों की तलाश में जुट गई. पुलिस ने मृतक की पत्नी खुशबू व उस की मां को हिरासत में ले लिया. उन से कड़ाई से पूछताछ की गई. खुशबू से की गई पूछताछ में पुलिस को कोई खास जानकारी हाथ नहीं लगी, बस यही पता चला कि कपिल पत्नी के चरित्र पर शक करता था.

फिर भी पुलिस यह समझ गई थी कि एक अकेली औरत कपिल का न तो मर्डर कर सकती है और न ही शव घर से दूर ले जा कर नाले में फेंक सकती है. पुलिस चाहती थी कि कत्ल की इस वारदात का पूरा सच सामने आए.

इस बीच जांच के दौरान पुलिस को एक

कपिलचंद्र की मां ब्रह्मवती और बहन राखी

अहम सुराग हाथ लगा. किसी ने थानाप्रभारी को बताया कि खुशबू चोरीछिपे अपने प्रेमी चंदन से मिलती थी. दोनों के नाजायज संबंधों का जो शक किया जा रहा था, उस की पुष्टि हो गई.

जाहिर था कि हत्या अगर खुशबू ने की थी तो कोई न कोई उस का संगीसाथी जरूर रहा होगा. इस बीच पुलिस की बढ़ती गतिविधियों और खुशबू को हिरासत में लिए जाने की भनक मिलते ही खुशबू का प्रेमी चंदन और उस का साथी प्रमोद फरार हो गए.

इस से उन दोनों पर पुलिस को शक हो गया. उन की सुरागरसी के लिए पुलिस ने मुखबिरों का जाल फैला दिया. मुखबिर की सूचना पर घटना के तीसरे दिन पुलिस ने खुशबू के प्रेमी चंदन व उस के साथी प्रमोद को कनैटा चौराहे के पास से हिरासत में ले लिया. दोनों वहां फरार होने के लिए किसी वाहन का इंतजार कर रहे थे.

थाने ला कर दोनों से पूछताछ की गई. थाने में जब चंदन और प्रमोद से खुशबू का आमनासामना कराया गया तो तीनों सकपका गए. इस के बाद उन्होंने आसानी से अपना जुर्म कबूल कर लिया.

अपराध स्वीकार करने के बाद पुलिस ने खुशबू, उस के प्रेमी चंदन उर्फ जयकिशोर निवासी मौढ़ा, थाना रसूलपुर, उस के दोस्त प्रमोद राठौर निवासी राठौर नगर, आसफाबाद को कपिल की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.

उन की निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त रस्सी, मोटा सरिया व मोटरसाइकिल बरामद कर ली. खुशबू ने अपने प्यार की राह में रोड़ा बने पति कपिल को हटाने के लिए प्रेमी व उस के दोस्त के साथ मिल कर हत्या का षडयंत्र रचा था. खुशबू ने पति की हत्या की जो कहानी बताई, वह इस तरह थी—

दक्षिणपूर्वी दिल्ली की नई बस्ती ओखला के रहने वाले कपिलचंद्र की शादी सन 2015 में खुशबू के साथ हुई थी. शादी के डेढ़ साल तक सब कुछ ठीकठाक रहा. कपिल की गृहस्थी

वह सरिया जिस से कपिल की हत्या की गई थी

गिरफ्तार हत्यारोपी प्रमोद, चंदन और खुशबू

हंसीखुशी से चल रही थी. करीब 3 साल पहले जैसे उस के परिवार को नजर लग गई. हुआ यह कि खुशबू अकसर मायके चली जाती थी. इस से कपिल को उस के चरित्र पर शक होने लगा. इस के बाद पतिपत्नी में तकरार शुरू हो गई.

पतिपत्नी में आए दिन झगड़े होने लगे. गुस्से में कपिल खुशबू की पिटाई भी कर देता था. गृहक्लेश के चलते खुशबू अपने बेटे को ले कर अपने मायके में आ कर रहने लगी. ढाई साल पहले उस ने कपिल पर घरेलू हिंसा व गुजारा भत्ते के लिए फिरोजाबाद न्यायालय में मुकदमा दायर कर दिया.

मायके में रहने के दौरान खुशबू के अपने पड़ोसी चंदन से प्रेम संबंध हो गए थे. हालांकि चंदन शादीशुदा था और उस की 6 महीने की बेटी भी थी. कहते हैं प्यार अंधा होता है. दोनों एकदूसरे को दिलोजान से चाहने लगे थे. मायके में रहने के दौरान चंदन खुशबू के पति की कमी पूरी कर देता था. लेकिन ऐसा कब तक चलता.

एक दिन खुशबू ने चंदन से कहा, ''चंदन, हम लोग ऐसे चोरीछिपे आखिर कब तक मिलते रहेंगे. तुम मुझ से शादी कर लो. मैं अपने पति से पीछा भी छुड़ाना चाहती हूं. लेकिन वह मुझे तलाक नहीं दे रहा. अगर तुम रास्ते के इस कांटे को हटा दोगे तो हमारा रास्ता साफ हो जाएगा.''

दोनों एकदूसरे के साथ रहना चाहते थे. चंदन को खुशबू की सलाह अच्छी लगी. इस के बाद खुशबू व उस के प्रेमी चंदन ने मिल कर एक षडयंत्र रचा. मुकदमे की तारीख पर खुशबू और कपिल की बातचीत हो जाती थी.

खुशबू ने चंदन को बता दिया था कि कपिल हर महीने मुकदमे की तारीख पर फिरोजाबाद कोर्ट में आता है. 10 फरवरी को अगली तारीख है, वह उस दिन तारीख पर जरूर आएगा. तभी उस का काम तमाम कर देंगे.

कपिल 10 फरवरी को कोर्ट में अपनी तारीख के लिए आया. कोर्ट में खुशबू व कपिल के बीच बातचीत हो जाती थी. कोर्ट में तारीख हो जाने के बाद खुशबू ने उसे बताया, ''अपने बेटे जिगर की तबीयत ठीक नहीं है. वह तुम्हें बहुत याद करता है. उस से एक बार मिल लो.''

अपने कलेजे के टुकड़े की बीमारी की बात सुन कर कपिल परेशान हो गया और

मायके में रहने के दौरान खुशबू के अपने पड़ोसी चंदन से प्रेम संबंध हो गए थे. हालांकि चंदन शादीशुदा था और उस की 6 महीने की बेटी भी थी. कहते हैं प्यार अंधा होता है. दोनों एकदूसरे को दिलोजान से चाहने लगे थे. मायके में रहने के दौरान चंदन खुशबू के पति की कमी पूरी कर देता था. लेकिन ऐसा कब तक चलता.

तारीख के बाद खुशबू के साथ अपनी ससुराल पहुंचा.

कपिल शराब पीने का शौकीन था. खुशबू के प्रेमी व उस के दोस्त ने कपिल को शराब पार्टी पर आमंत्रित किया. शाम को ज्यादा शराब पीने से कपिल नशे में चूर हो कर गिर पड़ा.

कपिल के गिरते ही खुशबू ने उस के हाथ पकड़े और प्रेमी चंदन व उस के साथी प्रमोद ने साथ लाई रस्सी से कपिल के हाथ बांधने के बाद उस के सिर पर मोटे सरिया से प्रहार कर उस की हत्या कर दी.

कपिल की हत्या इतनी सावधानी से की गई थी कि पड़ोसियों को भी भनक नहीं लगी. हत्या के बाद उसी रात उस के शव को मोटरसाइकिल से ले जा कर बाईपास के

एसपी (सिटी) प्रबल प्रताप सिंह

किनारे स्थित नाले में डाल दिया गया. 15 फरवरी को शव से दुर्गंध आने पर लोगों का ध्यान उधर गया.

एसपी (सिटी) प्रबल प्रताप सिंह ने बताया कि कपिल की हत्या के मुकदमे में नामजद आरोपियों की भूमिका की जांच की जा रही है. जो लोग निर्दोष पाए जाएंगे, उन्हें छोड़ दिया जाएगा.

पुलिस ने तीनों हत्यारोपियों को गिरफ्तार करने के बाद न्यायालय में पेश किया, जहां से तीनों को जेल भेज दिया गया. निजी रिश्तों में आई खटास के चलते खुशबू ने अपनी मांग का सिंदूर उजाड़ने के साथ पतिपत्नी के पवित्र रिश्ते को कलंकित कर दिया. वहीं कांच की चूड़ियों से रिश्तों को जोड़ने के लिए मशहूर सुहागनगरी फिरोजाबाद को रिश्तों के खून से लाल कर दिया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

प्रतीक्षा का अपना बिंब

❑ नितिन कुमार शर्मा

पति, बच्चे और अच्छी गृहस्थी होने के बावजूद अगर कोई औरत सामाजिक मर्यादाओं को लांघ जाए तो बरबादी निश्चित होती है. प्रतीक्षा ने यही गलती की और...

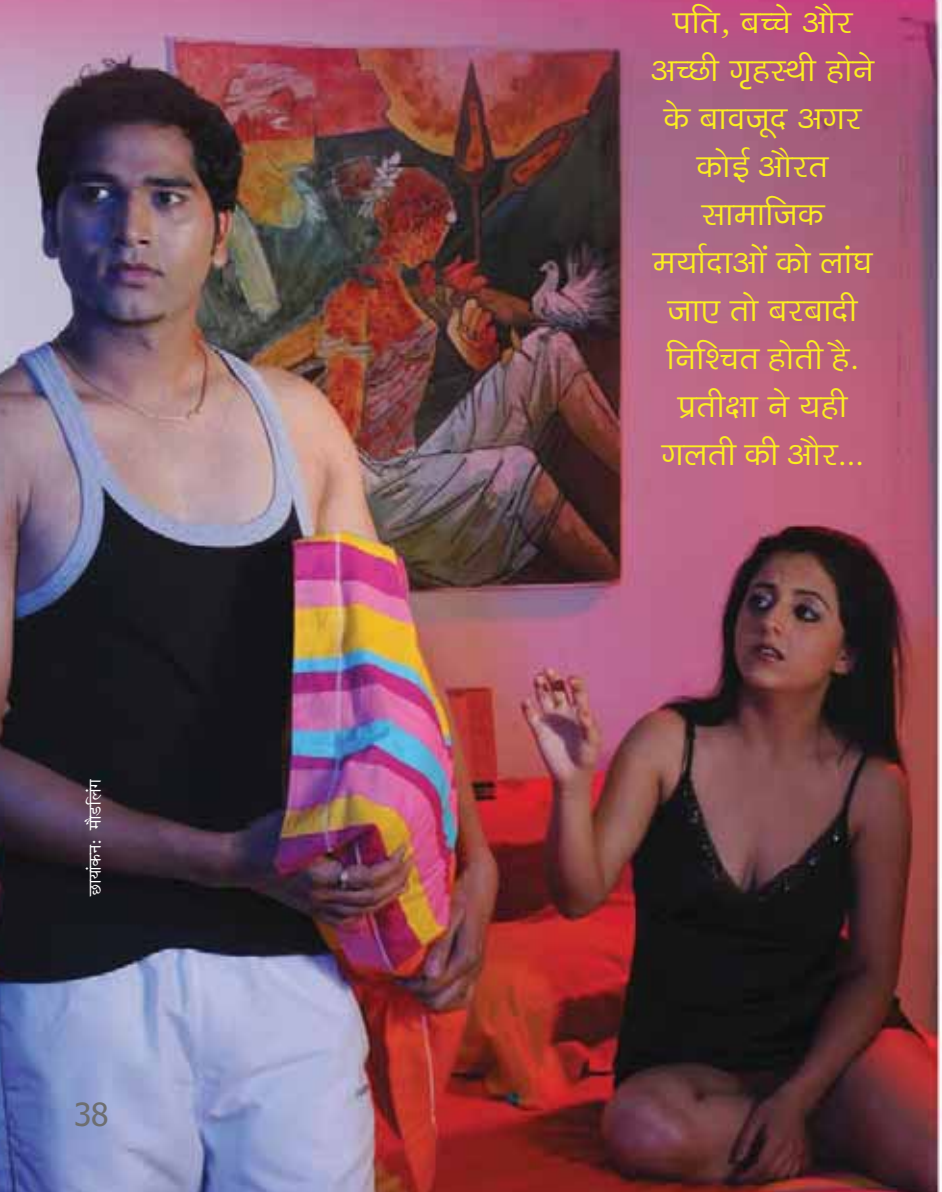

छायाकन: मॉडलिंग

यशवंत की जगह कोई दूसरा होता तो सुहागरात को ही प्रतिक्षा की कामेच्छाओं के वेग को समझ जाता, लेकिन यशवंत को इस बात का अहसास तक नहीं हुआ. पत्नी की खूबसूरती ने उसे कुछ भी सोचनेसमझने का मौका नहीं दिया, दिमाग कुंद हो गया था उस का.

सुहागरात को यशवंत कमरे में पहुंचा तो प्रतीक्षा पलंग पर लेटी थी. उस की आहट पाते ही उस ने सिर उठा कर दरवाजे की ओर देखा. पति को आया देख वह उठ कर बैठ गई और साड़ी के पल्लू को घूंघट बना कर मुंह ढक लिया.

मिलन की उमंगों से भरा यशवंत अपनी दुलहन प्रतीक्षा के पास जा बैठा. उसे उन शादीशुदा दोस्तों की बातें याद आ रही थी, जिन्होंने उसे सुहागरात को बीवी का तनमन जीतने का हुनर सिखाया था. उसे दोस्तों की पहली टिप्स याद आई. जब तुम दुलहन का घूंघट उठाओगे, तब उस के गाल शर्म से गुलाबी हो जाएंगे. उस के होठों पर मुसकान तो रहेगी, मगर लाज से नजरें झुक जाएंगी. हालांकि सुहागरात का यह दूसरा अनुभव था यशवंत का, फिर भी वह प्रतीक्षा के सामने पहली बार बने दूल्हे की तरह व्यवहार कर रहा था.

यशवंत ने उंगलियों से साड़ी का किनारा पकड़ा और अपनी दुलहन का घूंघट उलट दिया. चेहरे की दमक तो सामने आ गई, लेकिन न तो लाज से दुलहन की नजरें झुकीं और न होठों पर सौम्य मुसकान आई. कुछ देर तक वह यशवंत की आंखों में देखती रही, फिर खिलखिला कर हंसने लगी. हतप्रभ यशवंत प्रतीक्षा का मुंह ताकता रह गया.

पति के भावों को समझने की कोशिश करते हुए प्रतीक्षा शोखी से बोली, ''ऐ ऐसे क्यों देख रहे हो, मैं पागल नहीं हूं.''

''तुम हंस क्यों रही हो ?'' कुछ नहीं सूझा तो हैरानपरेशान यशवंत ने सवाल किया, ''दूल्हा घूंघट उठाए तो इस तरह नहीं हंसना चाहिए.''

''यह क्या बात हुई'' प्रतीक्षा की हंसी घट कर मुसकान में तबदील हो गई. ''सुहागरात को दुलहन पति के लिए निर्वस्त्र हो सकती है, मगर हंस नहीं सकती. मैं हंस दी तो कौन सा पाप हो गया ?''

''पाप तो नहीं हुआ,' यशवंत ने धीमे से मुंह खोला, ''लेकिन दुलहनें इस तरह नहीं हंसा करतीं.''

''मैं पुराने जमाने की नहीं, इक्कीसवी सदी की दुलहन हूं'' प्रतीक्षा का लहजा बेबाक था, ''मैं जानती हूं कि तुम मेरे पास क्यों आए हो. मैं जानती हूं कि तुम मेरे साथ क्याक्या करने वाले हो. मेरे मातापिता जानते हैं कि आज की रात दूल्हादुलहन कैसे खेलेंगे. तुम्हारे घर वालों ने तुम्हें मेरे पास खेलने के लिए ही भेजा है. सब जानते हैं कि आज क्या होगा, फिर मैं क्यों लाज का आडंबर करूं.''

यशवंत हैरत से प्रतीक्षा का मुंह देखता रह गया. प्रतीक्षा अपनी रौ में बोली, ''मैं जिंदगी के हर पल को शिद्दत से जीना चाहती हूं. आज रात हमारी देहों का मिलन होना है. लाज संकोच के बजाय अगर सबकुछ हंसीखुशी हो तो उस का आनंद ही निराला होगा.'' वह यशवंत की आंखों में देखते हुए मुसकराई. ''होगा न?''

यशवंत प्रतीक्षा के तर्कों से प्रभावित हुआ. सोचा, नए जमाने की लड़कियां शर्म की गुड़ियां थोड़े ही बनेंगी. पुराने जमाने की बात अलग थी, जब लड़कियां स्त्रीपुरूष के अंतरंग संबंध से अंजान होती थीं. शादी के पहले भावी दुलहनों को रिश्ते की भाभियां समझाती थीं कि सुहागरात को दूल्हादुल्हन के बीच क्या होता है. अब तो फिल्मों, केबल और इंटरनेट सब कुछ सिखा देते हैं. लड़केलड़कियों को होश संभालते ही इस सब की समझ आने लगती है. यही सब सोच कर यशवंत के होठों पर मुसकान आ गई. ''तुम सही कहती हो प्रतीक्षा, एक घंटे बाद हमें बेशर्म होना है तो क्यों न पहले ही शर्म का लबादा उतार कर खूंटी पर टांग दें. मिलन का आनंद दूना हो जाएगा.''

''तो फिर दूर क्यों हो, करीब आओ.'' प्रतीक्षा ने मुसकरा कर बांहे फैला दी. यशवंत सारी बातें भूल कर प्रतीक्षा की बांहों में समा गया. 40 वर्षीय प्रतीक्षा फतेहपुर जनपद के दुर्गा कालोनी, हरिहरगंज की रहने वाली थी. उस की मां का नाम कमला और पिता का नाम चंद्रभान था. चंद्रभान विकास भवन में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी थे. प्रतीक्षा के अलावा उन की कोई संतान नहीं थी.

प्रतीक्षा मांबाप की एकलौती संतान थी. इसलिए न तो उस के कहीं घूमने पर पाबंदी थी, और न ही उसे किसी चीज के लिए तरसना पड़ता था. फरमाइश करते ही मनचाही चीज हाजिर हो जाती थी. संभवत: परिवार में मिली आजादी का ही नतीजा था कि प्रतीक्षा जीवन के हर पल को खुल कर और मस्ती से जीने की आदी हो गई थी.

मांबाप भी प्रतीक्षा के खुल कर मस्ती से जीने के अंदाज को जानते थे. इसलिए जब वह जवान हुई तब उन्हें डर सताने लगा कि कहीं प्रतीक्षा जवानी को भी खुल कर एंजौय न करने लगे. यह अलग बात थी कि प्रतीक्षा ने न किसी से प्रेमिल संबंध बनाया, न किसी को अपने यौवन का अनमोल तोहफा दिया. उस ने अपना कौमार्य पति की अमानत समझ कर सहेजे रखा. हां, उस की यह तमन्ना जरूर थी कि शादी के बाद का जीवन वह खुल कर मस्ती से जीएगी और इस की शुरुआत वह सुहागरात से ही कर देगी.

क्रांतिकारी विचारधारा की पुत्री को मातापिता अधिक दिनों तक घर में बैठाए रखने के पक्ष में नहीं थे. जवानी का क्या भरोसा, कब बहक जाए. लेकिन सोचने भर से सब काम नहीं हो जाते. प्रतीक्षा के लिए कई रिश्ते देखे गए लेकिन बात नहीं बनी. शायद समय और किस्मत को कुछ और ही मंजूर था.

बीतते समय के साथ प्रतीक्षा की उम्र बढ़ती जा रही थी, लेकिन कहीं भी उस का रिश्ता नहीं हो पा रहा था. ऐसे में उस के मांबाप को चिंता सताने लगी. जवान बेटी को अधिक दिनों तक घर में नहीं बैठाया जा सकता, लोग तरहतरह की बातें बनाने लगते हैं.

फतेहपुर के थाना हुसैनगंज क्षेत्र के गांव चांदपुर में भवानी शंकर सिंह रहते थे. वह एक स्कूल में अध्यापक थे. इस के साथ ही खेतीबाड़ी का काम भी करते थे. परिवार में पत्नी शिवरानी देवी और 3 बेटे थे. कालिका, रवींद्र और यशवंत. बेटे जवान हो गए तो उन्होंने अपनी जमीनजायदाद का बराबरबराबर बंटवारा कर दिया. बड़े बेटे कालिका का विवाह करने के बाद 1994 में भवानी शंकर दुनिया से चल बसे. रवींद्र शिक्षा पूरी करने के

प्रतीक्षा : बहकी भी तो उम्र के दूसरे पड़ाव पर

मृतक यशवंत सिंह पत्नी को समझा नहीं सका.

बाद सरकारी स्कूल में अध्यापक हो गया. सन 2000 में विवाह के बाद वह फतेहपुर शहर में शिफ्ट हो गया था.

सब से छोटा यशवंत सरल स्वभाव का था. बीएससी करने के बाद वह गांव में ही खेती करने लगा. 2003 में उस का विवाह फतेहपुर के मलौली थाना क्षेत्र की कुर्रा कनक गांव निवासी गुड्डन से हुआ. गुड्डन ने 2 बेटों को जन्म दिया लेकिन दूसरे बच्चे की डिलीवरी के समय उस की मृत्यु हो गई. गुड्डन की मौत के बाद दोनों बच्चों को उन की नानी अपने साथ ले गई.

2013 में चंद्रभान अपनी बेटी प्रतीक्षा का रिश्ता ले कर आए तो यशवंत के घर वाले मना नहीं कर पाए क्योंकि यशवंत के सामने लंबी जिंदगी पड़ी थी. बिना हमसफर के जिंदगी काटना मुश्किल था.

शादी तय हो जाने के बाद दोनों का विवाह हो गया. प्रतीक्षा सुर्ख जोड़े में मायके से ससुराल आ गई. ससुराल में दूल्हादुलहन के मिलन की पहली रात थी, अरमानों की रात सुहागरात. सुहागशैया पर यशवंत के घूंघट उठाते ही जिस तरह प्रतीक्षा खुलेपन से पेश आई, उस से यशवंत स्तब्ध रह गया. यह अलग बात है कि प्रतीक्षा ने उसे गलत सोचने नहीं दिया. उस ने यशवंत को विश्वास दिला दिया कि वह इक्कीसवीं सदी की औरत है, बिंदास जिंदगी के हर पल का आनंद ले कर शिद्दत से जीने वाली.

नई और पुरानी का फर्क

यशवंत को भी अलग अनुभव हुआ. पहली पत्नी गुड्डन पुराने ढर्रे पर चलने वाली ठेठ परिवारिक युवती थी. उस के साथ यशवंत ने वहीं अनुभव किया था जो वह सोच रहा था. लेकिन प्रतीक्षा के साथ उसे एक अलग ही अनुभव मिला.

जो युवती पहली रात को खुल कर खेल सकती थी, वह आगामी रातों में क्या गजब करेगी कहना मुश्किल था. यही सोच कर सशवंत के मन में संदेह का कीड़ा कुलबुलाने लगा. वह सोचने लगा कि प्रतीक्षा शायद ऐसा अनुभव मायके से ले कर आई है. यशवंत ने उसे कटघरे में खड़ा भी किया, मगर उस का

आरोपी संग्राम सिंह

जवाब था कि वह जीवन के हर पल को आनंद से जीने की आदी है. खुलापन उस के जीने का अंदाज है, चरित्रहीनता का प्रमाण नहीं.

यशवंत उस समय तो चुप रहा, पर प्रतीक्षा की तरफ से उस का मन साफ नहीं हुआ. यशवंत ने किसी तरह प्रतीक्षा के मायके से जानकारी जुटाई तो उस पर उंगली उठाने लायक कोई बात पता नहीं चली. इस से यशवंत ने मान लिया कि प्रतीक्षा तबियत से शौकीन जरूर है, पर उस का चरित्र बेदाग है.

यह प्रतीक्षा का शौक ही था कि वह एक रात भी न तो यशवंत से अलग रहती थी और न उसे अलग सोने देती थी. फलस्वरूप प्रतीक्षा ने 5 वर्ष पूर्व एक पुत्र को जन्म दिया, जिस का नाम यतेंद्र रखा गया. उस के कुछ बड़ा होने पर दोनों ने उसे अच्छे स्कूल में पढ़ाने के लिए उस के नाना के घर भेज दिया.

यशवंत की यह दूसरी शादी थी, उस की उम्र भी 40 के पार हो गई थी. अब उस में इतना दमखम नहीं रह गया था कि हर रोज प्रतीक्षा के बिस्तर का साथी बन कर रास रचाए. दूसरी ओर प्रतीक्षा को काफी देर से पुरूष सुख मिलना शुरू हुआ था, बढ़ती उम्र के साथ उस की कामेच्छाएं भी बढ़ गई थीं.

रात को यशवंत जब उस के पास नहीं आता तो वह झुंझला जाती. इस बात को ले कर दोनों में काफी बहस भी होती. प्रतीक्षा जिस तरह सुहागरात में यशवंत पर हावी हुई थी, उसी तरह समय के साथसाथ उस की जिंदगी पर भी हावी होती चली गई. उस के गलत व्यवहार के कारण ही यशवंत के भाई और परिवार उन दोनों से दूर हो गए थे. वे लोग उन से किसी तरह का संबंध नहीं रखते थे. यशवंत कभीकभी चोरीछिपे अपने भाइयों से बात कर लेता था.

दूसरी ओर प्रतीक्षा ने शादी से पहले तक अपने यौवन को किसी के हवाले नहीं किया था, अब वह पति की बेरुखी के चलते अपने यौवन के खजाने को दूसरों पर लुटाने को अमादा थी. यशवंत के ठंडेपन के चलते वह अपनी मर्यादा की सीमा को भी लांघने को तैयार थी. लेकिन इस के लिए उसे उपयुक्त साथी की जरूरत थी.

नवंबर 2018 में यशवंत के बड़े भाई कालिका की मृत्यु हो गई. उस की तेरहवीं में खाना बनाने के लिए एक व्यक्ति से बात की गई. पेसा वगैरह तय हो जाने के बाद उसे खाना बनाने का काम दे दिया गया. खाना बनाने के लिए आए कारीगरों में 30 वर्षीय संग्राम सिंह भी था. संग्राम सिंह फतेहपुर के थाना मलवां के गांव नसीरपुर बेलवारा निवासी कुंवर बहादुर सिंह का बेटा था. जो अविवाहित था.

खाना बनाने के दौरान संग्राम प्रतीक्षा के संपर्क में आया. प्रतीक्षा ने कुंवारे खूबसूरत जवान संग्राम को देखा तो वह उसे मन भा गया. कभी कोई सामान देने तो कभी खाना कैसे बनाना है, को ले कर प्रतीक्षा उसे अपने पास बुलाती और रिझाने की कोशिश करती.

प्रतीक्षा की चालढाल और उस की हरकतों से संग्राम को भी समझते देर नहीं लगी कि वह उस पर डोरे डाल रही है. संग्राम खुद से 10 साल बड़ी प्रतीक्षा की खूबसूरती पर फिदा हो गया. जब शिकार खुद शिकार होने को तैयार था तो शिकारी क्यों चिंता करता.

दोनों में हंसीमजाक, चुहलबाजियां हुई लेकिन लोगों की नजरों से बच कर. संग्राम जब अपना काम निपटा कर जाने लगा तो प्रतीक्षा की नजरों में बेचैनी झलकने लगी, जिसे संग्राम ने अच्छी तरह समझ लिया था. वह प्रतीक्षा से बोला, ''अब हमारी इतनी जानपहचान तो हो ही गई है कि आगे भी मिलते रहें.''

संग्राम खेलने के लिए कूदा प्रतीक्षा की पिच पर

प्रतीक्षा ने मुसकरा कर संग्राम को हरी

झंडी दे दी. यशवंत के गांव चांदपुर से संग्राम के गांव की दूरी महज 8 किलोमीटर थी. उस दिन के बाद से संग्राम अपनी बाइक से प्रतीक्षा से मिलने आने लगा.

जब वह आता तो यशवंत खेतों पर होता. घर में प्रतीक्षा अकेली रहती थी. बारबार मिलते रहने से उन के बीच की झिझक खत्म होती गई. झिझक खत्म होते ही दोनों एकदूसरे से बेशर्मी से पेश आने लगे. उन के बीच अश्लील मजाक भी होने लगे.

एक दिन ऐसे ही अश्लील मजाक के दौरान संग्राम ने प्रतीक्षा को दबोच लिया. घबराने का नाटक करते हुए बोली, ''यह क्या कर रहे हो संग्राम?''

जबकि मन ही मन वह संग्राम की इस हरकत से खुश थी. संग्राम ने उस के नाटक को भांप लिया था, क्योंकि वह यह सब दिखावे के लिए कर रही थी. संग्राम ने प्रतीक्षा को और ज्यादा कसके दबोचते हुए कहा, ''मैं तो वही कर रहा हूं, जो तुम चाहती हो.''

''मैं ऐसा चाहती हूं, यह मैं ने तुम से कहा?''

''हर बात जुबां से ही नहीं कही जाती, आंखों भी बहुत कुछ बता देती हैं. मुझे तुम्हारी खूबसूरत आंखों ने बता दिया कि तुम्हें मेरे प्यार की बेहद जरूरत है.''

''अच्छा जी, मेरी आंखों ने तुम्हें सब कुछ बता दिया. जब बता ही दिया तो मेरी देह की किताब के पन्ने भी खोल कर पढ़ लो.''

प्रतीक्षा बेचैन हो कर संग्राम के बदन से लिपट गई. इस के बाद संग्राम ने उस की देह की किताब का एकएक पन्ना खोल कर ऐसा पढ़ा कि प्रतीक्षा उस की दीवानी हो गई. उस दिन के बाद तो यह सिलसिला ही बन गया.

29 जनवरी, 2020 की सुबह साढ़े 9 बजे प्रतीक्षा घर से निकल कर चीखनेचिल्लाने लगी. उस की चीखपुकार सुन कर गांव के लोग घर के सामने इकट्ठा हो गए. प्रतीक्षा ने बताया कि कुछ बदमाशों ने घर में घुस कर उस के पति यशवंत की हत्या कर दी है. लगभग 10 बजे प्रतीक्षा ने 112 नंबर पर काल कर के पुलिस को घटना की सूचना दी. चूंकि घटनास्थल थाना हुसैनगंज क्षेत्र में आता था, सो कंट्रोल रूप से इस घटना की सूचना हुसैनगंज थाने को दे दी गई.

सूचना पा कर इंसपेक्टर निशिकांत राय पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए. मृतक यशवंत के शरीर, सिर व गले पर किसी तेज धारदार हथियार के निशान थे. प्रतीक्षा से पूछताछ की गई तो उस ने कुछ लोगों द्वारा घर में घुस कर यशवंत को मारने की बात बताई.

प्रतीक्षा की बातें इंसपेक्टर राय के गले से नहीं उतर रही थीं. एक तो सुबह कोई घर में नहीं घुस सकता था. ऐसा होता तो हत्यारों के आते जाते या शोर मचने पर पड़ोसियों को पता चल जाता.

दूसरे बदमाशों ने यशवंत की तो हत्या कर दी थी, लेकिन प्रतीक्षा को छोड़ दिया, उसे एक खरोंच तक नहीं आई थी. इस से

इंसपेक्टर निशिकांत राय

इंसपेक्टर निशिकांत राय का शक प्रतीक्षा पर ही गया. फिलहाल उन्होंने यशवंत की लाश को पोस्टमार्टम के लिए मौर्चरी भेज दिया.

मौके पर आए यशवंत के भाई रविंद्र और पड़ोसियों से पूछताछ के बाद इंसपेक्टर राय का शक प्रतीक्षा पर और गहरा हो गया.

रविंद्र ने अपनी लिखित तहरीर में प्रतीक्षा और उस के प्रेमी संग्राम सिंह पर हत्या का शक जताया था. रविंद्र की तहरीर मिलने के बाद इंसपेक्टर निशिकांत राय ने थाने में प्रतीक्षा और संग्राम सिंह के विरूद्ध भादवि की धारा 302 के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया.

गिरफ्तार हुई प्रतीक्षा

31 जनवरी को इंसपेक्टर राय ने प्रतीक्षा को घर से गिरफ्तार कर लिया. महिला कांस्टेबल की उपस्थिति में जब उस से कड़ाई से पूछताछ की गई तो उस ने यशवंत की हत्या का जुर्म स्वीकार कर लिया. इस हत्या में उस का साथ उस के प्रेमी संग्राम सिंह ने दिया था.

प्रतीक्षा ने बताया कि जब उस के संग्राम से नाजायज संबंध बने, तो फिर बेरोकटोक जारी रहे. लेकिन ऐसा कब तक चलता. लोगों की नजरों में उन के नाजायज संबंध छिपे नहीं रह सके. गांव में तरहतरह की बातें होने लगीं. यशवंत के कानों तक भी प्रतीक्षा की बेवफाई के किस्से पहुंच गए.

इस के बाद उस के और प्रतीक्षा के बीच काफी तीखी बहस होने लगी. लेकिन उस बहस का कोई नतीजा नहीं निकला, क्योंकि प्रतीक्षा पर उस का कोई असर नहीं हुआ था. यशवंत को उस के अवैध रिश्ते के बारे में पता चलने के बाद प्रतीक्षा संग्राम से खुल कर मिलने लगी. वह यशवंत की उपस्थित में भी आने लगा. वह पूरेपूरे दिन यशवंत के घर में पड़ा रहता.

यशवंत खून का घूंट पी कर रह जाता. जब उस से बर्दाश्त नहीं होता तो वह उन दोनों से भिड़ जाता था. लेकिन दोनों के सामने उस की एक नहीं चलती थी.

मिलन में यशवंत के बारबार व्यवधान डालने से प्रतीक्षा और संग्राम परेशान हो गए. इसलिए दोनों ने यशवंत नाम के कांटे को हमेशा के लिए हटाने का फैसला कर लिया.

28/29 जनवरी, 2020 की रात यशवंत के खाने में प्रतीक्षा ने कोई नशीला पदार्थ मिला दिया. खाना खाने के बाद यशवंत बेसुध हो कर बिस्तर पर लेट गया. संग्राम देर रात प्रतीक्षा के पास पहुंचा और बेसुध पड़े यशवंत पर कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ कई प्रहार कर दिए.

यशवंत चीखचिल्ला भी न सका, उस ने दम तोड़ दिया. इस के बाद संग्राम वहां से चला गया. सुबह साढ़े 9 बजे प्रतीक्षा ने चीखचिल्ला कर बदमाशों द्वारा यशवंत को मार देने की झूठी कहानी लोगों को सुनाई, लेकिन वह अपने को बचाने में सफल नहीं हो सकी.

पुलिस ने प्रतीक्षा की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी बरामद कर ली. फिर कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद उसे न्यायालय में पेश कर के जेल भेज दिया गया. पुलिस के दबाव के चलते संग्राम सिंह ने न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आपराधिक प्रवृत्ति के सुलतान ने खूबसूरत नूरी को अपने जाल में फांस कर निकाह कर लिया. सुलतान के जेल जाने पर उस के बहनोई शबाब अहमद ने नूरी पर डोरे डाले. इसी दौरान सुलतान की बहन फूलबानो ने ऐसी साजिश रची कि...

छायांकन: मौडलिंग

मोहब्बत का फीका रंग

❑ शैलेंद्र सिंह

लखनऊ के वजीरगंज मोहल्ले की रहने वाली नूरी का असली नाम शनाया था. लेकिन वह देखने में इतनी सुंदर थी कि लोगों ने प्यार से उस का नाम नूरी रख दिया था. नूरी केवल चेहरे से ही नहीं, अपने स्वभाव से भी बहुत प्यारी थी. वह अपनी बातों से सभी का मन मोह लेती थी. एक बार जो उस के करीब आता था, वह हमेशा के लिए उस का हो जाता था.

नूरी के परिवार में उस के पिता मोहम्मद असलम, मां और भाईबहन थे. नूरी पढ़ीलिखी थी. वह स्कूटी चलाती थी और अपने

छायांकन: मौडलिंग

घरपरिवार की मदद के लिए बाहर भी जाती थी. अपने काम के लिए वह किसी पर निर्भर नहीं थी. उस का यह अंदाज लोगों को पसंद आता था. मोहल्ले के कई लड़के उसे अपनी तरफ आकर्षित करना चाहते थे.

वजीरगंज लखनऊ के मुसलिम बाहुल्य इलाकों में से एक है. यहां की आबादी काफी घनी है. लेकिन लखनऊ के कैसरबाग और डौलीगंज जैसे खुले इलाकों से जुड़े होने के कारण वजीरगंज का बाहरी इलाका काफी साफसुथरा और खुलाखुला है. सिटी रेलवे स्टेशन, कैसरबाग बस अड्डा, मैडिकल कालेज के करीब होने के कारण यहां बाहरी लोगों का आनाजाना भी बना रहता है. ऐतिहासिक रूप से भी वजीरगंज लखनऊ की काफी मशहूर जगह है.

यहीं पर नूरी की मुलाकात सुलतान से हुई. जिस तरह से नूरी अपने नाम के अनुसार सुंदर थी, उसी तरह सुलतान भी अपने नाम के हिसाब से दबंग था. लड़कियों को प्रभावित कर लेना उस की खूबी थी. उस की इसी खूबी के चलते नूरी जल्दी ही उस से प्रभावित हो गई.

हालांकि नूरी और सुलतान की उम्र में अच्छाखासा फासला था. 20 साल की नूरी को सलमान खान जैसी बौडी रखने वाला सुलतान मन भा गया. घर वालों की मरजी के खिलाफ जा कर नूरी ने सुलतान के साथ निकाह कर लिया.

शादी के बाद दोनों के संबंध कुछ दिन तक बहुत मधुर रहे. प्रेमी से पति बने सुलतान को नूरी में अब पहले जैसा आकर्षण नजर नहीं आ रहा था. इस की वजह यह थी कि सुलतान को नईनई लड़कियों का शौक था. नूरी को भी अब सुलतान की सच्चाई का पता चल गया था. उसे समझ में आ गया था कि उस ने जल्दबाजी में गलत फैसला कर लिया था, लेकिन अब वह कुछ नहीं कर सकती थी.

सैक्स रैकेट चलाता था सुलतान

नूरी को पता चला कि सुलतान लड़कियों को अपने जाल में फंसा कर उन से शारीरिक संबंध बनाता था. इस के बाद वह लड़कियों के सहारे नशे के साथसाथ सैक्स रैकेट भी चलाता था. यही उस का पेशा था, जिसे वह मोहब्बत समझी थी. नूरी पूरी तरह सतर्क थी, इस कारण सुलतान उस का बेजा इस्तेमाल नहीं कर पाया.वह अपराधी प्रवृत्ति का था, जेल आनाजाना उस के लिए मामूली बात थी.

यह पता चलने पर नूरी को निराशा हुई और अपने फैसले पर बुरा भी लगा. लेकिन अब समय निकल चुका था. नूरी पूरी तरह से सुलतान के कब्जे में थी. दूसरी तरफ उस के परिवार ने भी उस से संबंध खत्म कर दिए थे. हमेशा खुश रहने वाली नूरी के चेहरे की चमक गायब हो चुकी थी. उसे अपने फैसले पर पछतावा हो रहा था.

सुलतान जब भी जेल में या घर से बाहर रहता था, उस के घर सुलतान की बहन फूलबानो और बहनोई शबाब अहमद उर्फ शब्बू का आनाजाना बना रहता था. शब्बू का स्वभाव भी सुलतान जैसा ही था.

शादी के बाद दोनों के संबंध कुछ दिन तक बहुत मधुर रहे. प्रेमी से पति बने सुलतान को नूरी में अब पहले जैसा आकर्षण नजर नहीं आ रहा था. इस की वजह यह थी कि सुलतान को नईनई लड़कियों का शौक था. नूरी को भी अब सुलतान की सच्चाई का पता चल गया था. उसे समझ में आ गया था कि उस ने जल्दबाजी में गलत फैसला कर लिया था, लेकिन अब वह कुछ नहीं कर सकती थी.

वह हरदोई जिले के संडीला का रहने वाला था. उस के खिलाफ संडीला कोतवाली में 8, लखनऊ की महानगर कोतवाली में 2 और मलीहाबाद कोतवाली में 2 मुकदमे दर्ज थे. अब वह चौक इलाके में रहता था. जरूरत पड़ने पर वह वजीरगंज में सुलतान के घर भी आताजाता था.

सुलतान का रिश्तेदार होने के कारण किसी को कोई शक भी नहीं होता था. सुलतान अकसर जेल में रहता या फरार होता तो शब्बू उस के घर आता और नूरी की मदद करता था. नूरी की सुंदरता से वह भी प्रभावित था.

नूरी के प्रति शब्बू के लगाव को बढ़ता देख सुलतान की बहन फूलबानो को बुरा लगता था. उस ने कई बार पति को मना भी किया कि अकेली औरत के पास जाना ठीक नहीं है. मोहल्ले वाले तरहतरह की बातें बनाते हैं. पर शब्बू को इन बातों से कोई मतलब नहीं था. कई बार जब फूलबानो ज्यादा समझाने लगती तो शब्बू उस से मारपीट करता था.

कुछ समय तक तो फूलबानो ने इस बात का जिक्र अपने भाई सुलतान से नहीं किया, पर धीरेधीरे वह अपने भाई को सब कुछ बताने लगी. बहन को दुखी देख सुलतान ने अपनी पत्नी नूरी से बात कर के शब्बू से दूरी बनाने के लिए कहा. नूरी ने उसे बताया कि शब्बू खुद उस के घर आताजाता था. अपराध जगत से जुड़ा होने के कारण सुलतान को लगने लगा कि शब्बू ऐसे मानने वाला नहीं है.

दूसरी तरफ सुलतान की बहन फूलबानो इस सब के लिए अपने पति शब्बू से ज्यादा भाभी नूरी को जिम्मेदार मानती थी. फूलबानो को नूरी की खूबसूरती से भी जलन होती थी. वह अपने भाई को बारबार समझाती थी कि नूरी ही असल फसाद की जड़ है. जब तक वह रहेगी, कोई बात नहीं बनेगी.

हत्या की बनाई योजना

शब्बू सुलतान की मदद भी करता था और उस की बहन फूलबानो का पति भी था. ऐसे में वह उस से दूरी नहीं बना सकता था. फूलबानो अब नूरी के खिलाफ अपने पति को भी यह कह कर भड़काने लगी कि नूरी के दूसरे पुरुषों से भी संबंध हैं.

इसी बात को मुद्दा बना कर फूलबानो और सुलतान शब्बू पर नूरी को रास्ते से हटाने का दबाव बनाने लगे. पत्नी और साले के दबाव में शब्बू ने नूरी को रास्ते से हटाने के लिए ऐसी योजना बनाई, जिस से नूरी रास्ते से भी हट जाए और किसी पर कोई आंच भी न आए.

24 फरवरी, 2020 को सुलतान को जेल से पेशी पर कचहरी आना था. फूलबानो और शब्बू के साथ चिकवन टोला का रहने वाला

प्रैस कान्फ्रैंस में अपराध का खुलाश करते पुलिस अधिकारी

जुनैद भी उन के साथ हो लिया. जब चारों लोग घर से निकले तो शब्बू और जुनैद पल्सर बाइक से और फूलबानो व नूरी स्कूटी से कचहरी जाने के लिए निकले.

दोपहर 2 बजे तक ये लोग कचहरी में सुलतान से मिले और फिर नूरी को मारने के इरादे से इधरउधर सुरक्षित जगह की तलाश करने लगे. शब्बू को मलीहाबाद इलाके की पूरी जानकारी थी. उस ने नूरी की हत्या के लिए वही जगह चुनी. इधरउधर घूमने के बाद चारों लोग देर शाम फरीदीपुर गांव पहुंचे. रात 8 बजे सन्नाटे का लाभ उठाते हुए तीनों ने चाकू से नूरी का गला रेत दिया.

नूरी की हत्या आत्महत्या लगे, इस के लिए उस के शव को पास के रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया गया, ताकि ट्रेन की चपेट में आने के बाद यह आत्महत्या सी लगे. नूरी की स्कूटी, मोबाइल और चाकू ले कर ये लोग संडीला भाग गए. इधर रात को ट्रेन के चालक ने जब रेलवे लाइन पर शव पड़ा देखा तो उस ने स्टेशन मास्टर मलीहाबाद को सूचना दी.

स्टेशन मास्टर ने इंसपेक्टर मलीहाबाद सियाराम वर्मा और सीओ मलीहाबाद सैय्यद नइमुल हसन को ट्रैक पर लाश पड़ी होने की जानकारी दी. पुलिस ने अब काररवाई के साथसाथ सब से पहले शव की शिनाख्त के लिए प्रयास किया तो पता चला शव वजीरगंज की रहने वाली नूरी का है.

उस के पिता मोहम्मद असलम ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया. पुलिस छानबीन में लग गई. पुलिस ने जब नूरी के मोबाइल की काल डिटेल्स निकाल कर छानबीन की तो उसे संडीला के रहने वाले शब्बू के खिलाफ सबूत मिल गए.

आरोपी चढ़े हत्थे

ऐसे में पुलिस ने पहले शब्बू, बाद में उस की पत्नी फूलबानो व जुनैद को पकड़ लिया. पता चला कि नूरी की हत्या इन तीनों ने ही की थी. पुलिस को गुमराह करने के लिए तीनों लोगों ने अपने मोबाइल घर पर छोड़ दिए थे, जिस से उन की लोकेशन नूरी के साथ न मिले.

सीओ नइमुल हसन ने बताया कि घटना में शामिल जुनैद उर्फ रउफ की बाइक रिपेयरिंग की दुकान है. हत्या के बाद इन लोगों ने नूरी की स्कूटी के कई टुकड़े कर के इधरउधर कर दिए थे. शब्बू ने नूरी के मोबाइल फोन के सिम और बैटरी को निकाल कर इधरउधर फेंक दिया था. पुलिस ने इन की निशानदेही पर यह सब सामान बरामद कर लिया.

पुलिस के मुताबिक सुलतान अपनी पत्नी नूरी को रास्ते से हटाना चाहता था. इस की वजह उस के अवैध संबंध बताए जा रहे थे. सुलतान और उस की बहन फूलबानो को लगता था कि नूरी और शब्बू के संबंध थे, परेशानी की एक वजह यह भी थी. इस काम में शब्बू और उस के साथी जुनैद को भी साथ देना पड़ा.

पुलिस ने फूलबानो, शब्बू और जुनैद के खिलाफ हत्या का मुकदमा कायम कर तीनों को जेल भेज दिया. नूरी के पति को हत्या की साजिश रचने का आरोपी माना गया. इस तरह मलीहाबाद पुलिस ने ब्लाइंड मर्डर का खुलासा कर के बता दिया कि अपराधी कितनी ही होशियारी क्यों न दिखा ले, अपराध सिर चढ़ कर बोलता है. नूरी ने जिसे मोहब्बत समझा था, उस सुलतान में कई कमियां थीं, जिन के चलते नूरी को उस की मोहब्बत रास नहीं आई. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

मुंबई, महाराष्ट्र

पतंगे से हारी रोशनी

❑ अशोक शर्मा

रोजीना उर्फ रोशनी : हक मांगना महंगा पड़ा

ऐसे शादीशुदा युवकों की कमी नहीं है जो शहरों में जा कर नौकरी करते हैं और खुद को कुंवारा बताते समझते हैं. मिल जाए तो ऐसे लोग गर्लफ्रेंड से बीवी का काम चलाने लगते हैं. स्वप्न रोहिदास भी ऐसा ही युवक था. उस ने बार बाला रोजीना उर्फ रोशनी को पत्नी की तरह इस्तेमाल किया और जब उस ने अपने हक की बात की तो...

स्वप्न रोहिदास के लिए महानगर मुंबई एक अच्छा शहर था. खुले विचारों आधुनिकता और ग्लैमर के आवरण में लिपटा शहर. मुंबई आ कर उसे आर्टिफिशियल ज्वैलरी बनाने वाली एक कंपनी में काम मिल गया था. वहां काम करतेकरते वह ज्वैलरी बनाने का अच्छा कारीगर बन गया था.

इस कंपनी की डिजाइन की गई ज्वैलरी फिल्म और सीरियल बनाने वाली प्रोडक्शन कंपनियों के लिए भी सप्लाई की जाती थी. स्वप्न को अच्छी सैलरी मिल रही थी, जिस से वह खुश रहता था.

स्वप्न के मातापिता पश्चिम बंगाल स्थित गांव में रहते थे. स्वप्न हर महीने अपनी सैलरी का कुछ हिस्सा उन्हें भेज देता था. बाकी बचे पैसे वह अपने ऊपर खर्च करता था. वह पैसे खानेपीने और अपनी मौजमस्ती पर खर्च करता था.

स्वप्न दिन भर काम करने के बाद शाम को जब अपने आवास पर आता तो फ्रैश हो कर अमूमन घूमने के लिए निकल जाता था उस की मंजिल ज्यादातर बीयर बार होती थी. देर रात तक बीयर बार में बैठना जैसे उस की दिनचर्या बन चुकी थी. उस का पसंदीदा बार संदेश बीयर बार ऐंड रेस्टोरेंट था. यह बीयर बार उसे इसलिए पसंद था क्योंकि वहां कई महिला वेटर बंगाल की थीं.

एक रात स्वप्न रोहिदास बीयर बार में बैठा बीयर पी रहा था, तभी अचानक उस की निगाह एक खूबसूरत और कमसिन बाला पर गई, जो बंगाली थी और बार में बैठे कस्टमर को मुसकरा कर बीयर सर्व कर रही थी. उस के कपड़े आधुनिक और ग्लैमर से भरपूर थे.

वह स्वप्न की आंखों के रास्ते दिल में उतर गई. जब तक वह बीयर बार में रहा, उस की निगाहें उस बाला का ही पीछा करती रहीं. जब वह बार से लौटा तो घर में उसे चैन नहीं मिला. उस रात चाह कर भी वह सो नहीं सका. रात भर उस की आंखों के सामने वही बार बाला घूमती रही. वह यह भी भूल गया था कि उस की शादी हो चुकी है और वह एक बेटी का पिता है.

अगले दिन वह थोड़ा जल्दी संदेश बीयर बार ऐंड रेस्टोरेंट पहुंच गया और उसी टेबल पर जा कर बैठा, जिसे वह लड़की अटेंड करती थी. स्वप्न के बैठते ही वह लड़की उस के पास आई और अपनी चिरपरिचित मुसकान के साथ उस के सामने मेन्यू कार्ड रख कर और्डर देने का आग्रह किया.

उस की मीठी आवाज सुन कर एक मिनट के लिए स्वप्न को कुछ नहीं सूझा फिर अपने आप को संभाल कर उस ने अपनी मनपसंद व्हिस्की के साथसाथ खाने का भी और्डर दे दिया. खानेपीने के बाद स्वप्न ने उस लड़की को अच्छी टिप दी और घर लौट आया.

घर लौट कर वह बिस्तर पर लेटा तो जरूर, लेकिन नींद उस की आंखों से कोसों दूर थी. नशे की हालत में भी उस बाला का मुसकराता हुआ चेहरा सामने आ जाता था. वह उस की

स्वप्न रोहिदास से बरामद चोरी का सामान: जांच करने वाली पुलिस टीम

नजरों से एक मिनट के लिए भी ओझल नहीं हो पा रही थी. रात तो रात उसे दिन में भी चैन नहीं आया.

काम के दौरान बारबार उस की छवि उस के सामने आ जाती थी. स्वप्न रोजाना बार में जा कर उसी टेबल पर जा कर बैठता और मौका मिलने पर उस बारबाला से बात करने की कोशिश करता.

उस बाला से परिचय हुआ तो पता चला उस का नाम रोजीना शेख उर्फ रोशनी है और वह उसी प्रांत और जिले की रहने वाली है, जहां का स्वप्न रोहिदास था.

जानकारी के बाद तो उस का दिल बल्लियों उछलने लगा. वह अपने आप को रोक नहीं पाया, उस ने भी रोजीना शेख को अपना परिचय दे दिया. इतना ही नहीं उस ने रोशनी के सामने दोस्ती का प्रस्ताव भी रख दिया.

स्वप्न रोहिदास रोजीना शेख की नजर में अच्छा युवक था. हैंडसम होने के साथ वह अच्छा पैसा भी कमाता था, इसलिए उस के साथ दोस्ती करने में उसे कोई संकोच नहीं हुआ. उस ने मुसकराते हुए स्वप्न का दोस्ती का आमंत्रण स्वीकार कर लिया. रोजीना शेख उर्फ रोशनी ने सोचा भी नहीं था कि अचानक उस की जिंदगी में कोई युवक आएगा और उस के दिलोदिमाग पर छा जाएगा.

उस दिन के बाद रोजीना और स्वप्न अकसर रोज मिलनेजुलने लगे. पहले तो उन का मिलने का ठिकाना संदेश बीयर बार ही था. दोनों रेस्टोरेंट चालू होने के पहले ही पहुंच जाते थे और मौका मिलने पर वहीं बातें हो जाती थीं. जब रोजीना की ड्यूटी खत्म हो जाती तो स्वप्न उसे उस के घर छोड़ कर आता था. जिस दिन रोजीना की छुट्टी होती, उस दिन स्वप्न उस के साथ ही रहता था.

वह उसे रेस्टोरेंट, मौल ले जा कर उस पर खुले हाथों से पैसे खर्च करता था. इस के अलावा उसे महंगे उपहार देता. यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा.

रोजाना ने देखा एक सपना

रोजीना उसे अपना एक सच्चा दोस्त मानती थी, इसलिए वह दिन प्रतिदिन उस के करीब आती गई. वह स्वप्न के इतना करीब आ गई कि उस के साथ अपनी गृहस्थी बसाने के सपने देखने लगी.

एक दिन अपने दिल की यह बात उस ने स्वप्न को बताई तो उस का अस्तित्व डगमगा गया, क्योंकि वह पहले से ही शादीशुदा था. वह रोजीना के साथ टाइम पास और मौजमस्ती के लिए जाता था. इस के अलावा उस का और कोई मकसद नहीं था. इसलिए वह रोजीना की बात को बड़ी सफाई से टाल गया, जिस से रोजीना के सारे सपने कांच की तरह टूट कर बिखर गए. उसे गहरा झटका तब लगा, जब उसे पता चला कि उस का प्रेमी शादीशुदा ही नहीं, बल्कि एक बच्ची का पिता भी है.

इस के बाद रोजीना ने स्वप्न से दूरियां बनानी शुरू कर दीं. अब वह बार में स्वप्न का उतना ही सहयोग करती थी, जितना वह अपने अन्य ग्राहकों का करती थी. चूंकि स्वप्न ने रोजीना के साथ खूब मौजमस्ती की थी, इसलिए उस ने तय कर लिया कि वह स्वप्न से इस का हरजाना वसूल करेगी. वह स्वप्न रोहिदास को धमकी देने लगी कि वह उस की पत्नी और परिवार वालों को अपने प्रेम और अवैध संबंधों की बात बता देगी.

32 वर्षीय स्वप्न रोहिदास पश्चिम बंगाल के जिला हावड़ा के तालुका शहापुर आमरदाहा गांव के रहने वाले परेश रोहिदास का बेटा था. उन का पूरा परिवार खेती पर निर्भर था. लेकिन महत्त्वाकांक्षी स्वप्न रोहिदास को खेती का काम पसंद नहीं था. वह ज्यादा पढ़ालिखा तो नहीं था लेकिन आकांक्षाएं ऊंची थीं. वह शहर में रह कर नौकरी करना चाहता था. उस के गांव के कई दोस्त मुंबई में रहते थे. उन से बात कर के वह मुंबई आ गया था.

दोस्तों ने उस की मदद की और आर्टिफिशियल ज्वैलरी बनाने वाली एक कंपनी में उस की नौकरी लगवा दी. वहां काम करतेकरते वह ज्वैलरी डिजाइन का काम सीख कर कुशल कारीगर बन गया. उसे वहां से

आरोपी स्वप्न रोहिदास को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम

अच्छी तनख्वाह मिलने लगी. रहने के लिए उस ने दहिसर रावलपाडा में किराए का कमरा ले लिया था.

स्वप्न जब ठीकठाक कमाने लगा तो घर वालों ने अपने इलाके की एक लड़की से उस की शादी कर दी. खूबसूरत पत्नी को पा कर स्वप्न खुश था. शादी के महीना भर बाद वह मुंबई चला गया क्योंकि उसे नौकरी भी करनी थी. लेकिन वह महीने 2 महीने में अपने घर आता रहता था. इसी तरह कई साल बीत गए और वह एक बेटी का पिता भी बन गया.

अकेले रहने का फायदा उठाया स्वप्न ने

स्वप्न मुंबई में अकेला रहता था. दिन में तो वह काम पर चला जाता था, लेकिन उस के लिए रात मुश्किल हो जाती थी. वह परिवार, पत्नी और बच्ची से दूर था. रंगीन तबीयत का होने की वजह से उसे अकसर पत्नी की याद सताती थी.

जवान खून था, ऊपर से कमाई भी अच्छी थी उस ने जल्द ही मन बहलाने का रास्ता खोज लिया. काम से छूटने के बाद वह घर आता और फ्रैश हो कर मन बहलाने के लिए बीयर बारों के चक्कर लगाता. जल्द ही वह दिन भी आ गया, जब बीयर बार स्वप्न को मौजमस्ती के लिए अच्छी जगह लगने लगे. वहां जा कर वह 2-4 पैग ले कर खाना खाता और घर आ कर के सो जाता. उसी दौरान उस की दोस्ती रोजीना शेख उर्फ रोशनी से हो गई जो बाद में प्यार में बदल गई.

मुसलिम समुदाय की खूबसूरत रोजीना शेख उर्फ रोशनी भी पश्चिम बंगाल के हुगली जिले की रहने वाली थी. उस के पिता की मृत्यु हो चुकी थी. मां के अलावा उस की एक छोटी बहन थी. पिता की मौत के बाद घर की सारी जिम्मेदारियां उस की मां के कंधो पर आ गई थीं. मां ने मेहनतमजदूरी कर जैसेतैसे दोनों बेटियों को पाला.

बालिग होने के बाद रोजीना अपनी एक सहेली रुबिका के साथ मुंबई आ गई थी. जिस सहेली के साथ वह आई थी, वह मुंबई के दहिसर में रह कर बीयर बारों में काम करती थी.

जवान खून था, ऊपर से कमाई भी अच्छी थी उस ने जल्द ही मन बहलाने का रास्ता खोज लिया. काम से छूटने के बाद वह घर आता और फ्रैश हो कर मन बहलाने के लिए बीयर बारों के चक्कर लगाता. जल्द ही वह दिन भी आ गया, जब बीयर बार स्वप्न को मौजमस्ती के लिए अच्छी जगह लगने लगे.

पहले तो रोजीना शेख को बीयर बार के कामों में रुचि नहीं थी,लेकिन घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए वह बीयर बारों में अपना नाम बदल कर नौकरी करने लगी. इधरउधर कई बारों में काम करने के बाद वह दहिसर के संदेश बीयर बार ऐंड रेस्टोरेंट में आ गई, जहां उस की अच्छी कमाई हो जाती थी. अपनी कमाई का आधा हिस्सा वह अपनी मां के पास भेज देती थी. दहिसर की जनकल्याण सोसायटी में उस ने 7 हजार रुपए महीना किराए पर एक कमरा ले लिया था.

उस दिन रविवार था, स्वप्न रोहिदास की छुट्टी का दिन. उस ने रोजीना को फोन किया लेकिन उस ने काल रिसीव नहीं की. कई बार फोन करने के बाद जब रोजीना ने फोन उठाया तो स्वप्न ने उसे तय जगह पर मिलने के लिए बुलाया, पर वह नहीं आई. इस पर स्वप्न को गुस्सा आ गया.

हार गई रोशनी

शाम को स्वप्न ने दहिसर की एक शराब की दुकान से बीयर की एक बोतल खरीदी और रोजीना शेख उर्फ रोशनी के घर पहुंच गया. उस ने वहीं बैठ कर बीयर पी. फिर उस

ने रोजीना से उस के बुलाने पर न आने का कारण पूछा तो रोजीना ने उसे दोटूक जवाब दिया, ''मेरा मूड ठीक नहीं था. गांव से मां का फोन आया था. मुझे पैसों की सख्त जरूरत है. बताओ, क्या तुम मेरी मांग पूरी कर सकते हो ?''

''तुम ने मुझे क्या बैंक समझ रखा है, जब देखो तुम पैसों की मांग करती रहती हो ?'' स्वप्न के दिमाग पर बीयर का सुरूर चढ़ चुका था.

उस की यह बात सुन कर रोजीना ने भी उस की ही भाषा में जवाब दिया, ''तो तुम ने क्या मुझे अपनी बीवी समझ रखा है कि मैं तुम्हारी हर बात मानूं ?''

इन बातों को ले कर बात इतनी बढ़ी कि स्वप्न अपना विवेक खो बैठा और पास रखी तौलिया उठा रोजीना के गले में डाल कर कस दी. थोड़ी देर में दम घुटने से रोजीना की मृत्यु हो गई.

रोजीना उर्फ रोशनी की हत्या के बाद जब उस का गुस्सा शांत हुआ तो उस के हाथपैर फूल गए. हाथ में हथकड़ी और कानून के डर से वह बुरी तरह घबरा गया.

पुलिस से बचने और कानून को गुमराह करने के लिए उस ने घटना का रुख चोरी की तरफ मोड़ने की कोशिश की. उस ने कमरे की अलमारी खोल कर सारा सामान इधरउधर डाल दिया और उस में रखे कीमती गहने, पौने 2 लाख नगदी के अलावा कमरे में रखे 2 मोबाइल फोन अपने पास रख लिए और वहां से भाग कर अपने कमरे पर जा पहुंचा. फिर वहां से वह पश्चिम बंगाल स्थित अपने गांव चला गया.

29 दिसंबर, 2019 को रोजीना ने अपना रूम नहीं खोला तो उस की नौकरानी को दाल में कुछ काला नजर आया. वह 2 बार रोशनी के घर पर आ कर लौट गई थी. तीसरी बार जब वह आई, तब भी रोजीना का फ्लैट बंद पा कर उस ने यह बात पड़ोसियों और फ्लैट मालिक सुनील सखाराम को बताई.

फ्लैट मालिक सुनील सखाराम ने डुप्लीकेट चाबी से जब घर का दरवाजा खोला तो अंदर का दृश्य देख हैरान रह गया. पड़ोसियों के भी होश फाख्ता हो गए. मामला गंभीर था, अतः उन्होंने इस की जानकारी पुलिस कंट्रोल रूम के साथसाथ थाने को भी दे दी.

वह इलाका दहिसर पुलिस थाने के अंतर्गत आता था. थाने की ड्यूटी पर तैनात एसआई सिद्धार्थ दुधमल ने तुरंत मामले की जानकारी इंसपेक्टर मराठे, असिस्टेंट इंसपेक्टर जगदाले को दे दी और घटनास्थल की ओर रवाना हो गए. घटनास्थल पर पहुंच कर पुलिस ने कमरे का सरसरी निगाहों से निरीक्षण किया.

एसआई सिद्धार्थ ने पूछताछ की प्रक्रिया अभी शुरू ही की थी कि मामले की जानकारी पा कर थानाप्रभारी एम.एम. मुजावर, इंसपेक्टर सुरेश रोकड़े (क्राइम) घटनास्थल पर पहुंच गए. उन के साथसाथ मुंबई के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त दिलीप सावंत, डीसीपी डा. डी.एस. स्वामी और एसीपी सुहास पाटिल के अलावा फौरैंसिक टीम भी मौकाएवारदात पर पहुंच गई.

अधिकारियों ने घटनास्थल का फौरी तौर पर निरीक्षण कर थानाप्रभारी एम.एम. मुजावर को आवश्यक दिशानिर्देश दिए. घटनास्थल की सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद मामले की तफ्तीश की जिम्मेदारी इंसपेक्टर सुरेश रोकड़े को सौंपी गई.

अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश पर इंसपेक्टर सुरेश रोकड़े ने अपनी जांच टीम का गठन किया, जिस में असिस्टेंट इंसपेक्टर डा. चंद्रकांत धार्गे, ओम टोटावर, विराज जगदाले, एसआई सिद्धार्थ दुधमल, कांस्टेबल परब, जगताप, नाइक, तटकरे आदि को शामिल किया गया. टीम ने सरगरमी से मामले की जांच शुरू कर दी.

पुलिस ने रोजीना उर्फ रोशनी के मोबाइल फोन की काल डिटेल्स निकलवाई. साथ ही कमरे में मिली बीयर की बोतल के बैच नंबर के आधार पर उस शराब की दुकान का पता लगा लिया, जहां से वह बोतल खरीदी गई थी. इस के बाद घटनास्थल और शराब की दुकान के पास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज से पता चल गया कि रोशनी की हत्या स्वप्न रोहिदास ने की थी.

फोन कंपनी से उस के पश्चिम बंगाल स्थित घर का पता लग गया था. लिहाजा पुलिस टीम फ्लाइट से उस के गांव पहुंच गई. वह अपने घर पर ही मिल गया. उसे हिरासत में ले कर पुलिस मुंबई लौट आई.

दहिसर पुलिस की गिरफ्त में आए स्वप्न रोहिदास ने बिना किसी हीलाहवाली के अपना गुनाह स्वीकार कर लिया. जांच अधिकारी इंसपेक्टर सुरेश रोकड़े ने उस से विस्तृत पूछताछ के बाद उसे भादंवि की धारा 302 के तहत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. ●

पी.आई.एम. एम. मुजाबर

पीआई सुरेश ऐकाडे

पीआई ओम तोतावर

एपीआई चंद्रकांत धार्गे

एक जवान रानी के बूढ़े राजा

सोमेश्वर, राजकुमार शर्मा और सोनी तीनों वृद्ध थे, पैसे और प्रोपर्टी वाले, लेकिन विधुर. तीनों को सहारे के लिए जीवनसाथी की जरूरत थी, सो तीनों ने अखबार में अलगअलग विज्ञापन दे कर शादी की. लेकिन एक महिला और पुरुष ने तीनों को ऐसा चूना लगाया कि...

❑ भारत भूषण श्रीवास्तव

छायांकन: मौडलिंग

भोपाल के कोलार इलाके में रहने वाले 72 वर्षीय सोमेश्वर के पास सब कुछ था. दौलत, इज्जत, अपना बड़ा सा घर और वह सब कुछ जिस की जरूरत सुकून, सहूलियत और शान से जीने के लिए होती है.

पेशे से इंजीनियर रहे सोमेश्वर की पत्नी की करीब एक साल पहले मृत्यु हो गई थी, तब से वह खुद को काफी तन्हा महसूस करने लगे थे, जो कुदरती बात भी थी. रोमांटिक और शौकीनमिजाज सोमेश्वर ने एक दिन अखबार में इश्तहार दिया कि उन की देखरेख के लिए एक स्वस्थ और जवान औरत की जरूरत है, जिस से वह शादी भी करेंगे.

जल्द ही उन की यह जरूरत पूरी करने वाला एक फोन आया. फोन करने वाले ने अपना नाम शंकर दूबे बताते हुए कहा कि वह पन्ना जिले के भीतरवार गांव से बोल रहा है. उस की जानपहचान की एक जवान औरत काफी गरीब है, जिस के पेट में गाय ने सींग मार दिया था, इसलिए उस ने शादी नहीं की क्योंकि वह मां नहीं बन सकती थी.

सोमेश्वर के लिए यह सोने पे सुहागा वाली बात थी, क्योंकि इस उम्र में वे न तो औलाद पैदा कर सकते थे और न ही बालबच्चों वाली बीवी चाहते थे, जो उन के लिए झंझट वाली बातें थीं. बात आगे बढ़ी तो उन्होंने शंकर को उस औरत के साथ भोपाल आने का न्यौता दे दिया.

चट मंगनी पट ब्याह

शंकर जब रानी को ले कर उन के घर आया तो सोमेश्वर उसे देख सुधबुध खो बैठे. इस में उन की कोई गलती थी भी नहीं, भरेपूरे बदन की 35 वर्षीय रानी को देख कर कोई भी उस की मासूमियत और भोलेपन पर पहली नजर में मर मिटता. देखने में भी वह कुंवारी सी ही लग रही थी, लिहाजा सोमेश्वर के मन में रानी को देखते ही लड्डू फूटने लगे और उन्होंने तुरंत शादी के लिए हां कर दी.

इस उम्र और हालत में कोई बूढ़ा भला बैंडबाजा बारात के साथ धूमधाम से तो शादी करता नहीं, इसलिए बीती 20 फरवरी को उन्होंने रानी से घर में ही सादगी से शादी कर ली और घर के पास के मंदिर में जा कर उस की मांग में सिंदूर भर कर अपनी पत्नी मान लिया.

'जिस का मुझे था इंतजार, वो घड़ी आ गई...' की तर्ज पर सुहागरात के वक्त सोमेश्वर ने अपनी पहली पत्नी के कोई 15 तोले के जेवरात जिन की कीमत करीब 6 लाख रुपए थी, रानी को उस की मांग पर दे दिए और सुहागरात मनाई. उन की तन्हा जिंदगी में जो वसंत इस साल आया था, उस से वह खुद को बांका जवान महसूस कर रहे थे.

रानी को पत्नी का दरजा और दिल वह दे ही चुके थे, इसलिए ये सोना, चांदी, हीरे,

आरोपी रानी उर्फ सुनीता

मोती उन के किस काम के थे. ये सब तो रानी पर ही फब रहे थे. लेकिन रानी ने दिल के बदले में उन्हें दिल नहीं दिया था, यह बात जब उन की समझ आई तब तक चिड़िया खेत चुग कर फुर्र हो चुकी थी. साथ में उस का शंकर नाम का चिड़वा भी था.

जगहंसाई से बचने के लिए सोमेश्वर ने अपनी इस शादी की खबर किसी को नहीं दी थी. यहां तक कि कोलकाता में नौकरी कर रहे एकलौते बेटे को भी इस बात की हवा नहीं लगने दी थी कि पापा उस के लिए उस की बराबरी की उम्र वाली मम्मी ले आए हैं.

पुलिस हिरासत में रामफल और सुनीता

यूं खत्म हुआ खेल

सोमेश्वर की सुहागरात की खुमारी अभी पूरी तरह उतरी भी नहीं थी कि दूसरे ही दिन शंकर ने घर आ कर यह मनहूस खबर सुनाई की रानी की मां की मौत हो गई है, इसलिए उसे तुरंत गांव जाना पड़ेगा.

रोकने की कोई वजह नहीं थी, इसलिए सोमेश्वर ने उसे जाने दिया और मांगने पर रानी को 10 हजार रुपए भी दे दिए जो उन के लिए मामूली रकम थी. पर गैरमामूली बात यह रही कि जल्दबाजी में रानी रात को पहने हुए गहने उतारना भूल गई. उन्होंने भी इस तरफ ध्यान नहीं दिया.

2 दिन बाद शंकर फिर उन के घर आया और उन्हें बताया कि रानी अब मां की तेरहवीं के बाद ही आ पाएगी और उस के लिए 40 हजार रुपए और चाहिए. सोमेश्वर ने अभी पैसे दे कर उसे चलता ही किया था कि उन के पास राजस्थान के कोटा से एक फोन आया. यह फोन राजकुमार शर्मा नाम के शख्स का था, जिस की बातें सुन उन के पैरों तले से जमीन खिसक गई.

63 वर्षीय राजकुमार ने उन्हें बताया कि कुछ दिन पहले ही उन की शादी रानी से हुई थी, जोकि उस के रिश्तेदार शंकर ने करवाई थी. लेकिन दूसरे ही दिन रानी की मां की मौत हो गई थी, इसलिए वे दोनों गांव चले गए थे. इस के बाद से उन दोनों का कहीं अतापता नहीं है.

रानी और शंकर भारी नगदी ले गए हैं और लाखों के जेवरात भी. राजकुमार को सोमेश्वर का नंबर रानी की काल डिटेल्स खंगालने पर मिला था. दोनों ने खुल कर बात की और वाट्सऐप पर रानी के फोटो साझा किए तो इस बात की तसल्ली हो गई कि दोनों को कुछ दिनों के अंतराल में एक ही तरीके से बेवकूफ बना कर ठगा गया था.

कल तक अपनी शादी की बात दुनिया से छिपाने वाले सोमेश्वर ने झिझकते हुए अपने बेटे को कोलकाता फोन कर आपबीती सुनाई तो उस पर क्या गुजरी होगी, यह तो वही जाने लेकिन समझदारी दिखाते हुए उस ने भोपाल पुलिस को सारी हकीकत बता दी.

जांच हुई तो चौंका देने वाली बात यह उजागर हुई कि इन दोनों ने सोमेश्वर और राजकुमार को ही नहीं, बल्कि जबलपुर के सोनी नाम के एक और अधेड़ व्यक्ति को भी इसी तर्ज पर चूना लगाया था, जो सरकारी मुलाजिम थे.

भोपाल पुलिस की क्राइम ब्रांच ने फुरती दिखाते हुए दोनों को दबोच लिया तो रानी का असली नाम सुनीता शुक्ला निवासी सतना और शंकर का असली नाम रामफल शुक्ला निकला. हिरासत में इन्होंने तीनों बूढ़ों को ठगना कबूल किया. पुलिस ने दोनों के खिलाफ धोखाधड़ी, जालसाजी का मुकदमा दर्ज कर लिया.

बन गए बंटी और बबली

दरअसल, सुनीता रामफल की दूसरी पत्नी थी. सतना का रहने वाला रामफल सेना में नौकरी करता था, लेकिन तबीयत खराब रहने के चलते उसे नौकरी छोड़नी पड़ी थी. पहली पत्नी के रहते ही उस ने सुनीता से शादी कर ली थी. दोनों बीवियों में पटरी नहीं बैठी और वे आए दिन बिल्लियों की तरह लड़ने लगीं. इस पर रामफल ने सुनीता को छोड़ दिया.

कुछ दिन अलग रहने के बाद सुनीता को समझ आ गया कि बिना मर्द के सहारे और पैसों के इज्जत तो क्या बेइज्जती से भी गुजर करना आसान नहीं है. यही सोच कर वह रामफल के पास वापस आ गई और अखबारों के वैवाहिक विज्ञापनों के बूढ़ों के बारे में उसे अपनी स्कीम बताई तो रामफल को भी लगा कि धंधा चोखा है.

एक के बाद एक इन्होंने 3 बूढ़ों को चूना लगाया. हालांकि पुलिस को शक है कि इन्होंने कई और लोगों को भी ठगा होगा. अभी तो इस हसीन रानी के 3 राजा ही सामने आए हैं, मुमकिन है कि कई दूसरों ने शरमोहया के चलते रिपोर्ट ही दर्ज न कराई हो.

लुटेरी दुलहनों द्वारा यूं ठगा जाना कोई नई बात नहीं है, बल्कि अब तो यह सब आम बात होती जा रही है. सोमेश्वर, राजकुमार और सोनी जैसे बूढ़े जिस्मानी जरूरत और सहारे के लिए शादी करें, यह कतई हर्ज की बात नहीं. हर्ज की बात है इन की हड़बड़ाहट और बेसब्री, जो इन के ठगे जाने की बड़ी वजह बनते हैं. ●

—कथा में सोमेश्वर परिवर्तित नाम है

कड़वा घूंट

❑ मिर्जा अमजद बेग
प्रस्तुतिः शकीला एस. हुसैन

उस दिन जो क्लायंट मुझ से मिला, वह कुछ अजब किस्म का था. उस ने अपना नाम अफजल बताया. वह फ्रूट का धंधा करता था. उस की परेशानी यह थी कि वह अपनी बीवी रूमाना को तलाक दे चुका था और उस की एकलौती बेटी को उस की बीवी रूमाना साथ ले गई थी. वह अपनी बेटी को वापस लेना चाहता था.

मांबेटी अपने घर में रह रहे थे. अफजल को घर से निकलना पड़ा, क्योंकि घर रूमाना के नाम पर था. यह मकान महमूदाबाद बाजार के सिरे पर था. मकान के बाहरी हिस्से में एक दुकान थी, मकान का रास्ता बाजू वाली गली से था. 3 कमरों के इस घर में अफजल की छोटी सी फैमिली आराम से रह रही थी कि फरीद की नजर लग गई.

फरीद हसन 45 साल का हैंडसम आदमी था, लेकिन बेहद चालाक. वह इन लोगों का किराएदार था. बाहरी हिस्से वाली दुकान में उस ने एस्टेट एजेंसी खोल रखी थी. मकान रूमाना के नाम था इसलिए उस ने फरीद को

कहा जाता है कि कई रोगों में कड़वी दवाई ज्यादा असरकारक होती है. रूमाना और अफजल को भी अपनी शादीशुदा जिंदगी को पटरी पर लाने के लिए कड़वा घूंट पीना पड़ा, मुझे भी. पढ़ें कैसे...

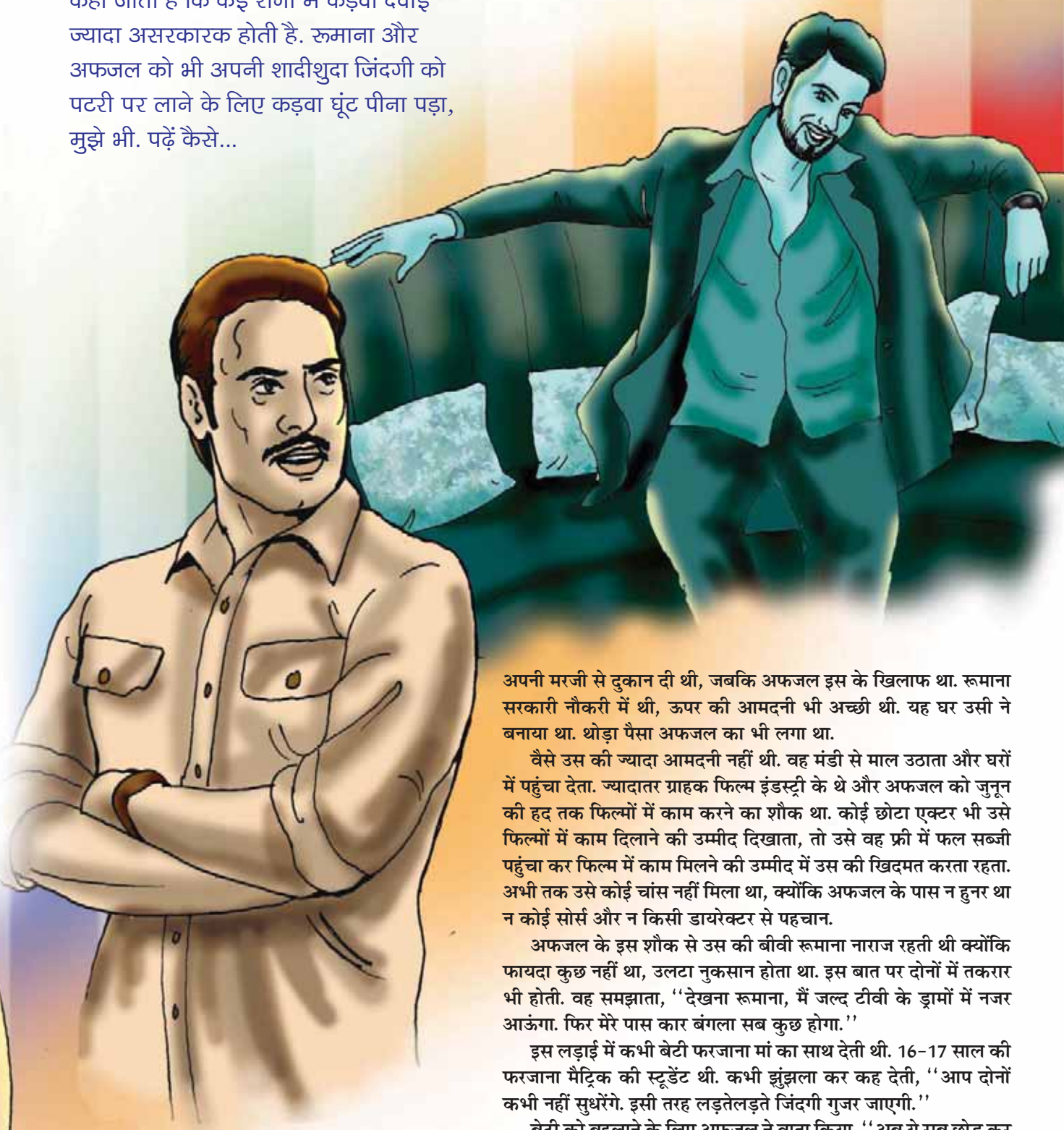

अपनी मरजी से दुकान दी थी, जबकि अफजल इस के खिलाफ था. रूमाना सरकारी नौकरी में थी, ऊपर की आमदनी भी अच्छी थी. यह घर उसी ने बनाया था. थोड़ा पैसा अफजल का भी लगा था.

वैसे उस की ज्यादा आमदनी नहीं थी. वह मंडी से माल उठाता और घरों में पहुंचा देता. ज्यादातर ग्राहक फिल्म इंडस्ट्री के थे और अफजल को जुनून की हद तक फिल्मों में काम करने का शौक था. कोई छोटा एक्टर भी उसे फिल्मों में काम दिलाने की उम्मीद दिखाता, तो उसे वह फ्री में फल सब्जी पहुंचा कर फिल्म में काम मिलने की उम्मीद में उस की खिदमत करता रहता. अभी तक उसे कोई चांस नहीं मिला था, क्योंकि अफजल के पास न हुनर था न कोई सोर्स और न किसी डायरेक्टर से पहचान.

अफजल के इस शौक से उस की बीवी रूमाना नाराज रहती थी क्योंकि फायदा कुछ नहीं था, उलटा नुकसान होता था. इस बात पर दोनों में तकरार भी होती. वह समझाता, ''देखना रूमाना, मैं जल्द टीवी के ड्रामों में नजर आऊंगा. फिर मेरे पास कार बंगला सब कुछ होगा.''

इस लड़ाई में कभी बेटी फरजाना मां का साथ देती थी. 16-17 साल की फरजाना मैट्रिक की स्टूडेंट थी. कभी झुंझला कर कह देती, ''आप दोनों कभी नहीं सुधरेंगे. इसी तरह लड़तेलड़ते जिंदगी गुजर जाएगी.''

बेटी को बहलाने के लिए अफजल ने वादा किया, ''अब ये सब छोड़ कर मैं काम में दिल लगाऊंगा.''

कुछ दिन तो सुकून से गुजरे. फिर एक नया किस्सा शुरू हो गया. दुकान का किराएदार फरीद अकसर रूमाना से मिलने आने लगा. पहले तो वह महीने में 2-4 बार आता था, अब उस की आमद बढ़ गई थी. अफजल को उस का आनाजाना पसंद नहीं था. उस की आवाजाही बढ़ी तो अफजल ने ऐतराज किया, जिस से मेलमुलाकात रुक गई थी, फिर वह अफजल की गैरमौजूदगी में भी आने लगा.

अब रूमाना ने बाहर मिलना भी शुरू कर दिया. यह बात भी अफजल को पता चल गई. अभी तकरार चल ही रही थी कि अचानक एक दिन अफजल बेटाइम घर पहुंच गया, उस ने दोनों को घर में ही रंगेहाथों पकड़ लिया.

अफजल गुस्से से पागल हो गया. फरीद भाग निकला. पतिपत्नी की जोरदार लड़ाई हुई. अफजल बोला, ''बेगैरती और बेशर्मी की हद हो गई, एक जवान लड़की के होते हुए पराए मर्द से ताल्लुक रखती हो. ये मैं बरदाश्त नहीं कर सकता.''

रूमाना भी चीख कर बोली, ''बेगैरत तुम हो, तुम अपनी बीवी पर इलजाम लगा रहे हो मेरी उस की दोस्ती है, हम अपना दुखसुख बांट लेते हैं.''

तकरार गालीगलौज पर पहुंच गई और तलाक पर खत्म हुई.

घर रूमाना के नाम पर था. अफजल को बोरियाबिस्तर बांध कर घर छोड़ना पड़ा. बेटी फरजाना मां के पास रह गई.

अब अफजल कोर्ट में केस करने के लिए मेरे पास आया था कि मैं मुकदमा लड़ कर उस की बेटी उस के हवाले कर दूं. मैं ने उसे कहा, ''देखो अफजल, तुम ने रूमाना को तलाक दे दी है. अगर तुम तलाक न देते तो वह खुला (औरत तलाक मांग लेती है) ले लेती. तुम्हारे साथ हरगिज न रहती. अब तुम चाहते हो कि कोर्ट के जरिए फरजाना को रूमाना की कस्टडी से निकाल कर तुम्हारे हवाले कर दूं.''

''हां वकील साहब, मैं हर कीमत पर अपनी बेटी को अपने पास लाना चाहता हूं. उस बेशर्म औरत की संगत में वह बिगड़ जाएगी. आप सारी बातें छोड़ें और मुकदमा लड़ कर मुझे मेरी बेटी दिला दें, मैं उस से बहुत प्यार करता हूं. मैं महीने में एक बार मिलने पर तसल्ली नहीं कर सकता. आप केस लड़ें.''

''केस लड़ने के लिए 3 बातों पर गौर करना जरूरी है, तभी मैं आप का केस ले सकता हूं.''

''कौन सी 3 बातें...जल्द बताइए.''

''पहली बात तो यह कि क्या आप के पास अपना घर है ?''

''नहीं, मेरे पास अपनी रिहाइश नहीं है. मेरे दोस्त बशीर का एक होटल है, उस की ऊपरी मंजिल पर स्टाफ की रिहाइश के लिए कुछ कमरे बने हैं, उन्हीं में से एक में मैं रहता हूं.''

''अगर आप के पास घर नहीं है तो यह पौइंट आप के मुखालिफ जाता है. कोर्ट लड़की को होटल में स्टाफ के लिए बने कमरों में रखने की इजाजत नहीं देगी, जबकि मां के पास खुद का घर है. दूसरा मुद्दा यह है कि क्या आप इतना कमा लेते हैं कि बेटी व उस के महंगे स्कूल का खर्च उठा सकें ?''

''मैं कमा तो लेता हूं पर आमदनी रेग्युलर नहीं है. उस का स्कूल काफी महंगा है.''

''तीसरा सवाल जो सब से जरूरी है, आप की बेटी मैट्रिक में पढ़ रही है, समझदार है. क्या वह आप के पास रहने को राजी है या मां के पास रहना चाहती है ?''

''ये तो जाहिर सी बात है कि वह अपनी मां के साथ रहना पसंद करती है.''

''देखिए अफजल साहब, कोर्ट औलाद की कस्टडी के लिए इन्हीं 3 बातों पर गौर करती है. इन 3 खास मुद्दों पर आप का जवाब नेगेटिव है, कोर्ट कभी भी आप को लड़की की कस्टडी नहीं देगी और आप को साफ बात बता दूं, मैं भी आप का केस नहीं लड़ सकता. मैं बेवजह आप से पैसे झटकना नहीं चाहता. हकीकत में आप का केस बहुत कमजोर है. जीतने का कोई चांस नहीं है.''

उस दिन अफजल मेरे पास से बेहद मायूस

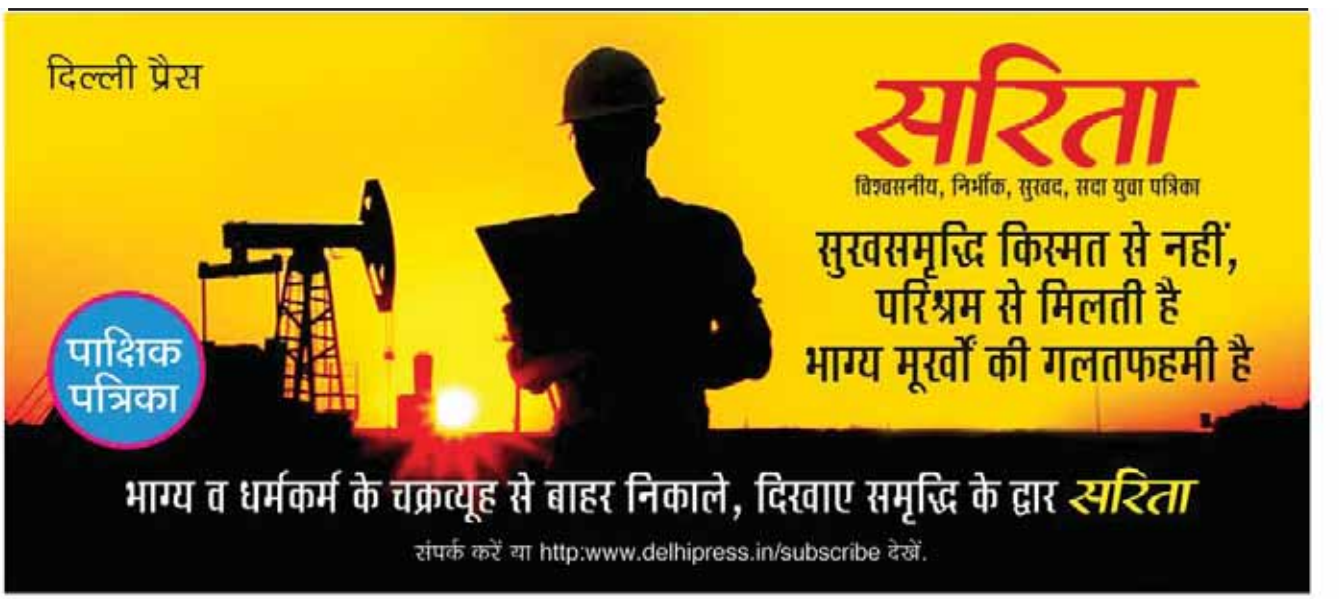

हो कर गया. अब दोबारा आने की उम्मीद नहीं थी, पर कुछ दिनों बाद होटल के मालिक बशीर भाई मेरे सामने आ खड़े हुए. पहले मैं उन का एक केस लड़ चुका था और वह मुकदमा जीत गए थे. उन्होंने ही अफजल को मेरे पास भेजा था. आज वह फिर मेरे सामने खड़े थे. बोले, ''बेग साहब, अफजल बड़ी मुसीबत में फंस गया है. वह जेल में बंद है. पुलिस ने उसे फरीद के कत्ल के इलजाम में गिरफ्तार किया है.''

''फरीद वही न, एस्टेट एजेंट, जिस की वजह से अफजल ने अपनी बीवी को तलाक दी थी.''

''जी हां, वही अफजल और वही एस्टेट एजेंट फरीद. उसी के कत्ल के इलजाम में पुलिस ने कल सुबह उसे अदालत में पेश किया और 7 दिन का रिमांड हासिल कर लिया.''

''कब हुआ ये कत्ल?''

''कत्ल 15 मई को हुआ था. उसी दिन दोपहर को मेरे होटल से उसे गिरफ्तार कर लिया गया. वह सीधा, कुछ बेवकूफ जरूर है पर वह कत्ल नहीं कर सकता. बहुत डरपोक आदमी है. मैं उसे सालों से जानता हूं, उस के खिलाफ साजिश की गई है. मेरा शक तो रूमाना पर जाता है.''

''ठीक है, मैं आज थाने जा कर अफजल से मिलता हूं. आप को पक्का यकीन है न कि वह बेकुसूर है? आप केस के बारे में और मालूमात करें. उस ने मेरी फीस अदा कर दी.''

उसी दिन शाम को मैं उस थाने पहुंच गया, जहां अफजल बंद था. मुझे देख कर उस के चेहरे पर रौनक आ गई. वह दुखी हो कर बोला, ''देखिए सर, मुझे बेवजह इस केस में फंसा दिया गया है.''

''इसीलिए तो मैं ने तुम्हारा केस हाथ में लिया है. चलो, मुझे सब कुछ सचसच बता दो.''

वह बोला, ''आप पूरी कोशिश कर के मुझे मौत से बचा लीजिए, भले ही मुझे थोड़ी सजा हो जाए. मैं फरजाना की शादी अपने हाथों से करना चाहता हूं.''

मुझे थोड़ा ताज्जुब हुआ. मैं ने उसे तसल्ली दी, ''तुम जल्द रिहा हो जाओगे, पर सच बोलना.''

उस ने जो किस्सा सुनाया, उस का खुलासा यह है कि वह मेरा पहला मुलजिम था, जो थोड़ी सजा पर राजी था. जेहन में खयाल भी आया कि कहीं ये मुजरिम तो नहीं है जो कुछ उस ने कहा, मैं आप को बताता रहूंगा.

रिमांड पूरी होने पर पुलिस ने अदालत में चालान पेश कर दिया. इस मौके पर मैं ने जमानत की कोशिश की पर मंजूर नहीं हुई. उसे जेल भेज दिया गया.

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक कत्ल 15 मई को दिन के 11 बजे हुआ था. एक लोहे की रौड फरीद के सिर पर मारी गई थी, जिस से खोपड़ी चटक गई थी. मौत की जगह रूमाना का ड्राइंगरूम था.

जब अदालत शुरू हुई तो जज ने अफजल को उस का जुर्म बताया. उस ने कत्ल से साफ इनकार कर दिया. इस्तगासा की तरफ से 6 गवाहों को पेश किया गया था, जिस में अफजल की एक्स वाइफ रूमाना भी थी. अफजल का बयान नोट कराया गया जो काफी सटीक था.

दूसरी पेशी 15 दिन बाद थी. मेरे पास तैयारी के लिए काफी टाइम था. बशीर जानकारी जुटाने में लगा था. वह अफजल का पक्का दोस्त था.

जब अदालत शुरू हुई तो जज ने अफजल को उस का जुर्म बताया. उस ने कत्ल से साफ इनकार कर दिया. इस्तगासा की तरफ से 6 गवाहों को पेश किया गया था, जिस में अफजल की एक्स वाइफ रूमाना भी थी.

अफजल का बयान नोट कराया गया जो काफी सटीक था. अदालत की इजाजत से इस्तगासा के वकील ने पूछताछ शुरू की. उस ने पूछा, ''क्या तुम इस बात से इनकार करते हो कि तुम मकतूल से नफरत करते थे और उसी नफरत में तुम ने फरीद का खून कर दिया?''

''मैं ने फरीद का कत्ल नहीं किया.'' उस ने दोटूक कहा.

''आलाए कत्ल पर तुम्हारे फिंगरप्रिंट्स मिले हैं.''

''मुझे नहीं मालूम रौड पर मेरे फिंगरप्रिंट्स कैसे आए?''

''क्या फरीद तुम्हारा किराएदार रहा था?''

''नहीं, वह मेरा नहीं मेरी एक्स वाइफ का किराएदार था.''

''क्या तुम ने फरीद की वजह से रूमाना को तलाक नहीं दी थी, तुम उस पर झूठा शक करते थे?''

''मैं ने कोई झूठा शक नहीं किया, जो हकीकत थी वह बरदाश्त से बाहर थी. मुझे तलाक देनी पड़ी.''

वकील इस्तगासा कोई खास बात मालूम नहीं कर सका. बारी आने पर मैं ने बौक्स में खड़े हो कर पूछा, ''इस्तगासा के 3 गवाहों ने दावा किया है कि तुम्हें कत्ल के दिन मौकाएवारदात पर देखा गया. तुम 15 मई को वहां क्या कर रहे थे?''

वह मुझे हवालात में बता चुका था. बात मेरे पक्ष में थी, इसलिए मैं ने पूछा तो अफजल ने जवाब दिया, ''मैं अपनी बेटी फरजाना से मिलने गया था.''

''तुम्हारी मुलाकात पार्क या बाहर होती थी, उस दिन तुम घर क्यों गए थे?''

''यह चेंज रूमाना के कहने पर हुआ था. हर महीने की 15 तारीख को मैं अपनी बेटी से पार्क में मिलता था. रूमाना उसे ले कर आती थी. पर इस बार 14 मई की शाम उस ने मुझे कहलवाया कि फरजाना की तबीयत ठीक नहीं है. वह पार्क नहीं आएगी. इस बार साढ़े 11 बजे उस से मिलने घर आ जाओ. फरजाना घर पर अकेली होगी, मुझे शौपिंग के लिए बाहर जाना है. वापसी लगभग एक बजे होगी. इस बीच मैं अपनी बेटी से मिल सकता हूं. मेरी कोई गलती नहीं, उस के कहने पर मैं घर गया था.''

''अच्छा, सोच कर बताओ, तुम कितने बजे रूमाना के घर पहुंचे थे?''

''मैं ठीक 12 बजे उस के घर पहुंचा था.''

मैं ने जज से कहा, ''जनाबेआली, पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार कत्ल 10 से 11 बजे के बीच हुआ. मुलजिम वहां 12 बजे पहुंचा था. यह पौइंट नोट किया जाए.''

जज ने सिर हिला कर सहमति जताई.

वकील इस्तगासा बोला, ''टाइम गलत भी बताया जा सकता है, जान बचाने की खातिर. मिसेज रूमाना ने भी इस बात से इनकार किया है कि उस ने अफजल को ऐसा कोई मैसेज दे कर 12 बजे घर बुलाया था. ये बनाई हुई कहानी है.''

''यह बात मिसेज रूमाना से गवाही के समय पूछी जा सकती है.''

''जनाबेआली सब से बड़ा सबूत यह है कि आलाए कत्ल पर मुलजिम की अंगुलियों के निशान पाए गए. जब वह 12 बजे पहुंचा था तो आलाए कत्ल पर उस की अंगुलियों के निशान क्यों पाए गए ?''

''आप परेशान न हों, इस का जवाब भी मिल जाएगा. हां, अफजल जब तुम रूमाना के घर पहुंचे तो तुम ने वहां क्या देखा ?''

''मुझ से कहा गया था कि फरजाना घर पर अकेली होगी.''

''तो क्या फरजाना से तुम्हारी मुलाकात हुई ?''

''दरवाजे के दोनों पट भिड़े हुए थे. मैं अंदर पहुंचा तो फरजाना नहीं, वहां फरीद की लाश पड़ी थी. वह सोफे पर उलटा पड़ा था और उस की खोपड़ी चटकी हुई थी. खून से कपड़े व सोफा गीला हो गया था. मैं वहां से उलटे पांव निकल गया, पर दोपहर को मुझे पुलिस ने होटल के कमरे से गिरफ्तार कर लिया. बशीर भाई ने लाख दलीलें दीं पर कुछ नहीं हुआ.''

''क्या तुम ने मौकाएवारदात पर लोहे की रौड को पकड़ा था ?''

''वकील साहब, मैं ने किसी चीज को हाथ नहीं लगाया. इतना भी बेवकूफ नहीं हूं मैं.''

''पर आलाए कत्ल पर तुम्हारी अंगुलियों के निशान हैं.''

''यह बात मेरी समझ से बाहर है, ये कैसे हुआ ?''

''उस आदमी का नाम क्या है जो 14 मई को रूमाना का संदेश ले कर तुम्हारे पास आया था ?''

''वकील साहब, मैं उस बंदे के नाम से वाकिफ नहीं हूं. उस दिन मैं ने उसे पहली बार देखा था.''

फिर उस दिन अदालत का वक्त खत्म हो गया. जिस तरह अफजल ने अदालत में जवाब दिए, उस से वह जरा भी नर्वस नहीं लग रहा था. ऐसे केस लड़ने का एक अलग ही मजा है.

अगली 2 पेशियों में इस्तगासा के 5 गवाह पेश हुए, उन में से एक खुरशीद था, अख्तर कालोनी में रहता था. उस ने हलफ ले कर अपना बयान दिया. वकील ने उस से अफजल के बारे में पूछा तो उस ने कहा, ''जब अफजल और रूमाना का तलाक नहीं हुआ था, मैं भी उन का किराएदार था. अफजल अकसर दुकान पर आता था पर तलाक के बाद उसे घर छोड़ना पड़ा.''

''उस के बाद तुम्हारी उस से कभी मुलाकात हुई थी ?''

''एकदो बार राह चलते सलामदुआ हुई. 15 मई को वाकए के दिन वह मेरी दुकान के सामने वाली गली में गया था, जिस के अंदर रूमाना का घर है.''

''अफजल तुम से रूमाना के बारे में क्या कहता था ?''

''वह रूमाना के बारे में कुछ नहीं कहता था, इधरउधर की बातें होती थीं. उस की बातों से पता लगता था कि वह फरीद को पसंद नहीं करता. वह बहुत चालाक व फितना आदमी था, जो हुआ अच्छा हुआ. अफजल उस से परेशान था.''

''अफजल उस से किस वजह से नफरत करता था कि उस की बातें सुन कर तुम भी फरीद को नापसंद करने लगे.''

''जनाब, उस ने एक हंसताखेलता घर तोड़ डाला. दोनों के बीच फरीद ने ही आग लगाई थी.''

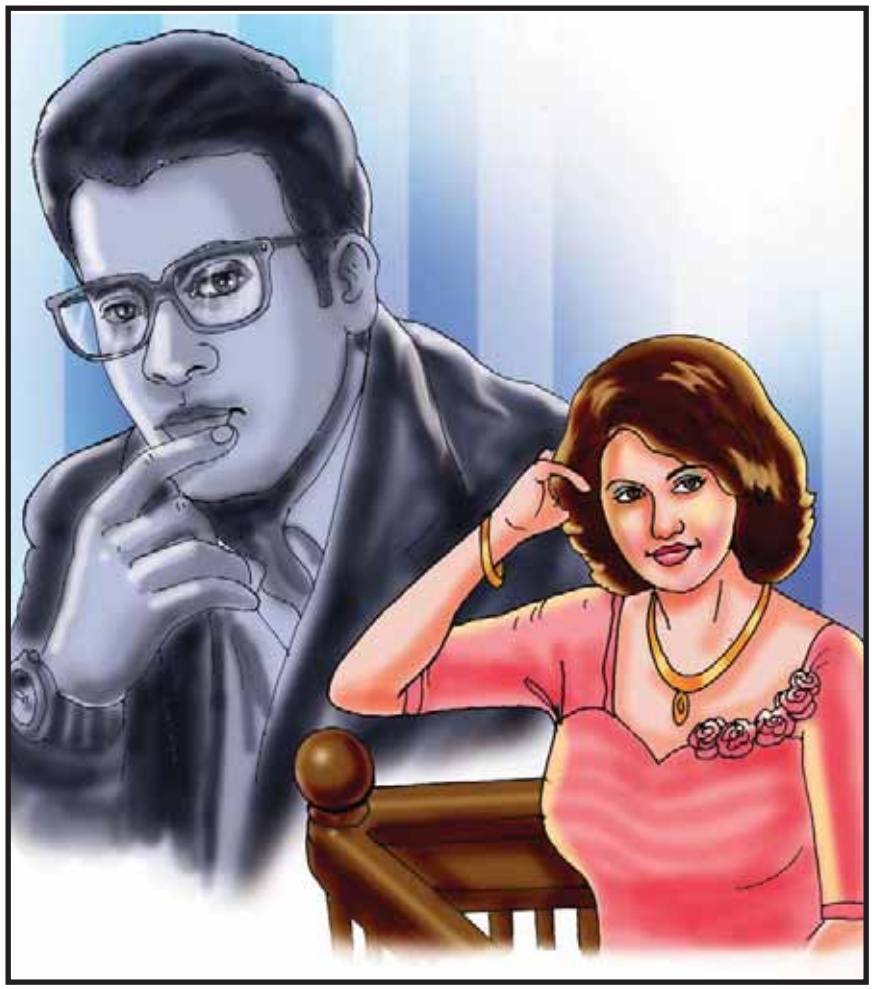

''क्या आप को लगता है कि तलाक का जिम्मेदार फरीद था ? क्या अफजल का रूमाना पर शक सही था ?''

''ये मुझे नहीं मालूम पर अफजल ने जो कुछ कहा, उस से यही लगता है कि वह फरीद से नफरत करता था.''

वकील ने कहा, ''जनाबेआली, 15 मई को उसे अपनी नफरत निकालने का मौका मिल गया. उस ने फरीद को ठिकाने लगा दिया.''

उस की जिरह खत्म होने पर मैं खड़ा हुआ, ''खुरशीद साहब, आप किस चीज का बिजनैस करते हैं ? आप की टाइमिंग क्या है ?''

''मैं कपड़े का कारोबार करता हूं. साढ़े 12 बजे तक अपनी दुकान खोलता हूं. 15 मई को मैं ने 12 बजे दुकान खोली थी.''

''आप ने 15 मई को मुलजिम को रूमाना के घर वाली गली में जाते देखा था ?''

''जनाब उस वक्त 12 बजे थे. अफजल मेरी दुकान के सामने से निकल कर उस के घर वाली गली में गया था.''

मैं जज से मुखातिब हुआ, ''सर, पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में मौत का टाइम 10 से 11 बजे है, मुलजिम 12 बजे उस तरफ जाते देखा गया, इसलिए कातिल कोई और है.''

वकील इस्तगासा जल्दी से बोला, ''हो सकता है उस दिन खुरशीद भाई ने दुकान जल्दी खोल ली हो.''

''होने को तो बहुत कुछ हो सकता है. खुरशीद भाई झूठ क्यों बोलेंगे ? और फिर उन्होंने मुलजिम को गली की तरफ जाते देखा है, घर में घुसते हुए नहीं देखा.''

इस के बाद पड़ोसन जकिया आपा की गवाही हुई. जकिया आपा को हर आएगए पर निगाह रखने का शौक था. जकिया आपा से पूछताछ में वकीले इस्तगासा नहीं मिसेज रूमाना का तलाक का मामला भी उठा. उस की गवाही से यह साबित हुआ कि अफजल 15 मई को 12 बजे के आसपास मिसेज रूमाना के घर गया था.

मेरी बारी आने पर मैं ने कहा, ''जकिया, आप की क्या हर आनेजाने वाले पर नजर रहती है ?''

''मेरा घर रूमाना के घर के सामने है. गली का रास्ता साफ दिखता है. मैं ने अफजल को जाते देखा था. तलाक के पहले फरीद को भी आतेजाते देखती थी. उसे मैं ने समझाया भी था कि पराए मर्द से मेलजोल रखना गलत है पर उस पर असर नहीं हुआ. मैं ने तो तलाक के बाद भी रूमाना को समझाने का फैसला किया था, पर एक ऐसी बात सुनने में आई कि मैं पीछे हट गई.''

''आप ने ऐसी क्या बात सुन ली कि रूमाना को सही राह पर लाने का इरादा ही छोड़ दिया ?''

जकिया आपा मायूसी से बोली, ''मैं ने सुना कि रूमाना ने फरीद से निकाह कर लिया है, अब समझाने को कुछ नहीं बचा था.''

''दैट्स आल योर औनर,'' कह कर मैं ने जिरह खत्म कर दी.

अगली पेशी पर मेरे सामने मिसेज रूमाना खड़ी थी. मैं ने इस पेशी के लिए अच्छाखासा होमवर्क किया था. यह खास गवाह थी. उसे पछाड़ने के लिए मैं ने 2-3 लोग तैयार कर रखे थे. रूमाना 35-40 साल की होगी. काफी खूबसूरत, कपड़े भी मौडर्न और कीमती पहने थी. मैं ने एक खास अंदाज में अपनी जिरह शुरू की, ''मिसेज रूमाना, मैं आप की नाखुश जिंदगी के बारे में कुछ नहीं पूछूंगा, वह सब को मालूम है पर इतना जरूर कहूंगा कि अफजल बदकिस्मत है कि उस ने आप जैसा नायाब हीरा खो दिया.''

रूमाना 35-40 साल की होगी. काफी खूबसूरत, कपड़े भी मौडर्न और कीमती पहने थी. मैं ने एक खास अंदाज में अपनी जिरह शुरू की, ''मिसेज रूमाना, मैं आप की नाखुश जिंदगी के बारे में कुछ नहीं पूछूंगा, वह सब को मालूम है पर इतना जरूर कहूंगा कि अफजल बदकिस्मत है कि उस ने आप जैसा नायाब हीरा खो दिया.'' मेरी बात सुन कर वह गुरूर से मुसकराई, फिर कहा, ''मैं यह सोच कर परेशान थी कि माज़ी व अफजल की बातें कर के मुझे बोर किया जाएगा.''

मेरी बात सुन कर वह गुरूर से मुसकराई, फिर कहा, ''मैं यह सोच कर परेशान थी कि माज़ी व अफजल की बातें कर के मुझे बोर किया जाएगा.''

''जहां जरूरी है वहां तो कहना पड़ेगा. आप ये बताइए कि मेरे क्लायंट अफजल का दावा है कि आप ने उसे 15 मई को 12 बजे फरजाना से मिलने अपने घर बुलाया था. आप का इस बारे में क्या कहना है ?''

''फरजाना 8 बजे स्कूल जाती है और 2 बजे वापस आती है. क्या मैं पागल हूं जो खाली घर में उसे बेटी से मिलने बुलाऊंगी. मैं ने उसे नहीं बुलाया था.''

''यानी आप ने 14 मई को उसे कोई मैसेज नहीं भेजा था ?''

''जी हां, मैं ने उसे कोई मैसेज नहीं भेजा था. उसे अदाकारी का बहुत शौक है, ये सारी ड्रामेबाजी है.''

मैं ने आलाए कत्ल उठा लिया और उस से पूछा, ''क्या आप इसे पहचानती हैं ?''

लोहे की रौड को देखते हुए वह ऐतेमाद से बोली, ''ये वही रौड है, जिस से आप के क्लायंट ने फरीद का खून किया था. इस के एक सिरे पर खून व बाल चिपके हुए हैं. दूसरे सिरे पर अफजल के फिंगरप्रिंट्स हैं. स्टोरी इज वेरी क्लियर.. आप अपने क्लायंट को बहुत मासूम समझते हैं. एम आई राइट ?''

''राइट. पर अगर मेरी नजर में क्लायंट खूनी होता तो मैं ये केस ही नहीं लेता. खैर, ये बताइए आप ने ये खतरनाक रौड अपने घर में क्यों रख रखा था ?''

''इस रौड से मेरा कोई ताल्लुक नहीं है. हो सकता है आप का क्लायंट ही इसे छिपा कर साथ लाया हो.''

''क्या वह मकतूल को भी अपने साथ लाया था ?''

''हो सकता है लाया हो, बहलानेफुसलाने में वह एक्सपर्ट है. संभव है, ड्रामेबाजी कर के ले आया हो.''

''पर मुझे तो पता लगा है कि फरीद आप से मिलने आप के घर आता था.''

''सौ फीसदी सच. वह मुझ से मिलने आता था.''

''मैं ने सुना है आप ने उस से निकाह कर लिया था,'' मैं ने उस के सिर पर बम गिराते हुए पूछा.

वह टस से मस न हुई. ऐतमाद से बोली, ''ये गंदे जहनों की गंदी सोच है. दरअसल मैं घर बदलना चाहती थी. फरीद की एस्टेट एजेंसी थी. मैं उस से सलाह कर के डिफेंस में एक फ्लैट लेना चाह रही थी, इसलिए वह मेरे पास आता रहता था. यह बात इसलिए बता रही हूं कि गंदे जहनों की गंदगी भी साफ हो जाए.'' वह ताने के अंदाज में बोली.

''यह भी तो हकीकत है कि वह हमेशा आप की बेटी की गैरमौजूदगी में आता था. जब आप अकेली होती थीं.''

''ये सच है. उसे मैं फरजाना की गैरमौजूदगी में बुलाती थी, क्योंकि उसे फरीद का घर आना कतई पसंद न था और वह अपने घर से बहुत मोहब्बत करती थी.

''इसे बेचने के लिए राजी नहीं थी. इसलिए फरीद को मैं उस की गैरमौजूदगी में ही बुलाती थी. मैं ने सोचा था कि उस की जानकारी में लाए बिना डिफेंस में घर फाइनल कर लूं, बाद में उसे मना लूंगी. अब तो आप को व अदालत दोनों को तसल्ली हो गई होगी.''

वह अल्लाह की बंदी मेरे हर बाउंसर को बड़ी खूबसूरती से हुक कर के बाउंडरी के बाहर फेंक रही थी. पर मैं भी हथियार फेंकने को राजी न था, मैं ने पूछा, ''क्या 15 मई को सुबह भी मकतूल को आप से मिलने आना था?''

''नहीं, ऐसा कोई प्रोग्राम नहीं था. अगर उसे आना होता तो मैं घर पर होती.''

''वाकए के दिन आप कितने बजे घर से निकली थीं?''

''मैं करीब साढ़े 9 बजे घर से रवाना हुई थी और करीब साढ़े 12 बजे वापसी हुई थी. उस दिन मुझे टेलर के पास जाना था और किचन के लिए ग्रोसरी लेनी थी.'' उस ने तीखे लहजे में कहा.

''अगर मैं गलत नहीं हूं तो आप के टेलर का नाम तारिक है. उस की दुकान मेन रोड पर है जबकि आप ग्रोसरी बड़े बाजार के अलीबख्श से खरीदती हैं.''

''हां, आप सही फरमा रहे हैं.'' वह अचरज से बोली. पहली बार उस के चेहरे पर उलझन नजर आई. पर लहजे का ऐतमाद वैसा ही था.

''मिसेज रूमाना, वारदात के दिन पहले आप टेलर के पास गई थीं फिर ग्रोसरी लेने गई थीं?''

''मैं पहले टेलर के पास गई थी,'' वह सोच कर बोली.

''मैडम, पहले आप सामान लेने गई थीं, आप भूल रही हैं.'' मैं ने सिक्सर मारते हुए कहा.

वह चौंक कर बोली, ''आप यह बात इतने विश्वास से कैसे कह सकते हैं?''

''मेनरोड की कोई भी दुकान 12-साढ़े 12 बजे से पहले नहीं खुलती, जबकि बड़ा बाजार में 9 बजे से रौनक लग जाती है.''

''वकील साहब, आप काफी स्मार्ट और इंटेलिजेंट हैं. मैं आप की इस बात को मानती हूं कि मैं पहले बड़ा बाजार अलीबख्श की दुकान पर गई थी, उस के बाद टेलर के पास गई थी.''

''मैडम, आखिरी सवाल. क्या 15 मई को आप अलीबख्श से ग्रोसरी ले कर अपने टेलर से अपना काम करवाने में कामयाब हो गई थीं?''

''हां, हंडरेड परसेंट.'' वह ढिठाई से बोली.

''एकदम बकवास. एकदम गलत. तुम झूठ बोल रही हो. अदालत की आंख में धूल झोंक रही हो.'' मैं ने तेज लहजे में कहा.

''योर ओनर,'' इस्तगासा के वकील ने

आवाज उठाई, ''वकील साहब मेरे क्लायंट से बदतमीजी कर रहे हैं. ये ज्यादती है.''

जज ने मुझ से कहा, ''ये क्या है बेग साहब ?''

मैं ने ठहरे हुए लहजे में कहा, ''जनाबे आली, ये तो कुछ भी नहीं है. असल माल तो बाहर इंतजार कर रहा है. मैं अदालत की इजाजत से 2 गवाह किराना मर्चेंट अलीबख्श और टेलर तारिक को गवाही के लिए बुलाना चाहता हूं.

''टेलर तारिक आप को बताएंगे कि 15 मई के दिन उन की शौप सारा दिन बंद रही थी, क्योंकि किसी की मौत की वजह से वह अपने गांव गए थे और दूसरे दिन आए. साथ ही अलीबख्श सबूत के साथ अदालत को हकीकत बताएंगे कि मैडम रूमाना ने 14 मई को उन की दुकान से ग्रोसरी खरीदी थी. बिल बुक में रसीद मौजूद है.''

मेरे दोनों गवाहों ने सबूत के साथ गवाही दे कर यह साबित कर दिया कि रूमाना सरासर झूठ बोल रही थी. इस के बाद अदालत में जो कुछ हुआ, आप अंदाजा नहीं लगा सकते. इस गवाही से रूमाना को बुरी तरह बौखला जाना चाहिए था, पर ऐसा नहीं हुआ. वह आराम से विटनेस बौक्स में खड़ी रही. जज ने कड़े लहजे में रूमाना से कहा, ''मिसेज रूमाना आप ने अदालत से झूठ क्यों बोला ?''

रूमाना के बजाए अफजल ने हथकड़ी वाला हाथ ऊपर कर के कहा, ''जनाबेआली, मैं कुछ कहना चाहता हूं.''

जज ने इजाजत दे दी. मेरा क्लायंट बोला और ऐसा बोला कि उस ने मेरी मेहनत की धज्जियां बिखेर दीं. मैं उस कलाकार की अदाकारी देखता रह गया. वह बड़े भावुक अंदाज में बोल रहा था, ''जनाबेआली, मेरा जमीर मुझ पर थूक रहा था, अब मैं खामोश नहीं रह सकता. मैं लगातार अदालत से, वकील साहब से और अपने दोस्त बशीर भाई से झूठ बोलता रहा. हकीकत यह है कि मैं काफी दिनों से मकतूल का पीछा कर रहा था.

''वारदात के दिन मैं उसे बहलाफुसला कर अपनी एक्स वाइफ के घर ले कर गया. उस दिन रूमाना घर पर मौजूद नहीं थी. मकतूल

मेरी चाल में आ गया. ड्राइंग रूम में मैं ने उसे मौत के घाट उतारा लेकिन मेरे जाने के पहले रूमाना आ गई.

''फिर हम ने मिल कर एक स्कीम बनाई, जिस में फरीद के कत्ल का इलजाम मुझ पर आए. रूमाना पर किसी का शक न जाए, फिर सब कुछ वैसा ही होता चला गया जैसा हम ने चाहा था. पर मेरे होशियार वकील ने मुझे शक के दायरे से निकाल कर रूमाना के लिए फांसी का फंदा तैयार कर दिया. हालांकि मैं ने अपने वकील साहब से कहा था कि भले ही अगर बाइजज्जत बरी न करा सकें तो कोई बात नहीं, मुझे थोड़ी सजा दिलवा दें, पर जहीन वकील ने हकीकत खोल दी. जैसा मैं ने सोचा था उस का उलटा हो गया.

''मजबूरन अपने जमीर की आवाज पर मुझे अपनी जुबान खोलनी पड़ी. मैं खुदा को हाजिरनाजिर जान कर इस बात का इकरार करता हूं कि मैं मुजरिम हूं, खून मैं ने किया है. उम्मीद है मेरे इकबाली बयान के एवज में अदालत मुझ पर रहम खा कर कम से कम सजा देगी. फरीद ने मेरा घर उजाड़ दिया था, मुझे दरबदर कर दिया था.''

जज ने मेरी तरफ देखते हुए पूछा, ''बेग साहब, अब आप क्या कहते हैं ?''

मेरे क्लायंट ने मुझे कुछ कहने लायक नहीं छोड़ा था. मैं तल्खी से बोला, ''सबूतों के व गवाहों के बयान की रोशनी में मैं ने अपनी पेशेवराना जिम्मेदारी बहुत अच्छे से निभाई. आगे जो इस का नसीब. मेरे क्लायंट के इकबाले बयान के बाद और जुर्म मान लेने के बाद जाहिर है इस केस से मेरा कोई ताल्लुक नहीं रहा. मैं इसे एक कड़वा घूंट समझ कर हलक से उतार लूंगा.''

जज हां में गरदन हिला कर रह गया.

लेकिन कहानी यहां खत्म नहीं होती. अफजल ने अपने फन की जो अदाकारी दिखाई थी, उसे मैं भूल न सका.

लगभग 6 साल बाद अफजल और रूमाना मेरे पास आए और एक कार्ड मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, ''अगले थर्सडे को हमारी बेटी फरजाना की शादी है. आप जरूर तशरीफ लाएं, हमें बहुत खुशी होगी.''

''क्या मैं ये समझूं कि आप दोनों फिर से एक बंधन में बंधन गए हैं ? अफजल से शादी कर के एक नई जिंदगी शुरू कर दी है ? शायद मैं गलत कह गया...''

''आप बिलकुल ठीक समझे, वकील साहब.''

''फिर तो मैडम रूमाना फरीद की बेवा कहने के बजाए फरीद की कातिल कहना ज्यादा ठीक है. है न ?''

वह सिर झुका कर बोली, ''बेग साहब, इस के अलावा मेरे पास कोई और रास्ता नहीं था. मैं ने फरीद की खातिर अफजल की जिंदगी खराब की. अपनी बेटी का दिल दुखाया और फरीद से शादी कर ली. पर वह कमीना बेहद घटिया इंसान था. उस की नीयत मेरी मासूम बच्ची पर खराब हो गई, उस की इज्जत लूटने की फिराक में रहने लगा था. उस का यही इलाज था.''

पता नहीं रूमाना और क्या कहती रही, पर मैं सोच रहा था, 'रूमाना ने मेरे मुकाबले कहीं बड़ा कड़वा घूंट हलक से उतारा था.' ●

फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

अधिवक्ता मोहम्मद अकरम अंसारी

15 दिन साथ रहा मौत का साया

❑ दिनेश बैजल 'राज'

एडवोकेट अकरम अंसारी का अपहरण फिल्मी अंदाज में किया था. बदमाश 50 लाख रुपए की फिरौती मांग रहे थे. पुलिस ने उन्हें फिरौती भी दे दी लेकिन बाद में अपहर्त्ता पुलिस के चंगुल में ऐसे फंसे कि...

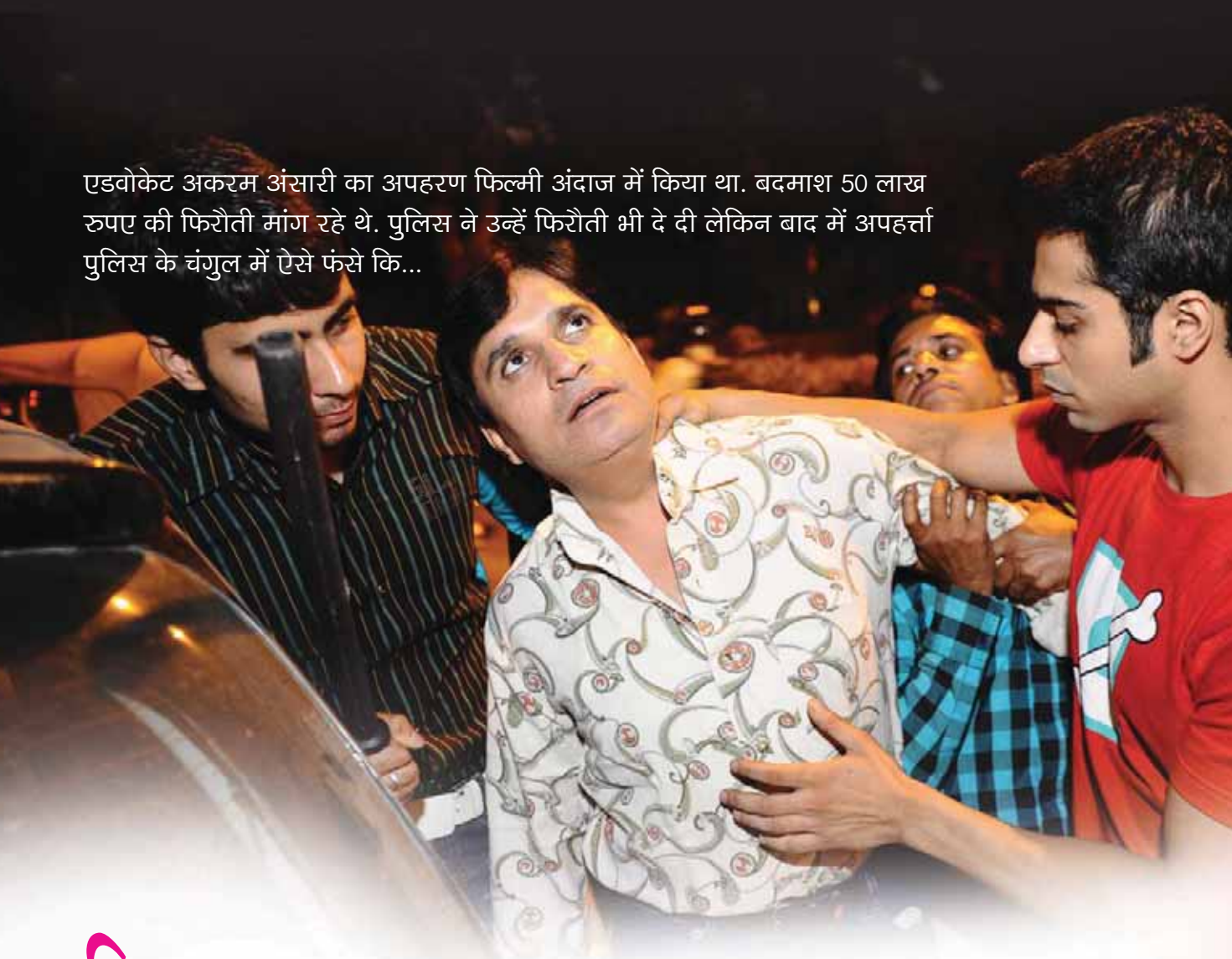

फिरोजाबाद जिले के थाना दक्षिण के अंतर्गत एक मोहल्ला है राजपूताना. यहीं के निवासी 35 वर्षीय मोहम्मद अकरम अंसारी पेशे से वकील हैं. वह 3 फरवरी, 2020 को आगरा के बोदला निवासी अपने रिश्तेदार की बीमार बेटी को देखने के लिए आगरा के श्रीराम अस्पताल गए थे.

बीमार बेटी को देखने के बाद वकील अकरम अंसारी घर जाने के लिए शाम के समय अस्पताल से निकले. चूंकि उन्हें बस अड्डे से बस पकड़नी थी, इसलिए बस अड्डा तक जाने के लिए उन के साढ़ू फैज अंसारी ने उन्हें कारगिल चौराहे से एक आटो में बैठा दिया था, लेकिन वह घर नहीं पहुंचे.

परिजन सारी रात बेचैनी से अकरम अंसारी का इंतजार करते रहे. बारबार वह अकरम को फोन मिला रहे थे, लेकिन उन का फोन स्विच्ड औफ आ रहा था. इस से घरवालों की चिंता बढ़ रही थी. अगली सुबह अकरम के भाई असलम उन्हें तलाशने के लिए आगरा पहुंचे.

वहां पता चला कि साढ़ू फैज अंसारी ने उन्हें बस अड्डा जाने वाले एक आटो में बैठा दिया था. वहां से वह कहां गए, किसी को पता नहीं. इस के बाद असलम ने भाई को रिश्तेदारी व अन्य परिचितों के यहां तलाशा. लेकिन अकरम कहीं नहीं मिले. तब असलम ने आगरा के थाना सिकंदरा में भाई की गुमशुदगी दर्ज करा दी.

दूसरे दिन बुधवार को दोपहर डेढ़ बजे वकील अकरम के छोटे भाई असलम के पास एक फोन आया. फोन करने वाले ने कहा, ''अकरम हमारे कब्जे में है. अगर उस की सलामती चाहते हो तो 50 लाख रुपए का इंतजाम कर लो. फिरौती की रकम कहां पहुंचानी है, इस बारे में फिर से फोन कर के बताएंगे और अगर, पुलिस को बताया तो ठीक नहीं होगा.''

इस पर असलम ने कहा, ''इतनी बड़ी रकम उन के पास नहीं है.''

इस पर अपहर्त्ताओं ने कहा, ''हमें पता है कि तुम्हारे 4 मकान हैं. इसलिए रुपयों का इंतजाम कर लो.'' इस के बाद फोन कट गया.

फिरौती मांगने से असलम का परिवार दहशत में आ गया. असलम ने पूरे घटनाक्रम की जानकारी पुलिस को दी. इस पर सिकंदरा के थानाप्रभारी ने तुरंत अपहरण का मुकदमा दर्ज कर लिया. इस के बाद उन्होंने एक पुलिस टीम को अकरम की बरामदगी के लिए लगा दिया.

वकील अकरम अंसारी का फिरौती के लिए आगरा से अपहरण करने का समाचार जब समाचारपत्रों के अलावा न्यूज चैनलों पर आया तो अधिवक्ताओं ने उन की बरामदगी के लिए पुलिस प्रशासन पर दबाव बनाना शुरू कर दिया.

मामला एक वकील का था, इसलिए पुलिस की 10 टीमें जांच में जुट गईं. इन टीमों का निर्देशन एसएसपी बबलू कुमार स्वयं कर रहे थे. जिस मोबाइल नंबर से असलम के पास फोन आया था सर्विलांस टीम उस की भी जांच में जुट गई.

कई दिन बाद भी जब पुलिस एडवोकेट अकरम के बारे में कोई सुराग नहीं लगा पाई तो 7 फरवरी को फिरोजाबाद सदर तहसील के अधिवक्ताओं ने विरोध प्रदर्शन करते हुए वकील अकरम अंसारी की शीघ्र बरामदगी की मांग की. धीरेधीरे यह आग जनपद की तहसील शिकोहाबाद, जसराना, सिरसागंज के साथ ही आगरा के अधिवक्ताओं में भी फैल गई.

अकरम की बरामदगी न होने से परिजनों में दिनप्रतिदिन बेचैनी बढ़ रही थी. पिता आरिफ अंसारी और मां सरकरा बेगम सीने पर पत्थर रख कर बच्चों को तसल्ली दे रहे थे. अकरम की पत्नी रूबी उर्फ रुकैया अपने दोनों बच्चों के पूछने पर कहती कि पापा दिल्ली रिश्तेदारी में गए हैं, जल्दी आ जाएंगे.

पुराने किडनैपरों की हुई तलाश

उधर पुलिस ने 100 ऐसे बदमाशों की सूची बनाई जो अपहरण के मामलों में पिछले 5 सालों में जेल जा चुके थे. यह बदमाश आगरा, धालपुर, भरतपुर, फिरोजाबाद और इटावा के थे. इन पर काम करने के बाद 10 गिरोह चुने गए. इन के मोबाइल नंबर हासिल किए गए. 3 गिरोह पर पुलिस का शक था लेकिन तीनों ही उस समय मोबाइल फोन इस्तेमाल नहीं कर रहे थे.

इस पर पुलिस पूरी तरह अपने मुखबिरों पर आश्रित हो गई. एसएसपी बबलू कुमार और एसपी (सिटी) बोत्रे रोहन प्रमोद लगातार पुलिस टीमों से संपर्क बनाए हुए थे.

शासन से भी इस मामले में पुलिस से लगातार अपडेट लिया जा रहा था. पुलिस के आला अधिकारी भी पत्रकारों को कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं थे. सिर्फ यही जवाब दिया जा रहा था कि जल्द ही कोई न कोई ठोस सुराग मिलने की उम्मीद है.

अपहृत वकील अकरम के छोटे भाई असलम और मुकर्रम घटना के बाद से ही आगरा में डेरा डाले थे. जैसेजैसे एकएक कर दिन बीत रहे थे परिवार की दहशत बढ़ती जा रही थी.

अकरम के पिता को मिठाई खिलाते लोग

उग्र हो गया आंदोलन

उधर, अधिवक्ताओं का आंदोलन जोर पकड़ रहा था. आगरा व फिरोजाबाद जनपद के अधिवक्ताओं में अपहृत वकील के 12वें दिन भी बरामद न होने से आक्रोश बढ़ गया था. उन्होंने विरोध में हड़ताल शुरू कर दी थी.

उधर अपहृत वकील के भाई असलम के मोबाइल पर अपहर्त्ताओं ने अलगअलग नंबरों व स्थानों से 4 बार फिरौती की काल कर के संपर्क किया. इस दौरान परिजन पुलिस के संपर्क में रहे. काल आने से पुलिस को बदमाशों की पहचान सुनिश्चित हो गई. लेकिन अपहृत की सकुशल बरामदगी को ले कर पुलिस फूंकफूंक कर कदम रख रही थी.

पुलिस दिनरात अपहृत वकील की तलाश में जुटी थी. आगरा में 24 फरवरी, 2020 को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ताजमहल देखने आने वाले थे. उन के आगमन से पूर्व तैयारियों का जायजा लेने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आगरा के दौरे पर आ रहे थे. पुलिस जानती थी कि अधिवक्ता मुख्यमंत्री से मिल कर इस मामले को जरूर उठाएंगे. इसलिए पुलिस के हाथपैर फूल रहे थे. इस बीच पुलिस टीमों ने बाह और धौलपुर के बीहड़ों में डेरा डाल रखा था.

उधर अपहृत वकील के भाई असलम के मोबाइल पर अपहर्त्ताओं ने अलगअलग नंबरों व स्थानों से 4 बार फिरौती की काल कर के संपर्क किया. इस दौरान परिजन पुलिस के संपर्क में रहे. काल आने से पुलिस को बदमाशों की पहचान सुनिश्चित हो गई. लेकिन अपहृत की सकुशल बरामदगी को ले कर पुलिस फूंकफूंक कर कदम रख रही थी. बदमाशों ने जो 50 लाख फिरौती मांगी, उसे कम कर के वह 15 लाख पर आ गए. उन्होंने परिजनों से कह दिया कि इतनी भी रकम नहीं मिली तो वह अकरम को मार देंगे.

अपहृत अकरम को सकुशल छुड़वाने के लिए पुलिस ने परिजनों के साथ मजबूत योजना बनाई. 16 फरवरी को अपहर्त्ताओं का फोन

आने के बाद अकरम के परिजन बदमाशों के बताए गए स्थान आगरा में सिकंदरा स्थित गुरुद्वारे के पास पैसे ले कर पहुंच गए. बदमाशों ने उन से पहचान के लिए अपनी गाड़ी पर झंडा लगाने को कहा था.

भाई असलम अपने दोस्त के साथ किराए की गाड़ी पर झंडा लगा कर पहुंचा. तभी बदमाशों ने कहा कि बाड़ी कस्बा आ जाओ. वहां पहुंचे तो बदमाश लगातार काल कर के अलगअलग जगह बुलाते गए. करौली मार्ग पर आने के बाद उन्होंने कहा कि सिगरेट के 2 पैकेट ले कर आना.

इस के बाद उन्होंने भरतपुर जनपद के गढ़ी भासला क्षेत्र के जंगल में स्थित भैरों बाबा के मंदिर पर रुपयों का बैग रखने को कहा. साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जरा सी भी चालाकी की या पुलिस को बताया तो अपने भाई को जिंदा नहीं देख सकोगे. वह लोग शाम 6 बजे बताए गए स्थान पर रुपयों से भरा बैग रख कर वापस आ गए. इस बीच पुलिस योजनाबद्ध तरीके से वहां मौजूद रही. बदमाशों ने परिजनों से सोमवार, 17 फरवरी को अधिवक्ता अकरम को गुरुद्वारा पर छोड़ने का वादा किया.

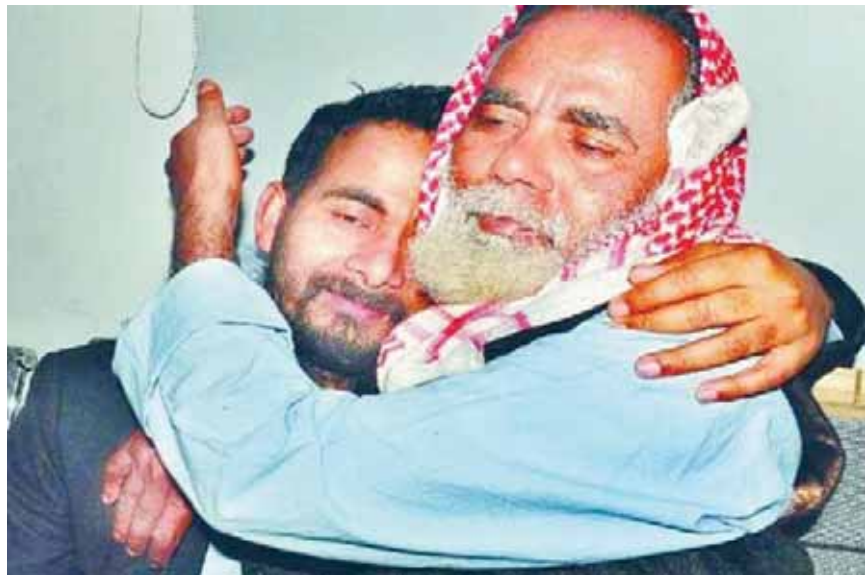

अकरम अंसारी को गले लगाते पिता

जंजीरों से बांध रखा था अकरम को

फिरौती देने के बाद पुलिस टीम सक्रिय हो गई. पुलिस बैग उठाने वाले के पीछे लग गई. इतना ही नहीं, पुलिस ने कस्बा बाड़ी स्थित वह मकान भी पहचान लिया, जिस में अपहर्त्ता नोटों से भरा बैग ले कर गया था. मकान चिह्नित करने के बाद पुलिस ने रात लगभग 8 बजे उस मकान पर दबिश दे कर अपहृत अधिवक्ता अकरम को सकुशल बरामद कर लिया. अपहर्त्ताओं ने उन्हें जंजीरों से बांध कर रखा था.

पुलिस ने मकान से 3 अपहर्त्ताओं 56 वर्षीय गैंग लीडर उग्रसैन निवासी कस्बा बाड़ी, धौलपुर, लाखन गुर्जर निवासी सूखे का पुरा, थाना कंचनपुरा, धौलपुर के अलावा सुरेंद्र गुर्जर निवासी कुआंखेड़ा, बिहारी का पुरा, थाना सदर, धौलपुर शामिल को हिरासत में ले लिया. उन की निशानदेही पर पुलिस ने राकेश व उस के भाई मुकेश निवासी जमूहरा, थाना बाड़ी, धौलपुर के साथ उग्रसैन की पत्नी उर्मिला को भी गिरफ्तार कर लिया.

फिरोजाबाद में पैदल मार्च निकालते बार एसोसिएशन के वकील

राकेश व मुकेश दोनों उग्रसैन के साले हैं. फिरौती के लिए फोन लाखन करता था. लाखन पर 7-8 मुकदमे चल रहे हैं. उग्रसेन व सुरेंद्र गुर्जर पर भी कई मुकदमे हैं. इन में अपहरण व जानलेवा हमले शामिल हैं.

सुरेंद्र गुर्जर पूर्व में राजस्थान के केशव और हनुमंत गिरोह में काम कर चुका है. उस के साथ उग्रसैन और लाखन भी थे. यह मध्य प्रदेश और आगरा में अपहरण कर फिरौती वसूल चुके हैं. गिरोह ने पहले आगरा के सदर क्षेत्र में दंत चिकित्सक का अपहरण कर मोटी फिरौती वसूली थी.

अधिवक्ता अकरम अंसारी की सकुशल बरामदगी की जानकारी जैसे ही उन के परिजनों को मिली तो पूरे परिवार की आंखें खुशी से छलछला उठीं. उन के आवास पर लोगों ने खुशी में आतिशबाजी की. पुलिस अधिकारी पूरे दिन अकरम से पूरे घटनाक्रम की जानकारी लेते रहे. 25 फरवरी को अकरम के घर आते ही मां ने उन्हें गले से लगा लिया. बच्चे भी उन

से लिपट गए. अकरम ने बताया कि वह मौत के मुंह से निकल कर आए हैं.

26 फरवरी, 2020 को पुलिस लाइन में एडीजी अजय आनंद ने प्रैसवार्ता आयोजित कर इस सनसनीखेज अपहरण कांड का परदाफाश किया. उन्होंने बताया कि एसएसपी बबलू कुमार के निर्देशन में फूलप्रूफ औपरेशन चला कर पुलिसकर्मियों की 10 टीमें बनाई गई थीं. जिस में सीओ (कोतवाली) चमन सिंह चावड़ा, सर्विलांस टीम प्रभारी नरेंद्र कुमार, इंसपेक्टर कमलेश सिंह, अरविंद कुमार, अनुज कुमार, अजय कौशल, राजकमल, बैजनाथ सिंह, उमेश त्रिपाठी, एसआई राजकुमार गिरि, कुलदीप दीक्षित अरुण कुमार बालियान, सुशील कुमार, हैड कांस्टेबल आदेश त्रिपाठी, कांस्टेबल अजीत, प्रशांत, करन, विवेक, राजकुमार, अरुण कुमार, आशुतोष त्रिपाठी, रविंद्र, प्रमेश आदि शामिल थे.

पुलिस ने अधिवक्ता को सकुशल बरामद करने के साथ 5 अपहर्त्ताओं व एक महिला को गिरफ्तार कर फिरौती की रकम, जो 15 लाख बता कर केवल साढ़े 12 लाख बैग में रखी थी, भी बरामद कर ली. एडीजी ने बताया कि अपहृत को 2-3 दिन पहले बरामद कर सकते थे. लेकिन उन की सकुशल बरामदगी के लिए इंतजार करना पड़ा.

अलगअलग हुलिया बनाए पुलिस ने

टीमों के साथ सीओ, एसपी, एसएसपी, तक ने बीहड़ में डेरा डाला. अपहर्त्ताओं की नजर से बचने के लिए पुलिसकर्मियों ने न सिर्फ अपना हुलिया बदला, बल्कि बकरी चराने से ले कर खेतों में मजदूर बन कर काम किया. पुलिस ने फिरौती के लिए फोन करने वाले की आवाज भी रिकौर्ड की. वह आवाज मुखबिरों को सुनाई गई. इस के बाद ही पुलिस को सुराग मिला.

पुलिस ने फिरौती के लिए फोन करने वाले की आवाज भी रिकौर्ड की. वह आवाज मुखबिरों को सुनाई गई. इस के बाद ही पुलिस को सुराग मिला. पुलिस ने 40 घंटे के औपरेशन के बाद अधिवक्ता अकरम अंसारी को मुक्त करा लिया. इस औपरेशन का नाम 'अकरम मुक्ति' रखा गया था.

पुलिस ने 40 घंटे के औपरेशन के बाद अधिवक्ता अकरम अंसारी को मुक्त करा लिया. इस औपरेशन का नाम 'अकरम मुक्ति' रखा गया था. पुलिसकर्मी कोड वर्ड बांकेबिहारी और वंदेमातरम में एकदूसरे से बात करते थे.

बदमाशों ने फिरौती के लिए 4 बार फोन किया था. पहली काल 5 फरवरी को भरतपुर के रूपवास से की गई, इस के लिए सिम खेरागढ़ से ली गई थी. दूसरी काल 8 फरवरी को की गई, जबकि 12 व 15 फरवरी की काल कस्बा बाड़ी से की गई थीं. काल करने के लिए हर बार नया मोबाइल और नया सिम खरीदा गया था.

इस के साथ ही हर बार अपहर्त्ता लोकेशन भी बदलते रहे थे. उन्होंने कहा कि पुलिस ने न सिर्फ अधिवक्ता अकरम अंसारी को सकुशल बरामद किया बल्कि 5 अपहर्त्ताओं और एक महिला को गिरफ्तार कर उन से फिरौती की वसूली गई रकम साढ़े 12 लाख भी बरामद कर ली. पुलिस ने बैग में रखी यह रकम 15 लाख बताई थी. डीजीपी ने टीम के इस कार्य की सराहना की. इस संबंध में अपहरण की जो कहानी सामने आई वह इस प्रकार थी—

राजस्थान के गुर्जर गैंग ने बीच आगरा शहर से अधिवक्ता अकरम अंसारी का अपहरण किया था. दरअसल 3 फरवरी, 2020 को अकरम को उन के साढ़ू ने फिरोजाबाद जाने के लिए एक आटो में बैठा दिया था. अकरम सिकंदरा स्थित आईएसबीटी पर उतरे लेकिन वहां फिरोजाबाद जाने के लिए कोई बस नहीं मिली.

जब बस नहीं मिली तब अकरम दूसरे आटो से भगवान टाकीज पहुंच कर बस का इंतजार करने लगे. वहां पर आगरा आने व जाने वाली बसें रुकती हैं. शाम 7.20 बजे एक बोलेरो उन के पास आ कर रुकी और ड्राइवर ने पूछा, ''कहां जाओगे?''

अकरम ने फिरोजाबाद जाने की बात कही तो ड्राइवर ने कहा, ''हां, फिरोजाबाद ही जा रहे हैं.'' उस समय उस बोलेरो में चालक के अलावा 3 लोग और बैठे थे. उस गाड़ी में

अकरम अंसारी को मुक्त कराने वाली टीम के साथ बार एसोसिएशन के सदस्य

पुलिस टीम के साथ अकरम अंसारी

अकरम के बैठते ही ड्राइवर चलने लगा तो अकरम ने कहा कि और सवारियां ले लो तो चालक ने कहा कि आगे से ले लेंगे.

10-12 मिनट गाड़ी चलने के बाद अचानक बगल में यात्री के रूप में बैठे बदमाश ने अकरम को सीट के नीचे गिरा कर दबोच लिया और धमकी दी कि यदि चिल्लाया तो गोली मार देंगे. इस के साथ ही उन के ऊपर कपड़ा डाल दिया. बदमाश कह रहे थे यदि तू वीरेंद्र नहीं हुआ तो हम तुझे छोड़ देंगे. अपहर्त्ता ये बात इसलिए कह रहे थे ताकि वह शोर न मचाए. उन्होंने अकरम की आंखों पर पट्टी भी बांध दी.

गाड़ी चलती रही. रात 11 बजे अपहर्त्ता अधिवक्ता अकरम को एक सुनसान जगह पर ले गए. वहां एक घर में उन्हें रखा गया. यह घर धौलपुर के बाड़ी कस्बे में था. वहां 2-3 कमरे थे. पैरों में जंजीर बांध कर उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया. आंखों पर पट्टी बांधने के साथ ही अकरम के मुंह पर टेप भी लगा दिया. उन का मोबाइल उन लोगों ने गाड़ी में ही छीन लिया था. कमरे पर ही बदमाशों ने अकरम से उस के बारे में पूरी जानकारी लेने के बाद दूसरे दिन फिरौती के लिए परिजनों को फोन किया था.

कमरे में ही चटाई पर अकरम सोते थे. रात में सोने के लिए एक हलकी रजाई दी गई थी. 24 घंटे 2 युवक पहरेदारी पर रहते थे. रात में एक बदमाश भी पास में ही दूसरी चटाई पर सोता था. कई दिन बीत गए. बदमाश बीचबीच में आ कर उन्हें धमका जाते थे. कहते कि तेरे परिवार के लोग फिरौती की रकम नहीं दे पा रहे हैं, हम तुझे मार देंगे.

हालात देख कर बचना था मुश्किल

वहां जिस तरह का माहौल चल रहा था इस से अकरम को लग रहा था कि वह अपहर्त्ताओं के चंगुल से मुक्त नहीं हो पाएंगे. उन्हें डर था कि परिजन अपहर्त्ताओं की मांग पूरी नहीं कर पाएंगे. उन का अब घर जाना मुश्किल होगा. बदमाश खाने के लिए कभी रोटी सब्जी तो कभी रोटी दाल देते थे. अकरम रात को ही खाना खाते थे. 15 दिन तक अकरम को नहाने नहीं दिया गया.

मकान में एक महिला और उस का पति था. मकान में आगे व पीछे दरवाजे थे. आगे के दरवाजे पर ताला लगा रहता था. अन्य लोग मकान के पीछे के दरवाजे से आतेजाते थे. अकरम ने बताया कि बदमाशों ने उन के साथ मारपीट नहीं की.

अकरम हर दिन यही दुआ करते थे कि पुलिस उन्हें कब छुड़ाएगी ? दहशत की वजह से नींद भी नहीं आती थी. जैसेजैसे दिन निकलते जा रहे थे, उम्मीद भी कम होती जा रही थी. मगर, रविवार 23 फरवरी की रात को पुलिस आई और अकरम को मुक्त करा लिया. अपनी दास्ता बयां करतेकरते अकरम की आंखें भर आई थीं.

पुलिस लाइन में अकरम के भाई मोउज्जम, असलम, मोहम्मद सोहेल, मुकर्रम और पिता आरिफ अंसारी आए थे. भाइयों ने अकरम को गले लगा लिया. परिवार से मिल कर अकरम की खुशी का ठिकाना नहीं था. पुलिस लाइन में प्रैसवार्ता के दौरान अकरम ने पुलिस अधिकारियों को मिठाई खिलाई और उन को धन्यवाद दिया.

पुलिस ने बताया कि धौलपुर के बीहड़ में अपहर्त्ताओं के 25 गैंग सक्रिय हैं. यह गैंग शिकार को बीहड़ में पकड़ कर ले जाने के बाद फिरौती वसूलते हैं. पुलिस ने सौ से ज्यादा गैंग के बारे में पड़ताल की.

इन में 25 गैंग के सक्रिय होने के बारे में पता चला. इन में गब्बर, केशव, रामविलास, भरत, धर्मेंद्र, लुक्का, मुकेश ठाकुर गैंग विशेष रूप से सक्रिय हैं.

यह गैंग अलगअलग तरीके से फिरौती के लिए अपहरण की वारदात को अंजाम देते हैं. इन के खिलाफ उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में अनेक मुकदमे दर्ज हैं.

अपहृत वकील को अपहर्त्ताओं के चंगुल से मुक्त कराने वाली पुलिस टीम को एडीजी अजय आनंद ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया. पुलिस ने सारी काररवाई पूरी कर गिरफ्तार अपहर्त्ताओं को अदालत में पेश किया, जहां से सभी को जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित है

मुजफ्फरपुर, बिहार

मुजफ्फरपुर (बिहार) बालिका गृह रेप कांड

सजा आजीवन कारावास

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

ब्रजेश ठाकुर एक दैनिक अखबार का मालिक ही नहीं, बल्कि कई सामाजिक संस्थाओं का संचालक भी था. समाजसेवा के नाम पर वह अपने बालिकागृह में रहने वाली लड़कियों का क्रूर तरीके से शारीरिक और मानसिक शोषण करता था. मामला प्रकाश में आने के बाद अब हवस के इस दरिंदे और अन्य लोगों को कोर्ट ने जो सजा सुनाई है, वह औरों के लिए एक सबक है.

छायांकन: मैडलिंग

एनजीओ की लड़कियों के यौनशोषण का मुजरिम ब्रजेश ठाकुर

उस दिन 11 फरवरी, 2020 की तारीख थी. सुबह से ही देश की राजधानी दिल्ली के साकेत कोर्ट के बाहर के गरमागरम माहौल को देख कर ऐसा लग रहा था, जैसे यहां कोई बड़ा फैसला सुनाया जाने वाला है. अदालत परिसर के बाहर स्थानीय समाचारपत्रों के खबरनवीस और इलैक्ट्रोनिक मीडिया के दिग्गज पत्रकारों का भारी जमावड़ा लगा हुआ था. पत्रकारों के साथसाथ अदालत परिसर खाकी वरदीधारियों से भरा हुआ था. चप्पेचप्पे पर अत्याधुनिक असलहों के साथ पुलिसकर्मी तैनात थे.

इसी से अनुमान लगाया जा रहा था कि यहां कोई बड़ा फैसला आने वाला है. सच भी यही था. उस दिन बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के बहुचर्चित बालिका गृह दुष्कर्म कांड का फैसला आने वाला था. जिस में 34 बच्चियों से रेप व यौन शोषण का मामला प्रकाश में आया था.

दोपहर के करीब 3 बज रहे थे. साकेत न्यायालय की पाक्सो अदालत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश सौरभ कुलश्रेष्ठ अपने न्याय के आसन पर विराजमान थे. अदालत कक्ष में बने कटघरे में 20 अभियुक्त कतारबद्ध तरीके से खड़े थे. इस से पहले 4 फरवरी, 2020 को अभियोजन पक्ष के वकील अनिरुद्ध सिंह और बचाव पक्ष के अधिक्ताओं प्रमोद कुमार दूबे व ज्ञानेंद्र मिश्र ने सजा पर बहस पूरी कर ली थी.

इस के बाद जज ने सजा की तारीख 11 फरवरी, 2020 मुकर्रर कर दी. 1546 पृष्ठों के फैसले की कौपी न्यायाधीश सौरभ कुलश्रेष्ठ के सामने थी. उन्होंने फैसले में ब्रजेश ठाकुर को धारा 120बी (आपराधिक षडयंत्र) 324 (खतरनाक हथियार या अन्य माध्यमों से चोट पहुंचाना), 323 (जानबूझ कर चोट पहुंचाना), उकसाने, पोक्सो एक्ट की धारा 21 (अपराध होने की जानकारी देने में विफल रहने) और किशोर न्याय कानून की धारा 75 (बच्चों के साथ क्रूरता) के तहत दोषी ठहराया.

न्यायाधीश श्री कुलश्रेष्ठ ने आगे कहा, ''सेवा समिति के मुखिया ब्रजेश ठाकुर के साथसाथ डिस्ट्रिक्ट चाइल्ड प्रोटेक्शन औफिसर रवि कुमार रोशन, चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के सदस्य विकास कुमार और ब्रजेश ठाकुर के ड्राइवर गुड्डू पटेल को दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास (उम्र की आखिरी सांस तक जेल में बंद रहना) की सजा सुनाई जाती है.

''अभियुक्त ब्रजेश ठाकुर के ऊपर 20 लाख रुपए का आर्थिक दंड लगाया जाता है. जिस में 4 लाख रुपए पीड़िता को मुआवजा दिया जाएगा. रवि कुमार रोशन के ऊपर डेढ़ लाख और विकास कुमार के ऊपर 14 लाख रुपए का आर्थिक दंड लगाया जाता है. ये सजा जेल में बंद रहने से लागू की जाती है.''

उन्होंने आगे कहा, ''अभियुक्त किरण कुमारी, मधु कुमारी, रामानुज ठाकुर, मीनू देवी, विजय तिवारी और कृष्ण कुमार को उम्र कैद की सजा सुनाई जाती है. अपराध में इन की भी भागीदारी बराबर की रही है. इन के अलावा नेहा कुमारी, हेमा मसीह, अश्वनी कुमार, मीना देवी, मंजू देवी, चंदा और रमा शंकर को 10-10 साल की सजा सुनाई जाती है. शेष बची इंदू कुमारी को 3 साल और रोजी रानी को 6 महीने की सजा सुनाई जाती है. सभी सजा उन के जेल में बंद रहने से लागू मानी जाएगी.''

न्यायाधीश सौरभ कुलश्रेष्ठ का फैसला सुनते ही सेवा समिति का मुखिया ब्रजेश ठाकुर अदालत कक्ष में फफकफफक कर रो पड़ा.

खैर, जज कुलश्रेष्ठ के फैसला सुनाने के तुरंत बाद पुलिस ने सभी 20 अभियुक्तों को हिरासत में ले लिया और तिहाड़ जेल भेज दिया. जहां वे पहले से बंद थे.

मुजफ्फरपुर बालिका गृह दुष्कर्म कांड की नींव कब पड़ी और यह केस कैसे खुला, यह जानने के लिए हमें 2 साल पीछे के घटनाक्रम पर जाना होगा.

बात फरवरी, 2018 की है. मुंबई की टाटा इंस्टीट्यूट औफ सोशल साइंस 'टिस' की 'कोशिश' इकाई ने बिहार प्रदेश के मुजफ्फरपुर जिले के नगर थाना क्षेत्र में स्थित बालिका संरक्षण गृह के सेवा संकल्प एवं विकास समिति की औडिट की थी. इस बालिका गृह में कुल 44 लड़कियां रहती थीं. टीम ने अपने औडिट में पाया था कि बालिका गृह का रखरखाव सही नहीं है और बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार ही नहीं, अपितु शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना की शिकायतें भी मिली थीं.

'टिस' ने औडिट करने के बाद अपनी रिपोर्ट समाज कल्याण विभाग को सौंप दी. इस के पहले नवंबर 2017 में 'कोशिश' के स्टेट कोर्डिनेटर कायम मासूमी, सुनीता विश्वास व आसिफ इकबाल बालिका गृह आए थे.

यहां पर डरी सहमी बच्चियों ने टीम के सदस्यों को बताया था कि उन के साथ शारीरिक शोषण किया जाता है. उसी पीड़ा को टीम ने अपनी औडिट रिपोर्ट में उल्लेख किया था.

'टिस' की सनसनीखेज रिपोर्ट पढ़ कर समाज कल्याण विभाग के निदेशक दिवेश शर्मा बुरी तरह उछल गए. औडिट रिपोर्ट में उल्लेख किया था कि मुजफ्फरपुर बालिका गृह में रह रही 44 लड़कियों में से 42 की मैडिकल जांच कराए जाने पर उन में से 34 लड़कियों के साथ दुष्कर्म किए जाने की पुष्टि हुई थी.

संरक्षण गृह की 34 लड़कियों के साथ दुष्कर्म होना कोई छोटीमोटी बात नहीं थी. मामला प्रकाश में आते ही जिला ही नहीं पूरे राज्य में भूचाल खड़ा हो सकता था. मीडिया नाक में दम कर देती. काफी सोचविचार कर निदेशक दिवेश शर्मा ने 'टिस' की औडिट रिपोर्ट को लापरवाही से हलके में लेते हुए उसे ठंडे बस्ते के हवाले कर दिया और कान में तेल डाल कर चुपचाप सो गए.

रिपोर्ट पर 4 माह तक कोई कारर्वाई न होते देख टाटा इंस्टीट्यूट औफ सोशल साइंस की 'कोशिश' टीम परेशान हो गई थी लेकिन वह चुप बैठने वालों में से नहीं थी. करीब 100 पेज की सोशल औडिट रिपोर्ट को 'टिस' टीम ने 26 मई, 2018 को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, पटना और मुजफ्फरपुर के जिला प्रशासन को भेज दी.

शासन और प्रशासन के हाथों में औडिट रिपोर्ट पहुंचते ही भूचाल आ गया. सोया हुआ जिला प्रशासन सिर के बल दौड़ने लगा. औडिट रिपोर्ट को दबा कर ठंडे बस्ते के हवाले करने वाले समाज कल्याण विभाग के निदेशक दिवेश शर्मा की आंखों से नींद उड़ गई. उन्होंने अपनी भूल स्वीकार करते हुए कहा कि उन से बड़ी भूल हुई, जो उन्होंने रिपोर्ट को बड़े हलके ढंग से लिया था.

> पीड़ित लड़कियों ने अपनी जुबान खोली तब जा कर पता चला कि यौनशोषण कराने में निदेशिका मधु मुख्य किरदार निभाती थी. घटना के परदाफाश के बाद से मधु भूमिगत हो गई. ब्रजेश ठाकुर के महापाप लोक की एकलौती राजदार वही थी.

इस के बाद दिवेश शर्मा ने बालिका गृह का संचालन कर रही एनजीओ के मालिक और सरगना ब्रजेश ठाकुर, उस की पर्सनल असिस्टेंट मधु, बालिका गृह की अधीक्षिका इंदू कुमार, सीडब्ल्यूसी के अध्यक्ष दिलीप कुमार वर्मा, समिति की कार्यकारी सदस्य किरण, मंजू, हेमा, नेहा, चंदा समेत 11 लोगों के खिलाफ महिला थाने में दुष्कर्म के अलावा विविध धाराओं 120बी, 324, 323 आईपीसी एवं पाक्सो एक्ट की धारा 21 और किशोर न्याय कानून की धारा 75 के तहत मुकदमा दर्ज कराया. मुकदमा दर्ज होने के बाद इस की जांच की जिम्मेदारी महिला थाने की प्रभारी ज्योति कुमारी को सौंपी गई थी.

ये बालिका गृह बनने के बाद से ही विवादों में रहा है. सन 2013 में जब इस बालिका गृह की शुरुआत हुई थी, तो उस के कुछ ही दिनों के बाद 14 दिसंबर 2013 को यहां से 4 बच्चियां भाग गई थीं.

उस वक्त मुजफ्फरपुर के नगर थाने में बालिका गृह के अधीक्षक की तरफ से 15 दिसंबर, 2013 को इस की तहरीर थाने में दी थी. इस के बाद 16 दिसंबर, 2013 को तत्कालीन थानाप्रभारी जितेंद्र कुमार ने रिपोर्ट दर्ज कर ली. रिपोर्ट दर्ज करने के बाद थानाप्रभारी ने न तो बालिका गृह की जांच की और न ही बच्चियों की तलाश के लिए कुछ किया.

बालिका गृह से भागने वाली ये लड़कियां दिल्ली, इटावा, मधुबनी के फुलपरास और मुजफ्फरपुर की अहियापुर की रहने वाली थीं. अब जब इस बालिका गृह की जांच शुरू हुई तो 2013 का ये मामला भी खुल गया. इस मामले में तत्कालीन थाना नगर के थानाध्यक्ष जितेंद्र कुमार की भूमिका भी संदिग्ध पाई गई.

डीएसपी (टाउन) ने 24 जुलाई, 2018 को ही जितेंद्र कुमार पर एक्शन लेने के लिए एसएसपी हरप्रीत कौर को रिपोर्ट भेज दी थी. हालांकि इस मामले में जितेंद्र कुमार ने भी सफाई दी. उन का कहना था कि जो लड़कियां भागी थीं, वह वापस आ गई थीं. बालिका गृह की ओर से भी ऐसा ही बताया गया था. इस से पहले कि एसएसपी थानाप्रभारी जितेंद्र कुमार के खिलाफ कोई कारर्वाई करतीं, मामला मुजफ्फरपुर पुलिस की जद से आगे निकल कर सीबीआई के पास पहुंच गया.

बालिका गृह में 34 बच्चियों से रेप का मुख्य आरोपी ब्रजेश ठाकुर था. इस के खिलाफ 30 जुलाई, 2018 की शाम को एक और केस दर्ज करवाया गया था. जिला बाल संरक्षण इकाई के निदेशक दिवेश शर्मा ने पुलिस में केस दर्ज करवाया था कि ब्रजेश ठाकुर की एक और संस्था स्वधार गृह में 11 महिलाएं गायब हो गई थीं. उन का पता नहीं चला था.

जो महिलाएं अपने परिवार से अलग हो जाती हैं, उन्हें शरण देने के लिए मुजफ्फरपुर में स्वधार गृह बना था. यहां ऐसी महिलाओं

को अपने पैरों पर खड़ा होने की वहां ट्रेनिंग दी जाती है. इस स्वधार गृह का कर्ताधर्ता भी ब्रजेश ठाकुर ही था.

जिला बाल संरक्षण इकाई के निदेशक दिवेश शर्मा के मुताबिक जब 20 मार्च, 2018 को स्वधार गृह में टीम जांच करने के लिए पहुंची थी, तो उस वक्त यहां पर 11 महिलाएं थीं.

लेकिन बालिका गृह में बच्चियों से रेप की बात सामने आने के बाद 9 जून, 2018 को जांच टीम फिर से स्वधार गृह पहुंची तो पता चला कि स्वधार गृह बंद हो चुका है. स्वधार गृह पर ताला लटका हुआ था.

हालांकि उस वक्त निदेशक ने कोई एक्शन नहीं लिया. लेकिन अब जब मामला सीबीआई तक पहुंच गया तो निदेशक को भी याद आया कि 11 महिलाएं भी गायब हैं. इस के बाद उन्होंने नगर थाने में ब्रजेश ठाकुर के खिलाफ एक और केस दर्ज करवा दिया. बावजूद इस के निदेशक दिवेश शर्मा पर भी अंगुलियां उठनी स्वभाविक थीं. आखिर किस जानकारी के 52 दिन बाद उन्होंने एफआईआर दर्ज क्यों करवाई ?

बालिका गृह में दस्तावेज खंगालती सीबीआई

बहरहाल, बालिका संरक्षण गृह में बड़े पैमाने पर चल रहे देह व्यापार के खुलासे के बाद जिले के आला अफसर आईजी (जोन) सुनील कुमार, डीआईजी अनिल कुमार सिंह, एसएसपी हरप्रीत कौर, एसपी (सिटी) उपेंद्रनाथ वर्मा और डीएसपी आनंद कुमार मुकुल के होश फाख्ता हो चुके थे. उन्होंने किशोरियों को न्याय दिलाने के लिए कमर कस ली थी.

बालिका गृह से मुक्त कराई गई किशोरियों को मोकामा नाजरथ हौस्पिटल में भरती कराया गया जहां उन का इलाज शुरू हुआ.

विवेचक ज्योति कुमारी किशोरियों के बयान लेने मोकामा नाजरथ हौस्पिटल पहुंचीं. किशोरियों के बयान से हैरान कर देने वाले तथ्य सामने आए. किशोरियों ने बयान दिया कि बालिका गृह में काम करने वाली महिला कर्मचारी न केवल रेप में साथ देती थीं बल्कि खुद भी बच्चियों का यौनशोषण करती थीं.

एक 16 साल की किशोरी ने विवेचक को बताया था कि बालिका गृह में नींद की गोलियां खाने में मिला कर देने के बाद इन के साथ गलत काम किया जाता था. सुबह जागने के बाद गुप्तांग में असहनीय दर्द होता था. तब देखभाल करने वाली वहां की इंदु आंटी ही उन्हें बताती थीं कि इन के द्वारा ही गलत काम किया गया है.

बहरहाल, 2 जून, 2018 को विवेचक ज्योति कुमारी ने एनजीओ के मालिक और मुख्य आरोपी ब्रजेश ठाकुर और संस्था से जुड़े 8 लोगों को महिला थाने बुला कर पूछताछ शुरू की और उसी दिन बालिका संरक्षक गृह सील कर दिया. पूछताछ के बाद 9 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया.

गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही संस्था की पीए कही जाने वाली मधु और दिलीप कुमार वर्मा भूमिगत हो गए. इधर गिरफ्तार 9 आरोपियों को अदालत में पेश किया गया. जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. इधर फरार आरोपी मधु और दिलीप कुमार वर्मा की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने जगहजगह इश्तहार लगवाए और उन की अचल संपत्ति की कुर्की की कररवाई में जुट गई.

चूंकि यह मामला कोई छोटामोटा मामला नहीं था. मुजफ्फरपुर से प्रकाशित होने वाले दैनिक अखबार, 'प्रातः कमल' के मालिक और मीडिया जगत के कार्कून कहे जाने वाले सिंडीकेट के दबंग मालिक ब्रजेश ठाकुर से जुड़ी हुई बहुचर्चित घटना थी. जिस की पहुंच सत्ता के गलियारों में बहुत ऊपर तक थी. जिस के एक इशारे पर बड़ेबड़े सफेदपोश माथा टेकने के लिए समर्पित रहते थे.

ब्रजेश ठाकुर के सिंडीकेट की खेवनहार उस की अपनी हनीप्रीत कही जाने वाली महिला मित्र मधु थी. सरगना ब्रजेश के पापलोक का लेखाजोखा मधु ही रखती थी. इसलिए यह मामला तूल पकड़ने लगा था.

इस से पहले कि पुलिसिया कारवाई की पृष्ठभूमि महिमामंडित करें. उस से पहले ब्रजेश ठाकुर और उस की महिला दोस्त मधु के जीवन के रंगीन पन्नों का यहां उल्लेख करना अनिवार्य हो गया है, जो कुछ ऐसे है—

करीब 55-60 वर्षीय ब्रजेश ठाकुर मूलरूप से मुजफ्फरपुर का रहने वाला है. इस के पिता का नाम राधामोहन ठाकुर था. जिन की वर्षों पहले मृत्यु हो गई थी. वह एक समाजसेवक थे. उन के मन और हृदय में समाजसेवा भरी हुई थी. इसी सेवा से ओतप्रोत हो कर वे समाज के लिए कुछ ऐसा करना चाहते थे, जिस से

दुनिया से विदा होने के बाद समाज के लोग उन्हें याद करें.

इसी सोच को साकार रूप देने के लिए उन्होंने अपने हाथों में कलम उठा ली और चल पड़े पत्रकारिता की दोधारी तलवार की दुरूह राह पर. पत्रकारिता जगत में राधामोहन ठाकुर बड़े नाम के रूप में विख्यात हुए, समाज के छोटेबड़े तबके में उन की पहचान बनी और लोगों का उन्हें प्यार और सम्मान मिला.

प्यार और सम्मान की बदौलत ही कर्मयोगी राधामोहन ठाकुर ने 1982 में मुजफ्फरपुर से एक हिंदी अखबार का बीजारोपड़ किया. उस बीज रूपी अखबार का नाम 'प्रातः कमल' रखा. धीरेधीरे 'प्रातः कमल' बड़ा होने लगा. राधामोहन ठाकुर की पत्रकारों के बीच अच्छी पहचान बनने लगी. बिहार में छोटे अखबारों को शुरू करने वाले शुरुआती नामों में से एक राधामोहन ठाकुर का नाम बड़े सम्मान से लिया जाने लगा था.

धीरेधीरे राधामोहन ठाकुर ने अपने रसूख का इस्तेमाल कर अपने अखबार के लिए सरकारी विज्ञापन लेने शुरू कर दिए. इन विज्ञापनों से राधामोहन ठाकुर ने खूब पैसे बनाए और फिर वह रियल एस्टेट में लगा दिए.

राधामोहन ठाकुर पत्रकारिता जगत के मंझे हुए खिलाड़ी थे ही, जब उन्होंने रियल एस्टेट के व्यवसाय में हाथ डाला तो वहां भी कुंदन बन कर दमकने लगे. उस दौर में राधामोहन ठाकुर ने खूब पैसे बनाए थे. बताया जाता है उसी दौरान वह बीमार पड़े तो कभी स्वस्थ नहीं हुए और सदा के लिए चिरनिद्रा में सो गए.

पिता की मौत के बाद विरासत संभालने का जिम्मा आया बेटे ब्रजेश ठाकुर पर. ब्रजेश को पैसे पहले से ही विरासत में मिले थे और पिता का रसूख भी था. इसलिए ब्रजेश ठाकुर के हाथ में कमान आते ही उस ने रियल एस्टेट के कारोबार को तो संभाला ही, एक कदम आगे बढ़ कर राजनीति में भी हाथ आजमाने शुरू कर दिए.

बिहार के बाहुबली नेता आनंद मोहन से ब्रजेश ठाकुर की गहरी छनती थी. आनंद मोहन और ब्रजेश ठाकुर बचपन के दोस्त थे. ब्रजेश ठाकुर ने आनंद मोहन की अंगुलियां पकड़ कर राजनीति की पिच पर पारी खेलनी सीखी.

उसी दौरान यानी 1993 में जब बिहार के बाहुबली नेता आनंद मोहन ने जनता दल से अलग हो कर अपनी पार्टी 'बिहार पीपल्स पार्टी' बनाई तो ब्रजेश ठाकुर उस में शामिल हो गया.

1995 में बिहार में विधानसभा के चुनाव हुए तो ब्रजेश ठाकुर मुजफ्फरपुर के कुड़हनी विधानसभा सीट से बिहार पीपल्स पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा. लेकिन उस चुनाव में उसे करारी हार का सामना करना पड़ा था और उस के बाद वो कभी कोई चुनाव नहीं जीत सका.

सन 2004 में मुखिया आनंद मोहन ने अपनी पार्टी का कांग्रेस के साथ विलय कर दिया. इस के बाद ब्रजेश ठाकुर के चुनाव लड़ने के रास्ते बंद हो गए लेकिन ब्रजेश ठाकुर की आनंद मोहन से नजदीकी बरकरार रही. इस के साथ ही राजद और जदयू के नेताओं के साथ भी ब्रजेश ठाकुर का उठनाबैठना जारी रहा.

जब आनंद मोहन को गोपालगंज के जिलाधिकारी जी. कृष्णैया की हत्या में जेल हो गई, तो भी ब्रजेश ठाकुर आनंद मोहन के साथ खड़ा दिखा और उसे आर्थिक मदद भी पहुंचाता रहा. इस बीच तक ब्रजेश ठाकुर ने अपनी सामाजिक संस्था 'सेवा संकल्प' और 'विकास समिति' की नींव डाल दी थी. इस दौरान तक ब्रजेश ठाकुर की संस्था में मधु की ऐंट्री हो चुकी थी.

बिहार महिला आयोग की अध्यक्ष दिलमणि मिश्रा

ब्रजेश ठाकुर की प्रेमिका मधु

खैर, इसी बीच ब्रजेश ठाकुर ने अपने अखबार 'प्रातः कमल' का मालिक अपने बेटे राहुल आनंद को बना दिया था. पुलिस के मुताबिक ब्रजेश ठाकुर खुद अपने अखबार में सिर्फ पत्रकार बन कर रह गया था. इसी दौरान ब्रजेश ठाकुर की किस्मत ने एक नई ऊंचाई को छुआ.

सूत्रों के मुताबिक सन 2005 में जब नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री बने, तो ब्रजेश ठाकुर ने मुजफ्फरपुर में अपने घर पर बेटे राहुल आनंद के जन्मदिन की पार्टी दी. इस पार्टी में शामिल होने के लिए उस वक्त के बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी पहुंचे थे.

इस के बाद 'प्रातः कमल' को भारी सरकारी विज्ञापन मिलने लगे और ब्रजेश को बिहार सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त पत्रकार का तमगा भी मिल गया.

इतना होने के बावजूद ब्रजेश ठाकुर के अंदर का सियासी कीड़ा मरा नहीं था. उस की खुद की सियासी पारी शुरू होने से पहले ही खत्म हो गई, लेकिन ब्रजेश जान चुका था कि राजनीति उस के भाग्य में नहीं है इसलिए बेटे को ही इस अखाड़े में उतार दिया. जिस के बाद उस ने अपने बेटे राहुल आनंद को 2016 में जिला परिषद के चुनाव में कुड़हनी से उतार दिया.

चुनाव हुआ और राहुल आनंद ने जीत भी

पीड़ित बालिकाओं की जांच के लिए अस्पताल ले जाती पुलिस

दर्ज कर ली. बेटे के राजनीतिक संरक्षण से ब्रजेश ठाकुर को बल मिलने लगा क्योंकि ब्रजेश ठाकुर सेवा संकल्प एवं विकास समिति एनजीओ चलाता था, जिस में बालिका गृह भी था.

बहरहाल, आइए अब सेवा संकल्प की हनीप्रीत कही जाने वाली मधु के जीवन पर रोशनी डालते हैं. कौन है मधु? आखिर वह कैसे ब्रजेश ठाकुर तक पहुंची? उस के भी जीवन की कहानी किसी फिल्मी कहानी से कम रोमांचक नहीं है.

37 वर्षीय मधु मुजफ्फरपुर की ही रहने वाली थी. मधु ब्रजेश ठाकुर के संपर्क में 17 साल पहले आई थी. उन दिनों मधु की जिंदगी कठिनाइयों के बीच गुजरी. किशोरावस्था में पिता का साया उठने के बाद वह अपनी मां के साथ मुजफ्फरपुर के चर्चित चतुर्भुज मोहल्ले में रहने लगी. वो मोहल्ला रेड लाइट एरिया के नाम से कुख्यात था और आज भी है.

उस समय मुजफ्फरपुर के चतुर्भुज मोहल्ले में औपरेशन उजाला चला था. इस औपरेशन को चलाने वाली प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी दीपिका सूरी थीं. दीपिका सूरी एक तेजतर्रार औफिसर थीं, उन्होंने चतुर्भुज के रेड लाइट एरिया को सुधारने के लिए बड़ा काम किया था.

प्रशिक्षु आईपीएस ने मोहल्ला सुधार समिति का गठन कराया. जिस में ब्रजेश ठाकुर और मधु सहित 12 लोग इस के सदस्य बने थे. मोहल्ला सुधार समिति की देखरेख में वहां जागरूकता अभियान चलने लगा. इसी दौरान नब्बे के दशक में ब्रजेश ठाकुर और मधु करीब आए थे. उन में काफी मधुर संबंध स्थापित हो गए थे. तब ब्रजेश ठाकुर की शादी भी नहीं हुई थी.

मधु बेहद खूबसूरत और जवान थी तो ब्रजेश ठाकुर भी कम रसिक नहीं था. वह मधु पर मर मिटा था. मधु भी ब्रजेश की दीवानी हो गई थी. फिर क्या था? मधु की मजबूरी और दीवानगी को उस ने कैश कराना शुरू किया. मधु को आगे कर ब्रजेश ने अधिकारियों से कई नियम विरुद्ध काम कराए और अपनी संस्था और अखबार के लिए पैसे बटोरे.

बाद में जब ब्रजेश की शादी हो गई तो मधु को ले कर ब्रजेश ठाकुर का पारिवारिक जीवन खतरे में आ गया. मधु को ले कर ब्रजेश ठाकुर और उस की पत्नी के बीच कई बार झगड़े हुए, इस झगड़े के कारण दोनों के संबंधों में दरार आ गई थी. फिर भी ब्रजेश ने उस से संबंध नहीं तोड़े.

चतुर्भुज मोहल्ले में ही 'सेवा संकल्प' और 'विकास समिति' के अलावा, वामा शक्ति वाहिनी के नाम से एक और स्वयंसेवी संगठन बनाया और मधु को इस की निदेशिका बना दिया.

वामा शक्ति वाहिनी की ओर से कई तरह के सामाजिक कार्यक्रम समाज को दिखाने के लिए चलाए जाते थे. लेकिन परदे के पीछे कुछ और ही होता था. संस्था में सिर छिपाने आई पीड़ित और मजबूर लड़कियों को डराधमका और मारपीट कर उन्हें देह व्यापार के नरक में उतारा जाता था.

बाद में जब राज से परदा उठा और पीड़ित लड़कियों ने अपनी जुबान खोली तब जा कर पता चला कि यौन शोषण कराने में निदेशिका मधु मुख्य किरदार निभाती थी. घटना के परदाफाश के बाद से मधु भूमिगत हो गई. ब्रजेश ठाकुर के महापाप लोक की एकलौती राजदार वही थी.

मुकदमा दर्ज होने के 6 माह बाद मधु ने अदालत के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था. मधु के समर्पण करने के बाद पुलिस ने उसे रिमांड पर लिया तो ब्रजेश के पापलोक का राज खुलता गया.

बहरहाल, 25 जून, 2018 को 22 बच्चियों के बयान कोर्ट में दर्ज कराए गए. बच्चियों ने कोर्ट के समक्ष बयान दिया कि रात में सोते समय उन्हें बिस्तर पर नग्न सोने का हुक्म दिया जाता था. ये फरमान संस्था का मुखिया ब्रजेश ठाकुर जारी करता था.

जब वह हमबिस्तरी के लिए तैयार नहीं होतीं तो ब्रजेश ठाकुर उन के गुप्तांग पर जोरदार लात मारता था. उन के साथ मारपीट की जाती थी. उन्हें नशीली दवाएं खिला कर नशे की हालत में उन के साथ दुष्कर्म किया जाता था.

उन्होंने आगे बताया कि सेवा समिति में एक कमरा औपरेशन थिएटर के नाम से जाना जाता था. उस कमरे में गर्भवती हो चुकी लड़कियों का गर्भपात कराया जाता था. पीड़िताओं ने बताया कि मंगलवार का दिन उन के लिए बेहद यातना भरा होता था. उस दिन बड़े सर का कहर उन पर बड़ी आफत बन कर टूटता था.

विवेचना के दौरान पता चला था कि सीडब्ल्यूसी के अध्यक्ष दिलीप कुमार वर्मा को ही बड़े सर के नाम से जाना जाता था. दिलीप के अलावा समाज कल्याण विभाग का अधिकारी रवि कुमार रोशन और विकास कुमार भी बालिका गृह में मुंह काला करने आता था. पीड़ित बच्चियों ने उन की फोटो देख कर उन की पहचान कर ली थी.

बालिका गृह रेप कांड बड़ा कांड बन गया था. सिविल पुलिस से इस की जांच संभव नहीं हो पा रही थी. क्योंकि इस कांड में बड़ेबड़े नेता और पुलिस अधिकारियों के नाम उछलने लगे थे. इसलिए इस केस की जांच सीबीआई से कराए जाने के लिए 3 जुलाई, 2018 को कोर्ट में एक याचिका दायर कर दी गई. 9 जुलाई को इस मामले में पटना हाईकोर्ट ने बिहार सरकार से जवाब मांगा.

मामला संसद में उठा तो 24 जुलाई, 2019 को लोकसभा में केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि अगर बिहार सरकार चाहे तो हम सीबीआई जांच के लिए तैयार हैं. 26 जुलाई को बिहार सरकार के मुखिया नीतीश कुमार ने इस मामले की सीबीआई से जांच कराने की सिफारिश की. राजनाथ सिंह ने बिहार सरकार की सिफारिश मंजूर कर ली और घटना की जांच करने के लिए सीबीआई को हरी झंडी दे दी.

28 जुलाई, 2018 को आईजी (जोन) सुनील कुमार और डीआईजी अनिल कुमार सिंह ने बालिका गृह का निरीक्षण किया. इस दौरान डीएसपी मुकुल कुमार आनंद, महिला थानाप्रभारी ज्योति कुमारी के साथ अन्य पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे. आईजी के निरीक्षण के क्रम में ही एफएसएल व मैडिकल टीम भी वहां पहुंची.

वैज्ञानिक तरीके से साक्ष्य संकलित करने के लिए पहुंची एफएसएल टीम ने पहले बारीकी से कमरे का निरीक्षण किया. इस के बाद किशोरियों के बेड सहित बालिका गृह के सभी कमरों में लगे बेड की चादरों गद्दों के साथ ही अन्य कपड़ों के दागधब्बों पर कैमिकल लगा कर जांच की गई. इस के बाद दाग धब्बे युक्त चादरों, तौलियों, तकियों के खोल आदि जब्त कर लिए.

यही नहीं एफएसएल टीम ने कमरे में मौजूद हैंगर पर लटके कपड़ों की भी कैमिकल लगा कर जांच की. वहां मौजूद बरतनों को भी जांच के दायरे में लाया गया. पूरी जांचपड़ताल की फोटो व वीडियोग्राफी भी कराई गई.

29 जुलाई को सीबीआई की टीम पटना पहुंची. टीम का नेतृत्व एसपी जे.पी. मिश्र कर रहे थे. पटना पहुंच कर उन्होंने एक नया मुकदमा आरोपियों के खिलाफ दायर कराया. बालिका गृह मामले की कमान संभालते ही सीबीआई टीम 30 जुलाई की शाम करीब 4 बजे साहू रोड पहुंची. एसपी जे.पी. मिश्रा खुद टीम का नेतृत्व कर रहे थे. उन के साथ केस की विवेचक इंसपेक्टर विभा कुमारी, इंसपेक्टर राजेश कुमार, ए.के. सिन्हा सहित अन्य अधिकारी थे.

ब्रजेश ठाकुर को गिरफ्तार कर ले जाती पुलिस और उस के औफिस से बरामद नशीली दवाएं और अन्य सामग्री

31 जुलाई को रामदयालु स्थित सीबीआई के कैंप कार्यालय में सुबह 11 बजे थानाप्रभारी ज्योति कुमारी पहुंचीं. सीबीआई की पूरी टीम की मौजूदगी में उन्होंने केस से जुड़े हर दस्तावेज व जब्त किए गए तमाम साक्ष्य सीबीआई के हवाले कर दिए. उस में 23 जुलाई को जब्त किए गए स्टाफ रजिस्टर, उपस्थिति पंजिका, मीटिंग रजिस्टर, और्डर रजिस्टर, डोनेशन रजिस्टर 2017, डिस्पोजल रजिस्टर, गर्ल्स ट्रैनिंग रजिस्टर, आगंतुक रजिस्टर, फोन डायरेक्ट्री और 11 फोटोग्राफ सहित कई सामान शामिल थे.

उस के बाद बालिका गृह के खुले कमरों को सीबीआई ने देखा. टीम के सदस्यों ने ब्रजेश ठाकुर के आवास, प्रिंटिग प्रैस व बालिका गृह के कमरे की हर एंगल से फोटोग्राफी की.

मामले की जांच सीबीआई के हाथों आते ही कई चौंकाने वाले राज से परदा उठ गया था. जांच के दौरान पता चला कि बालिका गृह चलाने वाली संस्था 'सेवा संकल्प' व 'विकास समिति' को पिछले 5 वर्षों में 60 लाख रुपए समाज कल्याण विभाग की ओर से मिले थे.

यह धनराशि बालिका गृह में रहने वाली लड़कियों के भोजन, उन के वोकेशनल कोर्स और पढ़ाई के मद में दी गई थी. हालांकि टाटा इंस्टीट्यूट औफ सोशल साइंसेज (टिस) की सोशल औडिट रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ कि यहां रह रही लड़कियों के लिए वोकेशनल कोर्स और पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं की गई. भोजन की गुणवत्ता भी ठीक नहीं थी.

सरकारी दस्तावेजों के मुताबिक, संस्था को हर साल 12 लाख रुपए भोजन, वोकेशनल कोर्स चलाने और शिक्षा के मद में दिए जाते थे. समाज कल्याण विभाग से एक लाख रुपए का फंड हर महीने जाता था.

बालिका गृहों में वोकेशनल कोर्स और पढ़ाई के लिए सरकार से फंड दिए जाने का प्रावधान है. बच्चियों ने भी महिला आयोग के सामने बयान दिया था कि वहां पढ़ाई, कोर्स और खाने की व्यवस्था नहीं थी. एनजीओ ने हर महीने बच्चियों की संख्या 50 बता कर पैसे लिए जबकि वहां कुल 44 बच्चियां ही रहती थीं.

बाल संरक्षण के निदेशक दिवेश शर्मा ने बताया कि एक बच्ची पर खर्च के लिए सरकार ने 2000 रुपए तक दिए थे. विभागीय नियम के अनुसार 2000 में से 200 रुपए एनजीओ को अपनी तरफ से खर्च करने होते हैं, बाद में यह 200 रुपए भी हिसाब के समय सरकार की तरफ ही जोड़ लिए जाते थे. यानी संस्थान का एक पैसा भी खर्च नहीं होता था.

सब से दिलचस्प बात यह थी कि टिस की रिपोर्ट के बाद उस के एनजीओ को ब्लैक लिस्ट घोषित कर दिया गया था और इस के बावजूद उसे भिखारियों के लिए आवास बनाने के वास्ते हर महीने एक लाख रुपए का प्रोजेक्ट दिया गया था. मामले ने जब तूल पकड़ा तो बाद में प्रोजेक्ट को रद्द कर दिया गया था.

खैर, मामले की जांच सीबीआई ने शुरू कर दी थी. सीबीआई ने जांच के दौरान पाया था कि ब्रजेश ठाकुर के एक मंत्री और 2

डीजीपी एस.के. द्विवेदी

आईएएस अधिकारियों से गहरे ताल्लुकात हैं. जिस ने ब्रजेश के पापलोक के सागर में अहम भूमिका निभाई थी. वे सब सीबीआई के रडार पर आ चुके थे.

जांच के दौरान ब्रजेश ठाकुर की संस्था को दिए जाने वाला सरकारी फंड रोक दिया गया. उस के दैनिक अखबार 'प्रातः कमल' के सरकारी विज्ञापनों पर भी रोक लगा दी गई और अखबार की मान्यता समाप्त कर दी.

सीबीआई को बालिका गृह रेपकांड की जांच सुपुर्द करने के बाद सुप्रीम कोर्ट सजग थी. सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर इस मामले को 7 फरवरी, 2019 को बिहार के मुजफ्फरपुर की स्थानीय अदालत से दिल्ली के साकेत जिला न्यायालय की पोक्सो अदालत में स्थानांतरित कर दिया गया था.

उच्चतम न्यायालय की निगरानी में मुकदमे की कारर्वाई होनी थी. इस से पूर्व 18 दिसंबर, 2018 को सीबीआई ने ब्रजेश ठाकुर समेत 21 आरोपियों के खिलाफ अदालत में चार्जशीट दाखिल कर दी थी. उस के बाद उच्चतम न्यायालय ने केस को दिल्ली स्थानांतरित करवा दिया था.

उच्चतम न्यायालय के आदेश पर 23 फरवरी से इस मामले की कोर्ट में नियमित सुनवाई शुरू हुई. सुनवाई के दौरान सीबीआई ने अदालत से कहा कि दुष्कर्म की कई पीड़िताओं ने मुख्य आरोपी ब्रजेश ठाकुर के खिलाफ बयान दिया है. साथ ही उस के खिलाफ दुष्कर्म, अपहरण और चोट पहुंचाने के आरोप लगाए थे.

इस के बाद 30 मार्च, 2019 को साकेत कोर्ट ने सभी 21 अभियुक्तों के खिलाफ

एसएसपी हरजीत कौर

आरोप तय कर दिया था. मामले में मुख्य अभियुक्त ब्रजेश ठाकुर समेत 21 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की गई.

4 मई को सुप्रीम कोर्ट में सीबीआई ने सनसनीखेज खुलासा किया. सीबीआई ने कहा कि ब्रजेश ठाकुर और उस के सहयोगियों ने 11 लड़कियों की कथित रूप से हत्या कर शव एक श्मशान में दफना दिए थे. सीबीआई ने आगे कहा कि जांच के दौरान पीड़िताओं के दर्ज बयानों में 11 लड़कियों के नाम सामने आए थे जिन की ब्रजेश और उन के सहयोगियों ने कथित रूप से हत्या की थी.

एक आरोपी की निशानदेही पर एक श्मशान घाट में एक खास स्थान की खुदाई की गई जहां से हड्डियों की पोटली बरामद हुई. 11 लड़कियों की हत्या का मामला सामने आते ही अदालत में सनसनी फैल गई थी.

खैर, इस के बाद 25 सितंबर, 2019 को ईडी ने ब्रजेश ठाकुर की संपत्ति जब्त करने की कारर्वाई शुरू की. आरोपी ब्रजेश ठाकुर की संपत्ति जब्त की कारर्वाई के बाद साकेत कोर्ट ने इस मामले में फैसला सुरक्षित रखा और 14 नवंबर, 2019 को अभियुक्तों के खिलाफ फैसला सुनाए जाने की तारीख मुकर्रर की. इत्तेफाक से उस दिन वकीलों की हड़ताल हो गई. इस वजह से कोर्ट फैसला नहीं सुना पाया और फैसले की तारीख 12 दिसंबर, 2019 तय की.

लेकिन किसी वजह से तय तिथि पर फैसला नहीं सुनाया जा सका. फैसले की तारीख 20 जनवरी, 2020 तय कर दी गई. उस दिन भी अभियुक्तों के भाग्य का फैसला नहीं हो सका था और ये फिर 4 फरवरी, 2020 की तारीख पक्की की गई.

4 फरवरी, 2020 को साकेत कोर्ट में न्यायाधीश सौरभ कुलश्रेष्ठ के सामने सरकारी अधिवक्ता अनिरुद्ध सिंह और बचाव पक्ष के अधिवक्ताओं प्रमोद कुमार दूबे और ज्ञानेंद्र मिश्र के बीच गरमागरम बहस हुई. बचाव पक्ष के दोनों अधिवक्ताओं ने अपनी दलील पेश करते हुए अपने मुवक्किल ब्रजेश ठाकुर और अन्य को बेकसूर बताते हुए उन्हें इस मुकदमे में साजिशन फंसाने का अरोप लगाया था, जिसे सरकारी अधिवक्ता ने सिरे से खारिज करते हुए जोरदार दलील पेश की.

उस के बाद दोनों पक्षों के बीच घंटों बहस होती रही. दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद न्यायाधीश सौरभ कुलश्रेष्ठ ने फैसले को सुरक्षित रखा और 11 फरवरी, 2020 को 21 अभियुक्तों के भाग्य का फैसला करने की तिथि मुकर्रर कर दी. उक्त तिथि पर 21 में 20 अभियुक्तों के भाग्य का फैसला किया भी. जिस का जिक्र ऊपर कथा में किया जा चुका है.

कथा लिखे जाने तक सभी 20 मुजरिमों को जेल की सलाखों के पीछे भेज दिया, जहां वह अपनी जिंदगी के दिन काट रहे थे.●

—कथा में पीड़ितों के नाम परिवर्तित कर दिए हैं. कथा पुलिस सूत्रों, समाचार पत्रों, सोशल मीडिया और जनचर्चाओं पर आधारित

श्रावस्ती, उत्तर पदेश

कातिल हसीना

❑ सुरेशचंद्र मिश्र

शादीशुदा होने के बावजूद कंधई अपने रिश्ते की बहन मुनकी के पीछे पड़ा था. इतना ही नहीं, मुनकी की शादी हो जाने के बाद भी उस ने उस की ससुराल में जा कर जबरदस्ती की. इस का नतीजा यह निकला कि...

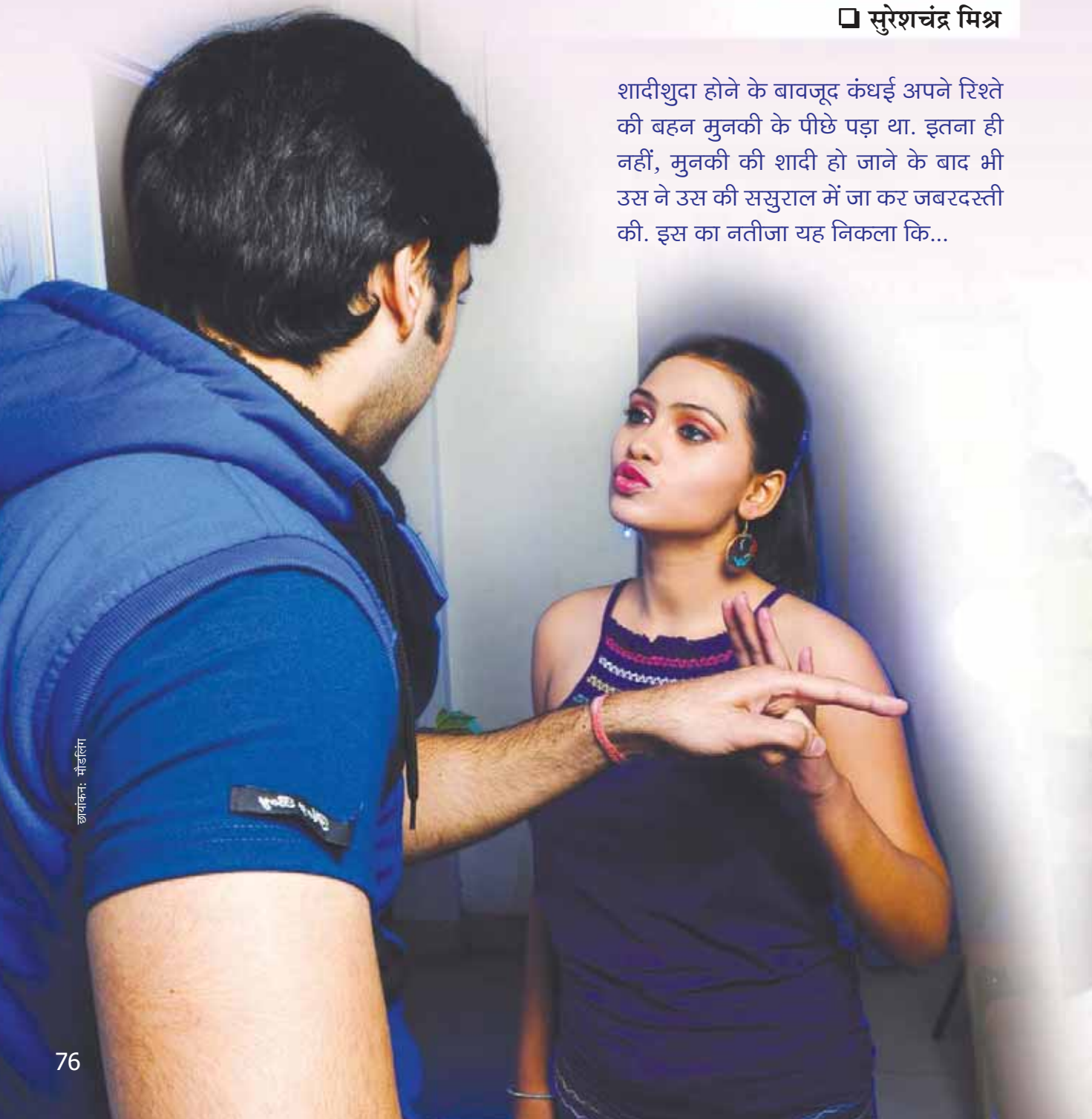

छायांकन: मौडलिंग

उस दिन फरवरी 2020 की 7 तारीख थी. सुबह के 8 बजे थे. घना कोहरा छाया हुआ था, जिस से सूरज अपनी चमक नहीं बिखेर पा रहा था. उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले के तेंदुआ बरांव गांव का रहने वाला सुंदर सिंह अपने खेतों की ओर जा रहा था.

जब वह प्राथमिक विद्यालय के पूर्वी छोर पर अपने खेतों के पास पहुंचा तो वहां एक युवक की लाश देख कर वह ठिठक गया. फिर वह उल्टे पैर गांव की ओर दौड़ पड़ा. गांव पहुंच कर उस ने लाश पड़ी होने की जानकारी गांव वालों को दी. उस के बाद तो गांव में कोहराम मच गया. कुछ ही देर में लाश के पास ग्रामीणों की भीड़ जुट गई.

लाश पड़ी होने की खबर जब इसी गांव के रहने वाले वकील सिंह को लगी तो उस का माथा ठनका. क्योंकि उस का भाई कंधई सिंह बीती रात से घर से गायब था. पूरा परिवार रात भर उस की तलाश में जुटा रहा, परंतु उस का कुछ पता नहीं चल पाया था. अतः वह बदहवास हालत में घटना स्थल पर पहुंचा.

शव औंधे मुंह पड़ा था. उस ने जैसे ही शव को पलटा वैसे ही उस की चीख निकल पड़ी. क्योंकि वह शव उस के भाई कंधई सिंह का ही था. किसी ने बड़ी बेहरमी से की थी. इस के बाद बड़ी उस के परिवार में कोहराम मच गया. मृतक की मां कमला देवी और पत्नी राधा भी मौके पर आ गईं और शव से लिपट कर दोनों रोने लगीं.

इसी दौरान किसी ने फोन कर के शव मिलने की सूचना थाना मल्हीपुर में दे दी. हत्या की खबर पाते ही थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय पुलिस टीम के साथ ले तेंदुआ बरांव गांव की तरफ चल दिए. इस बीच उन्होंने यह सूचना अपने वरिष्ठ अधिकारियों को भी दे दी थी.

जब पुलिस घटनास्थल पर पहुंची तब तक वहां ग्रामीणों की भीड़ जुट गई थी. थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण करने में जुट गए. कंधई सिंह के सिर पर किसी भारी चीज से प्रहार कर के उसे मौत के घाट उतारा था. चेहरे पर भी प्रहार कर उस की पहचान मिलाने की कोशिश की गई थी.

सिर व चेहरे पर गहरी चोट के निशान थे. कपड़े, खून से तरबतर थे. जमीन पर भी खून फैला था, जिसे मिट्टी ने सोख लिया था. हत्यारे ने मृतक के गुप्तांग को भी कुचला

आरोपी मुनकीं: मजबूरी में ही सही बन गई हत्यारी

आरोपी राजेश

घटनास्थल पर लोगों की भीड़

था. उसे देख कर ऐसा लग रहा था कि हत्या अवैध रिश्तों के चलते की गई है. मृतक की उम्र यही कोई 30 वर्ष के आसपास थी और वह शरीर से हृष्टपुष्ट था.

थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय अभी घटनास्थल का निरीक्षण कर ही रहे थे कि सूचना पा कर एसपी अनूप कुमार सिंह, एएसपी वी.सी. दूबे तथा सीओ हौसला प्रसाद घटनास्थल पर पहुंच गए. पुलिस अधिकारियों ने मौके पर फौरेंसिक टीम को भी बुलवा लिया. पुलिस अधिकारियों ने जहां घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया, वहीं फौरेंसिक टीम ने भी वहां से साक्ष्य जुटाए. घटनास्थल पर एक टूटा हुआ मोबाइल भी पड़ा मिला था जिसे थानाप्रभारी ने जाब्ते की कारवाई में शामिल कर लिया.

पुलिस अधिकारियों ने मृतक की पत्नी राधा को सांत्वना देने के बाद उस से पूछताछ की. राधा ने बताया कि बीती रात 8 बजे उस ने पति के साथ खाना खाया. उस के बाद वह बरतन साफ करने लगी, तभी पति के मोबाइल फोन पर किसी का फोन आया. नंबर देख कर वह घर के बाहर निकले और बात करने के बाद वापस आए. फिर बोले कि जरूरी काम से जा रहे हैं, कुछ देर में आ जाएंगे, पर वह वापस नहीं आए.

खोजने पर नहीं मिला

तब रात 11 बजे राधा ने अपनी सास कमला को जगा कर यह जानकारी दी. कमला ने भी कंधई का फोन मिलाया, लेकिन उस का मोबाइल बंद था. उस के बाद घर वाले उसे रात भर खोजते रहे, पर उस का पता नहीं चला. सुबह मालूम हुआ कि किसी ने उसे मार डाला है.

''तुम्हें किसी पर शक है?'' एएसपी वी.सी. दूबे ने मृतक की मां कमला देवी से पूछा.

''नहीं, साहब, हमें किसी पर शक नहीं है. हमारा न किसी से लेनदेन का झगड़ा है और न ही जमीन जायदाद का. मैं तो खुद हैरान हूं कि मेरे बेटे को किस ने और क्यों मार डाला?'' कमला ने बताया.

परिवारजनों से पूछताछ के बाद एसपी अनूप कुमार सिंह ने हत्या का परदाफाश करने तथा कातिलों को पकड़ने के लिए एक पुलिस टीम का गठन किया. इस टीम में मल्हीपुर थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय, सीओ (जमुनिहा) हौसला प्रसाद, सीओ (भिनगा), जंग बहादुर सिंह, एसआई किसलय मिश्र, ए.के. सिंह (क्राइम ब्रांच) आदि को शामिल किया गया. टीम की कमान एएसपी वी.सी. दूबे को सौंपी गई.

पुलिस टीम ने सब से पहले घटनास्थल का निरीक्षण किया, फिर तेंदुआ बरांव गांव के विभिन्न वर्गों के लोगों से घटना के संबंध में पूछताछ की. इस पूछताछ से पता चला कि मृतक कंधई सिंह रंगीनमिजाज था. घर में खूबसूरत पत्नी होने के बावजूद वह बाहर ताकझांक करता था. इसी बात को ले कर

पूछताछ से पता चला कि मृतक कंधई सिंह रंगीनमिजाज था. घर में खूबसूरत पत्नी होने के बावजूद वह बाहर ताकझांक करता था. इसी बात को ले कर कई साल पहले उस की कहासुनी गांव के ही भीखू से हुई थी. कंधई सिंह भीखू की बेटी मुनकी से छेड़छाड़ करता था.

कई साल पहले उस की कहासुनी गांव के ही भीखू से हुई थी. कंधई सिंह भीखू की बेटी मुनकी से छेड़छाड़ करता था. भीखू ने बेटी की शादी कर दी, इस के बाद भी कंधई सिंह ने उस का पीछा नहीं छोड़ा और उस की ससुराल आनेजाने लगा था.

पुलिस टीम को लाश के पास से जो टूटा हुआ मोबाइल मिला था, उस का सिम सहीसलामत था, पुलिस ने उस फोन नंबर की काल डिटेल्स निकलवाई. उस से पता चला कि वह फोन मृतक का ही था. काल डिटेल्स से जानकारी मिली कि 7 फरवरी की रात 8.58 बजे कंधई सिंह के मोबाइल पर आखिरी काल जिस मोबाइल नंबर से आई थी वह नंबर राजेश पुत्र धनीराम निवासी बालकरामपुरवा, मजरा रामपुर, थाना मल्हीपुर जिला श्रावस्ती का था. राजेश भीखू का दामाद था, उस समय उस की कंधई से एक मिनट बात हुई थी.

अब पुलिस को राजेश से बात करना जरूरी हो गया. लिहाजा पुलिस टीम राजेश के घर पहुंची, लेकिन उस के घर पर ताला लगा था. राजेश और उस के घर वालों के फरार होने से पुलिस का शक और पुख्ता हो गया. इस के बाद पुलिस ने राजेश के ससुर भीखू सिंह के घर पर छापा मारा. भीखू भी परिवार सहित फरार था.

उन दोनों की तलाश में पुलिस टीम ने कई संभावित ठिकानों पर छापे मारे लेकिन उन का पता नहीं चला. आखिर में पुलिस टीम ने राजेश व अन्य की टोह में अपने खास मुखबिर लगा दिए.

तीनों हुए गिरफ्तार

पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर नासिर गंज चौराहे से भीखू, राजेश और उस की पत्नी मुनका देवी को हिरासत में ले लिया. थाने में पुलिस जब राजेश, भीखू तथा मुनकी देवी से कंधई सिंह की हत्या के संबंध में पूछताछ की तो वे तीनों एक सुर हो कर मुकर गए, लेकिन जब उन पर सख्ती बरती गई तो वह तीनों टूट गए और कंधई सिंह की हत्या का जुर्म कबूल कर लिया. पुलिस ने उन की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त लोहे की रौड भी बरामद कर ली, जो राजेश ने अपने घर में छिपा दी थी.

पुलिस टीम ने कंधई सिंह की हत्या का खुलासा करने तथा कातिलों को पकड़ने की जानकारी एसपी अनूप कुमार सिंह को दी. जानकारी पाते ही वह थाना मल्हीपुर आ गए. उन्होंने अभियुक्तों से विस्तृत पूछताछ की. फिर खुलासा करने वाली पुलिस टीम की पीठ थपथपाई और 15 हजार रुपए ईनाम देने की घोषणा की.

इस के बाद उन्होंने पुलिस सभागार में प्रैस वार्ता की और हत्यारोपियों को मीडिया के समक्ष पेश कर घटना का खुलासा किया.

चूंकि उन तीनों ने हत्या का जुर्म कबूल कर लिया था और हत्या में प्रयुक्त आलाकत्ल

पुलिस हिरासत में राजेश और भीखू

भी बरामद करा दिया था, इसलिए थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय ने मृतक के भाई वकील सिंह को वादी बना कर भादंवि की धारा 302 के तहत भीखू, राजेश तथा मुनकी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली. इस के बाद उन लोगों से विस्तार से पूछताछ की गई तो एक हसीना की कातिल चाल का सनसनीखेज खुलासा हुआ.

उत्तर प्रदेश में श्रावस्ती जिले के मल्हीपुर थाने के अंतर्गत एक गांव है तेंदुआ बरांव. भीखू अपने परिवार के साथ इसी गांव में रहता था. उस के परिवार में पत्नी सोमवती के अलावा 2 बेटियां थीं, जानकी और मुनकी. भीखू मेहनतमजदूरी कर अपने परिवार का पालनपोषण करता था. बड़ी बेटी जानकी जवान हुई तो उस ने उस का विवाह कर दिया. वह अपनी ससुराल में खुशहाल थी.

जानकी से छोटी मुनकी थी. छरहरी काया की मुनकी दिखने में सहज थी. उस का पढ़ाई में मन नहीं लगता था इसलिए उस ने प्राइमरी से आगे नहीं पढ़ी. फिर वह घर के कामों में हाथ बंटाने लगी. भीखू के घर से कुछ दूरी पर मुन्नू सिंह रहते थे. वह खेतीकिसानी करते थे. उन के परिवार में पत्नी कमला देवी के अलावा कंधई सिंह और वकील सिंह नाम के 2 बेटे थे.

भीखू और मुन्नू के परिवारों में काफी प्रेम था. दोनों ही परिवारों के सदस्य एकदूसरे के घर आतेजाते थे. कंधई सिंह जवान हुआ तो मुन्नू सिंह ने उस का विवाह राधा नाम की युवती के साथ कर दिया. राधा ने ससुराल आते ही सभी का मन मोह लिया. वह पति के साथसाथ सासससुर की भी खूब सेवा करती थी.

कंधई सिंह रंगीनमिजाज था. घर में सुंदर पत्नी होने के बावजूद वह पराई औरतों को ललचाई नजरों से देखता था, जिस से उस की शिकायतें घर आती रहती थीं. पत्नी राधा उसे समझाती थी लेकिन वह उस की बात हंस कर टाल देता था.

मौसेरी बहन पर बुरी नजर

कंधई सिंह का भीखू के घर आनाजाना था. मुनकी रिश्ते में उस की मौसेरी बहन थी. दरअसल कंधई और मुनकी की मां एक ही गांव की थीं. इस तरह कंधई सिंह मुनकी की मां को मौसी कहता था और मुनकी देवी कंधई की मां को मौसी कहती थी. दोनों में खूब बातें होती रहती थीं.

एक शाम कंधई सिंह मुनकी के घर पहुंचा तो वह सजधज कर कहीं जा रही थी. उस के इस रूप को देख कर कंधई सिंह ठगा सा रह गया. उस का सुहाना रूप पलक झपकते ही कंधई की आंखों के रास्ते से दिल में उतर गया. वह सोचने लगा कि चिराग तले अंधेरा. मुनकी इतनी लाजवाब यौवन की मल्लिका है, इस ओर तो मैं ने ध्यान नहीं दिया.

रंगीनमिजाज कंधई सिंह के मन में कामना की ऐसी आंधी चली कि उस की धूल ने सारे रिश्तेनातों को ढक लिया. वह भूल गया कि मुनकी उस की मौसेरी बहन है. वह चाहता था कि मुनकी उस के सामने रहे और वह उसे अपलक निहारता रहे.

लेकिन ऐसा संभव नहीं था. उसे मां के साथ किसी कार्यक्रम में जाना था. मुनकी चली गई तो वह भी वापस घर आ गया. लेकिन उस रात नींद उस की आंखों तक नहीं पहुंच पाई. आती भी कैसे उस की आंखों में तो मुनकी का अक्स बसा था और जेहन में उस के ही खयाल धमाचौकड़ी मचा रहे थे.

किया प्यार का इजहार

दूसरे रोज कंधई सिंह मुनकी के घर पहुंचा तो वह घर में अकेली थी. भीखू खेत पर था और मां उसे नाश्तापानी देने खेत पर गई थी. उचित मौका देख कर कंधई ने मुनकी की कलाई थाम ली और बोला, ''मुनकी, तुम बहुत सुंदर हो. तुम्हारा यह रूप मेरी आंखों में रचबस गया है. मैं तुम्हें चाहने लगा हूं.''

मुनकी अपना हाथ छुड़ाते हुए बोली, ''भैया, आज आप को क्या हो गया है, जो इस तरह की बेहूदा बातें कर रहे हो. मैं रिश्ते में आप की बहन लगती हूं. भला कोई भाई अपनी बहन की कलाई इस तरह पकड़ता है. चले जाओ घर से, वरना मैं शोर मचा दूंगी.''

मुनकी के तेवर देख कर कंधई सिंह चला गया तो मुनकी सोचने लगी कि कंधई अब पहले जैसा नहीं रहा. उस की सोच बदल गई है, मन में पाप भी है. इसलिए उस ने निश्चय किया कि अब वह उस से सतर्क रहेगी. रिश्तेदारी में कलह न हो इसलिए मुनकी ने कंधई की इस हरकत को शरारत मानकर यह बात अपने मातापिता को नहीं बताई.

इधर जब 2-3 दिन बीत गए और कोई शोरशराबा नहीं हुआ तो कंधई समझ गया कि मुनकी ने किसी से शिकायत नहीं की है, अतः उस की हिम्मत बढ़ गई. वह मन ही मन सोचने लगा कि मुनकी दिखावे के तौर पर

विरोध करती है. वह भी उस से प्यार करती है. इसलिए कंधई अब मुनकी का प्यार पाने को उतावला रहने लगा.

एक रोज मुनकी के मातापिता जब खेतों के लिए निकल गए तभी कंधई सिंह आ धमका. उस ने मुख्य दरवाजा बंद किया और मुनकी को बांहों में भर लिया, फिर गालों को चूमने लगा. मुनकी कसमसाई और खुद को छुड़ाते हुए बोली, ''भैया यह पाप है.''

''प्यार में पाप और पुण्य नहीं देखा जाता. प्यार की शुरुआत तो करो. मोहब्बत तुम्हें भी मजा देने लगेगी.'' कंधई ने समझाया.

मुनकी के तेवर तीखे हो गए, ''बहुत हो गया भैया, तुम घर से चले जाओ. वरना बहुत बुरा हो जाएगा.'' कंधई सिंह का इरादा और आगे बढ़ने का था, लेकिन तभी पड़ोसन ने कुंडी खटखटाई जिस से वह डर गया. फिर मौके की नजाकत भांप कर कंधई वहां से चला गया.

पत्नी ने कंधई को दी चेतावनी

शाम को जब मुनकी के मातापिता खेत से घर लौटे तो मुनकी ने उन से कंधई की शिकायत कर दी. बेटी की बात सुन कर भीखू का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा. वह उस के घर पहुंचा और कंधई को खूब खरीखोटी सुनाई. उस ने कंधई की शिकायत उस की मां कमला से भी की. कमला ने कंधई को समझाने का भरोसा दे कर भीखू का गुस्सा शांत किया.

दूसरे रोज जब कंधई अपने खेतों पर गया तो मुनकी मन में क्रोध व नफरत का गुबार ले कर उस के घर पहुंची. उस समय घर में कंधई की पत्नी राधा थी. राधा ने मुनकी का तमतमाया चेहरा देखा तो पूछ बैठी, ''क्या बात है मुनकी, तुम गुस्से में लग रही हो ?''

''भाभी, भैया को समझा देना. वरना ठीक नहीं होगा.'' मुनकी गुस्से से बोली.''

''ऐसा क्या किया, तुम्हारे भैया ने ?'' राधा ने पूछा.

''भाभी, भैया रिश्ते की सीमा और मर्यादा भूल गए हैं. पिछले कुछ समय से वह मुझे परेशान कर रहे हैं. एक तरफा प्यार में दीवाने बन गए हैं.''

पति की करतूत सुन कर राधा सन्न रह गई. फिर किसी तरह स्वयं के मनोभावों पर नियंत्रण कर के बोली, ''मुनकी यह तुम ने अच्छा किया कि मुझे बताने चली आई. तुम यह बात किसी और को मत बताना, मैं सब संभाल लूंगी. अब तुम निश्चिंत हो कर घर जाओ.''

मुनकी को विश्वास था कि राधा ही उसे इस मुसीबत से मुक्ति दिला सकती है. इसीलिए वह उस के पास शिकायत करने आई थी. राधा को सारी बात बताने के बाद मुनकी का दुख हलका हो गया और वह अपने घर लौट आई.

पत्नी ने कंधई को दी चेतावनी

शाम को कंधई घर लौटा, तो राधा ने उसे आड़े हाथों लिया, ''बहन पर ही नीयत खराब करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आई, चुल्लू भर पानी में डूब कर मर क्यों नहीं गए ?'' राधा ने उंगली उठाते हुए पति को चेतावनी दी, ''आइंदा तुम ने मुनकी के साथ ऐसीवैसी हरकत की तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा.''

कंधई पहले तो चौंका, फिर संभल कर बोला, ''राधा मुझे माफ कर दो. आइंदा ऐसी गलती नहीं होगी.'' उस समय उस ने चुप रहने में ही भलाई समझी.

इधर भीखू को इस बात का डर था कि कहीं कंधई उस की बेटी के साथ कोई ऐसीवैसी हरकत न कर दे जिस से परिवार की बदनामी हो. इसलिए वह मुनकी की शादी के लिए लड़का ढूंढ़ने लगा. काफी दौड़धूप के बाद उसे पड़ोसी गांव बालकराम पुरवा, मजरा रामपुर का एक लड़का राजेश पसंद आ गया.

राजेश साधारण पढ़ालिखा युवक था. वह दिल्ली में किसी कंपनी में काम करता था. बात तय होने के बाद 8 जून, 2015 को मुनकी का ब्याह राजेश के साथ हो गया.

शादी के बाद मुनकी अपनी ससुराल में रहने लगी. मुनकी ने जैसे पति का सपना संजोया था, राजेश वैसा ही था. वह उसे खूब प्यार करता था और उस की हर ख्वाहिश पूरी करता था.

मुनकी को ससुराल में वैसे तो हर तरह का सुख था, लेकिन पति की कमी उसे खलती

मृतक की मां कमला देवी

थी. क्योंकि राजेश दिल्ली में प्राइवेट कंपनी में काम करता था. उसे महीने 2 महीने बाद ही छुट्टी मिल पाती थी. फिर कुछ दिन पत्नी के संग रह कर वह वापस चला जाता था. मुनकी ने पति के साथ रहने की इच्छा जताई तो राजेश ने यह कह उसे कर अपने साथ ले जाने से मना कर दिया कि मांबाप की सेवा कौन करेगा.

मुनकी की ससुराल और मायके में चंद खेतों की दूरी थी. अतः मुनकी का मायके आनाजाना लगा रहता था. वह सुबह मायके जाती तो शाम को ससुराल आ जाती थी. मुनकी की शादी हो जरूर गई थी, लेकिन कंधई सिंह उसे भूला नहीं था. वह अब भी एक तरफा प्यार में उस का दीवाना था. जब भी वह मायके आती थी तो कंधई उसे ललचाई नजरों से देखा करता था. कभीकभी वह उस से हंसीमजाक भी कर लेता था.

कंधई सिंह ने जब देखा कि मुनकी उस की किसी बात का बुरा नहीं मानती तो वह उस की ससुराल भी जाने लगा. उस ने मुनकी के सासाससुर से भी मेलजोल बढ़ा लिया था. वह कंधई को इसलिए घर आने से मना नहीं करते थे, क्योंकि वह उन की बहू का मौसेरा भाई था.

हर तरह का मुनकी को ससुराल में आना पसंद नहीं था लेकिन वह इस वजह से उसे मना नहीं कर पाती थी, क्योंकि उसे डर सता रहा था कि कहीं कंधई पुरानी बातों का जिक्र

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति एवं मान्यता प्राप्त चिकित्सक

लाइफटाइम एचीवमेन्ट अवार्ड से लन्दन में सम्मानित

एकमात्र असली डिग्री धारक–लन्दन व अमेरिका में सम्मानित

INTERVIEW

आयुर्वेद के गुण

डॉ० पी. के. जैनसे

B.S.c.(Lko. Univ.), Ayurvedacharya(Delhi), M.R.S.H. (London),M.W.A.S.(USA)

Dr. P.K. Jain's Group of Health Care Lucknow

नर्दाना कमजोरी * शीघ्रपतन * शुक्राणुहीनता * अंगों का सिकुडापन

डा.पी.के जैन को लन्दन में लार्ड विस्काउन्ट स्लिम (मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स/ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते हुए

डा.पियूष जैन अमेरिकी राजदूत सर पीटर हाइट से प्राईड ऑफ इण्डिया अवार्ड प्राप्त करते हुए

डा.संचय जैन अमेरिकन एम्बेसी के काउंसलेट जनरल सर पीटर कार्सनर से 'प्राइड आफ इण्डिया' अवार्ड प्राप्त करते हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय डाक्टर, डॉ. पी.के. जैन को सबसे लोकप्रिय कामयाब एवं वैज्ञानिक इलाजों के लिए **Jain TV** ने आमंत्रित किया तथा अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली के वरिष्ठ यूरोलॉजिस्ट ने इस विषय पर डॉ. साहब से चर्चा की। इस विधा के सबसे सफलतम् चिकित्सक डॉ. पी.के. जैन साहब को सर्च वेबसाइट **www.google.co.in** ने अपनी रैंकिंग में टॉप यौन रोग विशेषज्ञ में रखा है। प्रस्तुत हैं उन से एक भेंट वार्ता:

❖आपके अनुसार कमजोरी क्यों होती है, इनके लक्षण क्या हैं और इनको दूर करने से रोगी क्या–क्या लाभ उठाता है?

अज्ञानतावश प्रायः कुछ लोग अपने अमूल्य रत्न वीर्य को अत्यधिक नष्ट कर देते हैं एवं रोगी पहले मानसिक कमजोरी एवं पौरूषहीनता महसूस करता है। अतः यौन शक्ति एवं स्वास्थ्य का दिनों दिन घटना प्रमुख लक्षण है। हमारे इलाज द्वारा निरन्तर स्वास्थ्य वृद्धि, आत्मविश्वास का बढ़ना तथा पौरूष शक्ति बढ़ती है।

❖डा0 साहब, आप डा0 पी. के. जैन क्लीनिक प्रा0लि0 के डायरेक्टर हैं तो आप बांसमंडी क्लीनिक और महाराणा क्लीनिक, दोनों जगह मरीजों से एक साथ कैसे मिलते हैं?

एक इन्टरनेशनल क्लीनिक के डायरेक्टर होने के नाते मेरा सबसे बड़ा कर्तव्य है कि अपनी फैक्ट्री में बनने वाली दवाओं की गुणवत्ता विश्वस्तरी हो और मरीज को ज्यादा से ज्यादा लाभ हो अतः मेरा ध्यान दवाइयों के निर्माण पर रहता है। महाराणा क्लीनिक के हेड डॉक्टर पियूष जैन हैं और बांसमण्डी क्लीनिक के हेड डॉक्टर संचय जैन हैं। इनके अलावा मेरे निर्देशानुसार बांसमण्डी एवं महाराणा क्लीनिक में बेहद कुशल एवं क्वालीफाइड टीम पूरी तन्मयता के साथ मरीजों को पूर्णतया संतुष्ट करने की पूरी कोशिश करती है।

❖डॉ. साहब, कृपया अपने विश्व के एकमात्र सफल लिंग वृद्धि कोर्स के बारे में जानकारी दें?

यह कोर्स मेरे वर्षों के अनुभव के आधार पर स्वनिर्मित अनमोल दवाओं (स्वर्ण, हीरक तथा रजत भस्मों) का ऐसा खजाना है जिनका प्रयोग करने पर आप अनुभव करेंगे चार बहुत महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन...1. लिंग की लम्बाई में वृद्धि, 2. सेक्स के दौरान ज्यादा देर तक जोश बना रहना, 3. वीर्य स्खलन की मात्रा तथा समय में वृद्धि, 4. सेक्स के लिए किसी भी उम्र में भरपूर इच्छा और जोश कायम रहना।

❖डॉ. साहब, मैंने पढ़ा है कि आपको 'इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर' अवार्ड' प्राप्त हुआ है। इसके अलावा आपको "भारत गौरव सम्मान" से सम्मानित किया गया। कब और कहां?

हां, लन्दन में मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स लार्ड विस्काउन्ट स्लिम द्वारा मुझे यौन रोगों के सफल एवं सबसे कामयाब इलाजों हेतु इन्टरनेशनल लाइफ टाइम एचीवर अवार्ड तथा नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री शाहनवाज हुसैन द्वारा भारत गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है।

❖ लखनऊ में आपके मिलते–जुलते नाम से कई लोग डुप्लीकेट प्रैक्टिस में संलग्न हैं तो लोग आपके पास आने से पहले भटक न जायें इसके लिए लोगों को क्या करना चाहिए?

विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. पी. के. जैन जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सकों की श्रृंखला में आते हैं से मिलने के लिए बांसमण्डी क्लीनिक स्टेशन परिसर से 1 कि0मी0 आगे बांसमण्डी चौराहे पर है। क्लीनिक के बगल में होटल आशा एवं होटल कॉटिनेंटल के नीचे देखकर आश्वस्त हो लें कि आप असली डॉ. पी. के. जैन बांसमण्डी क्लीनिक पहुंच गये हैं। हमारी निःशुल्क पेशेन्ट मोबाइल वैन (एम्बुलेन्स) आपको माता मंदिर के सामने पार्किंग में सुबह 8.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक उपलब्ध रहती है। उसकी निःशुल्क सेवा प्राप्त कर सकते हैं। असुविधा होने पर मोबाइल नं0 9415402646 पर तुरन्त सम्पर्क कर सकते हैं। आज यौन रोग, शिथिलता, कमजोरी एवं संतानहीनता के लिए डॉ. पी. के. जैन का नाम अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सक की श्रृंखला में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। डॉ. साहब के इलाज की सफलता को देखते हुए इलाज खर्च बिलकुल वाजिब है।

प्रस्तुति डॉ. नलिनी

Facts based on Ayurved shastra Results may vary Person to Person

विशेष नोट : ज्ञातव्य है कि डा0 पी.के. जैन साहब को निम्न मर्जों के सबसे सफल इलाज के लिए लंदन एवं दिल्ली में कई बार सम्मानित किया

यौन समस्या	संतानहीनता	(चर्म)यौन रोग
• पुरूषों में यौन कमजोरी, शीघ्रपतन, धातुरोग, स्वप्नदोष, इच्छा में कमी, सेक्स पावर में कमी का सफलतम इलाज। • स्त्रियों में सेक्स की इच्छा न होना, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, का सफल इलाज।	•शुक्राणुओं की कम संख्या (Oligospermia), गतिशीलता में कमी,शुक्राणुहीनता (Azoospermi) वीर्य न बनना या कमी होने पर सफल इलाज। (Asemnosis)	•सिफलिस (फिरंग,आतशक) •गोनोरिया सूजाक,प्रमेह

मानसिक यौन समस्यायें एवं हारमोनल इम्बैलेन्स पर भी हमारी दवाइयां पूर्ण कामयाब हैं

इलाज खर्च 15,500/– (15 दिन) है हमारे यहां इन इलाजों के अलावा कुछ विशिष्ट इलाज भी किये जाते हैं जो कि 35,500/– तथा इससे ऊपर भी होते हैं जो कि रोग की दशा पर निर्भर करते हैं। हमारी दवाओं के कोर्स 30 दिन के होते हैं। डॉ0 साहब का पता नोट कर लें।

Subject to Lucknow Jurisdiction

ORIGINAL CLINIC AT LUCKNOW ONLY

ESTD.1926

डा. पी. के. जैन's बांसमण्डी क्लीनिक प्रा0लि0

लाटूश रोड, बांसमण्डी चौराहे पर, लखनऊ

DR.PIYUSH JAIN
B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Vinoba Bhave Univ.) M.R.S.H. (London)

Mobile:9415027773, 9415402646, 9838599444
Phone :0522-2637823, 0522-2681417, 0522-2638932

DR.SANCHAY JAIN
B.Sc.(Lko.Univ.), B.A.M.S. Ayurvedacharya (Topper of Nagpur Univ.) M.R.S.H. (London)

visit us at : www.drpkjainclinic.com E-mail: drsanchay@rediffmail.com drpiush@rediffmail.com

असुविधा से बचने के लिये मोबाइल पर एपाइन्टमेन्ट अवश्य ले लें। विस्तृत जानकारी के लिये डाक्टर साहब से मिलें

एशिया का नं० 1 टॉप अल्ट्रामॉडर्न क्लीनिक

मृतक की पत्नी राधा

उस के पति और ससुराल वालों से न कर दे.

कंधई सिंह ने मुनकी देवी की ससुराल आना शुरू किया तो उस ने पुरानी हरकत फिर शुरू कर दी. कभी वह उस से प्यार का इजहार करता तो कभी शारीरिक छेड़छाड़. मुनकी उस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करती थी. उस ने कई बार सोचा कि वह सासससुर से कहे कि वह कंधई को घर न आने दें, पर वह हिम्मत नहीं जुटा सकी. इस तरह समय बीतता रहा.

4 फरवरी, 2020 की शाम मुनकी घर में अकेली थी. उस की सास पड़ोस में हो रहे कीर्तन में गई थी और ससुर खेत पर सिंचाई करा रहे थे. तभी कंधई सिंह आ गया. उस ने सूना घर देखा तो उसे मुनकी की देह जीतने का यह सुनहरा मौका लगा. उस ने भीतर से दरवाजे की कुंडी बंद कर ली और अंदर के कमरे में जा कर मुनकी को दबोच लिया.

मुनकी भी अस्मत बचाने के लिए कंधई से भिड़ गई. स्वयं को मुक्त कराने के लिए वह कंधई को गालियां भी बक रही थी. और उस पर थप्पड़ भी बरसा रही थी. लेकिन कंधई उसे बेतहाशा चूमचाट रहा था. किसी तरह मुनकी उस के शैतानी चंगुल से छूट गई और कुंडी खोल कर बाहर आ गई.

इस के बाद कंधई भी नहीं रुका और वहां से चला गया. कुछ देर बाद उस की सास भी आ गई. लेकिन उस ने कंधई की हरकतों की जानकारी अपनी सास को नहीं दी.

देर रात मुनकी के सासससुर गहरी नींद में सो गए तब मुनकी ने अपने पति राजेश को फोन मिलाया और कहा, ''आप तुरंत घर आ जाइए. मैं मुसीबत में हूं. न आए तो मैं अपनी जान दे दूंगी.''

''पर ऐसी क्या बात हो गई, जो तुम जान देने की बात कर रही हो.'' राजेश ने पत्नी से पूछा.

''हर बात का जवाब फोन पर नहीं दिया जा सकता. कुछ गंभीर बातें होती हैं, जो आमनेसामने बैठ कर ही की जा सकती हैं. इसलिए तुम फौरन घर आ जाओ.'' मुनकी ने पति को जवाब दिया.

राजेश, अपनी पत्नी को बेहद प्यार करता था. वह जान गया कि मुनकी किसी बात को ले कर बेहद परेशान है. अत: उस ने घर जाने का निश्चय किया और उसी दिन वह दिल्ली से ट्रेन में बैठ कर घर के लिए चल दिया.

पति को बताई व्यथा

18 घंटे के सफर के बाद राजेश घर पहुंचा तो मुनकी उसे देखते ही फूटफूट कर रोने लगी.

पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह

कुछ देर बाद जब आंसुओं का सैलाब थमा तो उस ने अपनी व्यथा पति को बताई और बदतमीज मौसेरे भाई कंधई सिंह को सबक सिखाने को उकसाया.

पत्नी की आपबीती सुन कर राजेश का खून खौल उठा. उस ने कंधई को सबक सिखाने की ठान ली. राजेश ने अपने ससुर भीखू को घर बुलाया और सारी बात बता कर सहयोग मांगा. भीखू पहले से ही कंधई पर जलाभुना बैठा था. वह राजेश का साथ देने को राजी हो गया. इस के बाद राजेश, भीखू और मुनकी देवी ने सिर से सिर जोड़ कर कंधई सिंह की हत्या की योजना बताई.

इधर 2-3 दिन बीत गए और मुनकी ने कोई शिकवा शिकायत नहीं की तो कंधई सिंह को लगा कि मुनकी दिखावे का विरोध करती है. दिल से वह भी उस से मिलना चाहती है. अत: अब जब भी मौका मिलेगा वह अपनी इच्छा पूरी कर लेगा. भले ही मुनकी विरोध जताती रहे.

7 फरवरी, 2020 की रात 8 बजे एक बार फिर राजेश भीखू और मुनकी ने आपस में मंत्रणा की. फिर तीनों तेंदुआ बरांव गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय के पास पहुंच गए. राजेश अपने साथ लोहे की रौड ले आया था. राजेश और भीखू स्कूल के पूर्वी छोर पर खेत किनारे घात लगा कर बैठ गए.

योजना के अनुसार मुनकी ने रात लगभग 8 बजे कंधई सिंह से मोबाइल फोन पर बात की और देह मिलन के बहाने उसे प्राथमिक विद्यालय के पूर्वी छोर पर बुला लिया.

कंधई सिंह इस के लिए न जाने कब से तड़प रहा था. सो वह मुनकी के झांसे में आ गया. उस ने पत्नी राधा से कहा कि वह जरूरी काम से जा रहा है. कुछ देर में वापस आ जाएगा. फिर वह घर से निकला और प्राथमिक विद्यालय के पूर्वी छोर पर पहुंच गया. मुनकी उस का ही इंतजार कर रही थी. वह मुनकी से बात करने लगा. तभी घात लगाए बैठे राजेश और भीखू ने उस पर हमला कर दिया.

रौड के प्रहार से कंधई सिंह का सिर फट गया और वह रास्ते में ही गिर पड़ा. इस के बाद भीखू और मुनकी ने कई प्रहार कंधई सिंह के सिर व चेहरे पर किए जिस से उस की मौत हो गई. नफरत और घृणा से भरी मुनकी ने कंधई के गुप्तांग पर भी प्रहार कर उसे कुचल दिया. हत्या करने के बाद राजेश ने कंधई का मोबाइल फोन तोड़ कर वहीं फेंक दिया. फिर वह्य तीनों फरार हो गए.

12 फरवरी, 2020 को थानाप्रभारी देवेंद्र पांडेय ने अभियुक्त राजेश, भीखू तथा मुनकी से पूछताछ करने के बाद उन्हें श्रावस्ती की जिला अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें जिला जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

झुर्रियां | काले घेरे | छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- सन स्क्रीन
- फेस वाश

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

क्लीयर हैंड सैनिटाइजर
यहां से आप ले सकते हैं
amazon

कोरोना वायरस को फैलने से रोकें

साबुन से बार बार हाथ धोएं
घर के बाहर, तुरंत कीटाणु मारने के लिए, हैंड सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें
अगर आपको सर्दी, खांसी, बुखार या सांस लेने में तकलीफ है तो डॉक्टर की सलाह लें

ज़ीलैब फार्मेसी की ओर से जनहित में जारी

ZEELAB PHARMACY

हेल्पलाइन नंबर
9896062855
9896062292

(Registered) RNI DELHI 64905/15/DL(C)-14/1391/19-21. P.O. SRT Nagar, ND-55. Posting Date 30-06. Published on 26/03/2020. Pgs. 84

PARLE

Snack & Win#

GRAND PRIZE

ROYAL ENFIELD INTERCEPTOR 650

MORE THAN 100 EXCITING PRIZES DAILY

SMART PHONE

MOVIE VOUCHERS

*For Net Weight Parle's Wafers Piri Piri 27g, **For Net Wt. Parle Chatkeens Moong Dal 30+6g, ***For Net Wt. Parle FullToss Tangy Tomato 50g

T&C apply. Images are for visual representation only. Actual products may differ from those shown above.